

कविकुलकल्पतरु

श्री मत्कविकुल भूषण चिन्तामणि महा

राजरचित

जिसमें

INDIA-OFFICE
LIBRARY.

काव्य गुण, उदाहरण सहित अलङ्कार, काव्य
दोष, शब्दार्थ, और श्रीमहाराणी राधिका जी
की स्तुति कथन और अन्य नायिका वृत्तान्त भाव
अष्टादश चैष्टा और शृंगारादि क वर्णित हैं

वही

भाषा काव्य रसिकों के पठनार्थ परिचित महेश्वर
के द्वारा यथाविधि शुद्ध होकर

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण मन्त्रालय में अति स्वच्छना पूर्वक रूप

जनवरी मन् १८७५ ई.

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ श्री चिंतामणि कवि रचित भाषा कवि

॥*॥ कुल कल्पतरु लिरव्यते ॥

॥ अथ कवि ॥

श्रीगण नायक सुंदरके अंगन गह्वरे सुर सिंधु
सरोज रह्यो फावि ॥ हाथानि अंकुश पाश अ
भय वर तुंदिल अंगानि में उमरो रह्यो ॥ मां
नों दयामय सत्वकों अंकुर दंत की दीपति
यों वरने कवि ॥ कुंभ सिंदूर लसे मनि सुंदर
मानों उदय गिरि अंगानि में रवि ॥ १॥ मेरे
नावलि सी विद्यतावलि तीषन दानन के
न उदारसों ॥ सेवकों नित देत अभय पा
ल लेवारसों कल्पद्रुम डारसों ॥ श्रीगिरिजा
हरजू को दुलारे यहे भजनीय जो चित्त वि
चारसों ॥ लागि सदा मनि सिंधुर आनन
सुंदर सुंदरके असवारसों ॥ २॥ दोहा ॥ जे सुर
वानी मंथहैं तिनको समुह विचार ॥ चिंता
मनि कवि कहत है भाषा कवित विचार ॥
३॥ वत कहार रस में जु है कवित कहावै सो
द ॥ गद्य पद्य है भांति सों सुखानी में होदू ॥
४॥ छंद निवद्ध सुपद्य कहि गद्य होत विन

छंद ॥ भाषा छंद निवद्ध सुनि सुकवि होत
सानंद ॥ ५॥ मेरे पिंगल मंथते समुहो छंद
विचार ॥ रीति सुभाषा कवित की वरनत बुध
अनुसार ॥ ६॥ सगुना लंकारन सहित दोष
रहित जो होदू ॥ शब्द अर्थ ताको कवित कहत
विबुध सब कोदू ॥ ७॥ जे रस आगे के धरम
ते गुन वरने जान ॥ आनप के ज्यों सरितादि
क निहचल अवदात ॥ ८॥ सवे अर्थ तबुव
रिगेये जीवित रस जिय जानि ॥ अलंकार
हारादि ते उपमादिक मन जानि ॥ ९॥ श्लेषा
दि गन सरिता दिक् से मानो चित ॥ वरने रि
ति सुभाव ज्यों वृत्ति वृत्ति सी मित्र ॥ १०॥ प
द अंगुन विश्रामसों सज्जा सज्जा जांनि
रस आस्वादन भेदने पाक पाक से मानि
११॥ कवित पुरुष की साजु सब समुह लोक
की रीति ॥ गुन विचार अव करतहों सुनो
सुकवि करि प्रीति ॥ १२॥ प्रथम कहत माधु
र्य पुनि वोज प्रसाद वरवानि त्रिविधै गुन
तिनमें सवे सुकवि लेत मनमानि ॥ १३॥ जो
संयोग सिंगारमें सुखद दवावै चित ॥ सो
माधुर्य वरवानियै यहई तत्व कवित ॥ १४॥

सौ संयोग सिंगारतें कहरा मध्य अधिका
 ॥१॥ विप्रलम्भ अरु संतरस तामें अधिका व
 नाइ ॥१५॥ दीप चित्त विस्तारको हेतु वोज
 गुन जानि ॥ सुते वीर वीभत्स अरु रोद क
 माधिका मानि ॥१६॥ सुखे ईधन आगज्यो स्व
 ह नीरकी रीति ॥ मल्लके अक्षर अर्थ जो सो
 पसाद गुन नीति ॥१७॥ कोऊ अंतर भूत ह
 त कोऊ दोष अभाव ॥ कोऊ दोष त्रिविधि
 गुण जानें दसन गनाउ ॥१८॥ और गुने जो
 अर्थ गुण तेन कहू करि मानि ॥ रचना वर
 न समान गुन के विंजन के जानि ॥१९॥ अ
 नुस्वार जुत वरन जिति संवै वर्ग अटवर्ग ॥
 मृदु समास माधुर्यकी घटना में जुनि सर्व ॥
 २०॥ माधुर्यकोउ ॥ संवैया ॥ इक आजु मै बुदनि
 बोलि लखी मनि मंदिरकी सचि बंद भरे
 कुरविंद के पल्लव बंदु तहां अर विंदनतें
 मकरंद करै ॥ उत बुंदनके सुकाना गनहैं फ
 ल सुंदर द्वै पर आनि परै ॥ लखि यौ दुति का
 द अनंद कला नंदनंद सिला दूर रूप धरे ॥
 २१॥ दोहा ॥ वर गन मै जो आदि अरु तीजो
 आखर कोइ ॥ तिनसों योग दुतीय अरु चौ

थे को जोहोइ ॥२२॥ रेफ जोग सब द्वे जा
 तुल्य वरन जग जोग ॥ स पट वरगदरथ
 वारत जेस सास कवि लोग ॥२३॥ रंभी चत
 ना वाजकी व्यजका मनमें आनि ॥ सवाल
 सुवावि जनको मनी सुजन लेहु मजानि
 २४॥ संजोगी उद्धत वरन जो एनि लिखि स
 मास ॥ रेसी रचना करत हैं सुनताहि बज
 कास ॥२५॥ वीः उः ॥ इक् पद फल सात ह
 वी कूदत किलकत अति ॥ चिंतामं बल
 वंत इक् आवत उद्धत गति ॥ * ॥ मरदग
 कद पद समद गरजत गंभीर धुनि ॥ चुन कर
 त पधान रहे पद्य मानौ धुनि ॥ उत उम डि
 पूरि गिरवर धनि प्रवल जलाथ जिम दि
 न हटका ॥ सम वारत सैल उगगन विकट उद
 भट मरकाट भटकाटका ॥२६॥ दोहा ॥ कृकपि
 भागत निरखि के हस्यो प्रगट धन सह ॥ रु
 द करत जग अंतजनु सह दिसानि विहद
 सह दिसान विहद दर पपल दूर सिध ॥ रु
 द धुकि पद कुद्धर नि विरुद्ध धुनि कियारहा
 छिति धर भट छरक अलक्ष छपि छपि ॥ रा
 वी विजय असव विकल अरु वह रूप ॥

प्रसादल॥ दोहा॥ जामहि सुनलहि पद
 नके अर्थ बोध मनहोइ॥ सो प्रसाद वरनादि
 इति साधारन सब जोइ॥ २६॥ प्रसाद को उ
 कविता॥ सांवरो सलोतो नित बडी अगिब
 योन को जुहोतु आभरन आनि जमुना
 केतीरको॥ चिंतामनि बोहे गारी दीजे तो हं
 सत दीद घसि निकासे स पुनि नारिनकी
 भीरको॥ मैतौ आजु जांनी अवलौ नहौ
 नजानत ही करतु अनीति जैसी छोहरा
 अहीरको॥ पनिघट रोकात कन्हैया याको
 नाम देया छोटेहै निपट छोटे भैयावल
 वीरको॥ २७॥ दोहा॥ प्राचीनो दिन गुननि को
 जैसो कछू प्रकार॥ सोयामें सब लिखत है नि
 जमति को अनुसार॥ २८॥ श्लेष प्रसाद वरन
 बहु समता नाम बखान॥ माधुर्यो सुकुमार
 ता अर्थ व्यक्त पहिचान॥ २९॥ पुनि उदारता
 वोजगानि कांति समाधौ जानि॥ संवेदभीरी
 तिके प्रानद सो गुनमानि॥ ३०॥ श्लेष गुनको
 ल॥ बहुत पदको एक पद समझे है आ
 भास॥ ताको कहत सलेश गुन सिधिलनि
 बंध विलास॥ ३१॥ श्लेष विकटता पदनि

की जो उदारता होइ॥ वोज साहित जैसिथि
 ल पद बंध प्रसाद जु कोइ॥ ३२॥ प्रसा
 रोहाराहसो जोग समाधि प्रकार॥ मेवे
 जहि गनत सब संमत बुद्धि विचार॥ ३३॥
 श्लेष॥ कविता॥ राम भुज दंडको हंस ड
 लिति कारि दिग्ध उदंड सर दंड बंड॥ स
 काल निशिचरन को दंड ऐसो हनै पद
 ल धन अनिल जनु थन विलोडे॥ भार
 थ आवरन संगमाहि योंगिरे हनै कुरुस
 र राकास निगोडे॥ गिरे धन धरन केदावा
 त सधात लहि छप्यरन संग जनु दूट गेडे
 ३४॥ उदारता कोल॥ दोहा॥ जहां क्यसो
 करत पद हो उदारता जानि॥ अर्थ चार ता
 सहित सो अति संजुल पहिचानि॥ ३५॥
 उदारता को उ॥ सदैया॥ काननि कुंज कालि
 दीके कूलनि कान्ह मिले बछरानि चरा
 वैं॥ हेमनि हेमनि मंडितये पाल फूल प्र
 वालन की छवि छावैं॥ संजुल मूरी नाच
 त गावत कूदत वेनु विषान वजावैं॥ सांवरो
 सुंदर नंद कुमारहि याविधि गोप वृषारि रि
 तावैं॥ ३६॥ आरोहा अदरोहा समाधि को उ

निपट

*॥ कविता ॥ हाथ करिचाप रघुनाथ करिहा
थ वर विमिष दुर्धर्ष दुस्सह चलाय ॥ चले
नभ मूँदि जनु पक्ष थरि नाग निमिचरन
के पान बहु पवन खार ॥ दुवन भट विकट
आकार उद भयनिपट समर पदकटि रिपु
गन घटाए ॥ ध्वजन कों छेदि, धनु कावच
गन भेदि, धनरत्न उछेद बहु छविनि छार
॥ ४८ ॥ दोहा ॥ वोज विमिश्रित सिथिल पद
यह प्रसाद है कोइ ॥ अर्थ व्यक्त जहें उल्ल
सत वहो प्रसादो होइ ॥ ४९ ॥ वोज विमिश्रि
त सिथिलात्मक प्रसाद को उदाहरन ॥ क
विता ॥ त्रिभुवन घट घट प्रगट प्रकाश पायो
जोगी जाहि जातन अनल ज्यो अरनि में
चिंतामनि कोहे निगमनि बखानि जाको
ज्योति उडगन आदि चंद्रमा तरनि में ॥ व
न में सावानि संग गोधन चरवें तेवें सुख
पावें सावन ओ भादों की भैरनि में ॥ स
लल समीप निरमल शिला पर हरि
खात दधि भात गिरि कंदरा धरनि में ॥
॥ ५० ॥ दोहा ॥ अर्थ व्यक्त प्रसादते अर्थ आनि
जो कोइ ॥ तहां जो अर्थ व्यक्त सो अलंकार का

हु होइ ॥ ४३ ॥ अर्थ व्यक्त को उदाहरन ॥ कवि
ता ॥ कहां जागे रैन आये निपट उनीदे हो ज
सोइ रहो प्यारे विष्टो आछो परजंक सैं ॥
खेलति है चाँदनी में गलन संग काहुं ग
लही को नाम लीजे कहा कछु संकोहे ॥ यों
ही भले मान में लगावती कलंक हो वेदे
खो काहु चिंतामनि रतिह को अंकोहे ॥
पीतरंग अमर सोमयो नीलरंग लाल भूरी
हो गुपाल नुहे कोइ को कलंक है ॥ ४३ ॥
साधुर्य को उदाहरन ॥ सेवेया ॥ व्यास ते आदि का
हे कविजे जग ऊपर सोम समूह विसोखे
बहु कहा अर विंदे कहां हो गुविंदयो आन
नके समलेखे ॥ तो भिगोर फल भाग गनो
भन आपन भागनि की धनि लेखे ॥ तो पुनि
पेनके वानन वारिखे वादक नंद कुमा रहि
देखे ॥ ४४ ॥ समता को उदाहरन ॥ दोहा ॥ जामे
पदम तुलित है सो समता पाहिं चाँनि ॥ यों मेका
हो प्रकार्यों विषम बंधु जनि आनि ॥ ४५ ॥
अर्थ प्रोद में जहें कहत दोष बखान्यो जात
काहुं पवडन में जहें सग सके कहा सुहात ॥
॥ ४६ ॥ चंदेनु नुमसन हा धनु तो नुम में वल

कोइ॥हमसौं तुमसौं भलीविधि हुंद जुद्ध पु
नि होइ॥४७॥कथा मध्य जो कहि गये प
रस रामकी उक्ति॥वैनन उद्धत रीति विन
वांसे ऐसी युक्ति॥४८॥जहं समता जो पद
निमें वद्व वद्व नुप्रास॥शब्द अलं कादन
विषे तिनको प्रगट प्रकास॥४९॥समता
को उदाहरन॥काकि॥चिंतामनि काय गुण
भारलंक लचकात सोहै तनका छवि लान
की॥चपल विलास मद अलरुक्मिलतन
न ललित विलोकनि लसति मृदु बानि की
नाका मुक्ता हल अधर लाल रंग कंगाली
नी रुचि संस्था राग नरवत प्रभानि की॥व
दन कमल पर अलिज्यो अल कलोल
अमल कापोलनि भालक मुसक्यानिकी॥
५०॥सौकुमार्य अप रुष वदन श्रुत कटुदो
ष अभाउ उज्ज्वल वध्यनु कांति यह नाम्य
अभाउ गनाउ॥सौकुमार्यको उदाहरन॥सवै
या॥वामनि मंदिर की छवि हुंद छपाकर
की छवि पुंजनि पोख्यो॥पादको स्वच्छ म
नोहर चादनी चापुलै मैन महा बल रख्यो
सुंदरि को मुख चंदको छाडि चकोरन चंद

मयूषन चोख्यो॥चंद सिलानित नीरु भा
र्यो सुसवै तियको विरहा गिति सोख्यो
५१॥दोहा॥शब्द अर्थमे लक्षणा तैगुनकी
तिथि जानि॥अव वरनत प्राचीन मत
दूतें अर्थ गुन मानि॥५२॥पौद सुव्याधि
समास पुनि वोज प्रसाद बावनि॥पुनि
साधुर्य उदारता सुकु मारता जु जानि॥५३
अर्थ व्यक्त पुनि ज्योरेहें कांति श्लेष वखा
नि अंतर्वचन्य दे भानि की अर्थ दृष्टि सो जा
नि॥५४॥वरनी एक अजोनिहै अर्थ दृष्ट
यह कोइ॥अन्य ज्ञाना जानि पुनि अर्थ दृ
ष्ट दूत होइ॥५५॥पौद कोल॥वाक्य रच
न पद अर्थ में एक पौद यह कोइ॥वा
क्य अर्थ में पद रचन पौद दूसरी होइ॥५६
पदार्थ में वाक्यार्थ कथने॥अत्रि नयन सं
भव सदां संभु मोलि दान वास॥पति विर
हित तिय बध सिरयो दात यह नीति वि
रास॥५७॥उज्ज्वल वेप विलासिनी उज्ज्व
ल जाकी छांह॥कांत हेत संकोत को चली
चादनी मांह॥५८॥वाक्यार्थ में पद रचना॥
यह स्यामा सावन निहा लावी मिलीहै जाहि

सो स्यामा अभि सारिका सुकृत सुकृत फल चाहि ॥६८॥ एक वाक्यार्थ में अनेक वाक्यार्थ कथन ॥ कवि ॥ वामन कहा ऊँ वै से जप तप हीने वै वै जनम विनायो है असाधुन के साथ में ॥ कोन गृह मेथी जो अप्रतिथ न पूजे वैसी पंडित हैं आन वस भटवों अकाथ में ॥ चिंतामनि कहे वैस कवि पद पाऊँ जोन कवहुं गुविंद जखो गाऊँ गुन गाथ में ॥ पतित वनाइ भयो वा त जोवनाइ की सो पतित पावन परमेश्वर के हाथ में ॥६९॥ दोहा ॥ बहु वाक्यन को अर्थ जो एक वाक्य में होइ ॥ याहुं प्रौढ समास यह वरनत है कवि कोइ ॥७०॥ अनेक वाक्यार्थन को एक वाक्यार्थ करि कथन रूप समास गुन को उदाहरन दो बाल अधर रद उरज हर वि बीज फूल फल ऊँद ॥ वैस संध्य में दा डिमी लई विचारी लट ॥७१॥ या विधि के वै चित्य में अलंकार कछु होइ ॥ एजो वर्नत अर्थ गुन समुझौ सुतौन कोइ ॥७२॥ साभि प्राय पदनि कथनि वोज अर्थ गुन कोइ ॥ अपुष्यार्थ पद दोष को इहाँ अभावे होइ ॥

६४ ॥ साभि प्राय वोज को उदाहरन ॥ कवि ॥ होतौ हैं अनाथ तुम नाथ नैं नाथ हो जू दीन तुम दीन वंधु नाम निरुकी नोहे होतौ हैं पतित तुम पतित पाव वेद पु रान वरवान कछु कह्यो नानदी बहे ॥ कव करी सेव हो जो कहा मेरी सेवा रीके आप हीत आपरो के चिंतामनि लीने ॥ अवतु में मेरी रक्षा करवे ही परी राम रावे ही मोहि नित जाँतो जोरि दीने ॥६५॥ दोहा ॥ जहाँ अधिक पद परत नहिं विमला बवाजु प साद ॥ सुतौ अधिक पद दोष को कह अभि व अवि वाद ॥६६॥ अर्थ गुन प्रकट को उ दाहरन दो कुंदन दरपन तूलित तनु वसन कुसुमी रंग लसत लाल मनि वैसी ला ल वाल सब अंग ॥६७॥ नयो उन्नवै चित्र जो सो माधुर्य निहारि ॥ यह अलंकार गुन दोष की इहाँ अभाव विचारि ॥६८॥ चोषी च रखा ज्ञान का आही मन की जीति ॥ संगति सज्जन की भली नीषी हरि की ॥६९॥ संगल मय कोमल अरथ सुक सखा वला नि ॥ असंगल्य अस्लील को यह भाव मन

बीन
अधर

साभि प्राय

आनि॥७०॥करि लीजें उत्तम क्रिया हरि
पद प्रीति विशेष॥रहत सदा उत्तम पुरुष
या जगकी रति सेव॥७१॥अर्थ बीज अ
गनामता उदारता सो जानि॥साम दोषको
सुजन दूति दूहो अभावे मानि॥७२॥सो
हि मैत चंडाल यह अदय महा दुखदेत॥
सुंदरि सो तोपर सद्य भलो भाग इत हेत
७३॥जाकौ ऐसो रूपहैं तेसो वरनो होइ॥स्व
भावोक्ति अलंकार यहु अर्थ व्यंग जोकोइ॥
७४॥कवि॥लालसौ जटित लसे ललित
लटन बीच लाल मुख लटकन ललित ल
लाटको॥वडी बडी आंखें नीकी नाक मध्य
भालकात बडी भुजा हल अनुल छवि टा
टको॥चिंतामनि सोहतहैं अति अभिराम
तन दूदी वरे स्याम मन हरन निराटको॥
चेरी हम तेरी बड भारिनि जसोदा किलक
नि लखि टोटाकी बटोही मोहैं वाटको॥७५॥
दोहा॥सनध्यानि गुनि भूत पुनि व्यंग जहां
रसुहोइ॥सुनो दीप रस रूप वह कांत वावा
नत सोइ॥७५॥रस धुनि गुणी भूत व्यंग
को उदा हरन॥आगे कही वाक्य भेद निर्गो

य विषे॥क्रम कौटिल्यजो अप्रगट उपमां
दिकका जूति॥जो बटना यह अर्थकी त
हंलेष की उक्ति॥७६॥कवि चातुरी विचि
जता यहगुन केयों करि होइ॥अक्रम भंग
अभाव वह अर्थ अर्थ गुन कोइ॥७७॥
अम्लेष गुनको उदा हरन॥कवि॥सक
पलका पै वैही सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि
कौ छवीलो लाल अयो रति केलि घर
चिंतामनि कोहै आनि बढ्यो प्रीतम पै काहें
सां काछन कदि कौ सकत दुहंके डर॥सुख
के मजादने को रेकको दिवायो नाहं दि
परीतरति को स्वरूप लखि चित्रपर॥जोलो
वह सवुचनि आंखें मूदि रही तोलो व्या
र पान व्यारीके उरोज कर पर॥७८॥वैध
व्यको उदा हरन॥दोहा॥अरुन उदय रवि
होतहैं अरुने अषट्क आनि॥संपति वि
पति बडैज को रसो आमसों जानि॥७९॥
अजोत अर्थको उदा हरन॥दोहा॥चंद दि
पत रमनीय रति सरद विमल नभस्यां
म॥मानो कौसुम सनि लसत हरि उरमें
अभिराम॥८०॥अन्य छाया जोनि को उदा

हरन॥दोहा॥चाप मुकुट पट तडित विग पां-
ति मुकत में दाम॥कनक लता लखिऊनयो
आइ दूतें धन स्याम ८१
दूतिश्री चिंतामनिकवि रचितें कावि कुल
कल्य तरो पथमं प्रकारां १ अथ अलंकारः
॥दोहा॥

शब्द अर्थ गति भेदसों अलंकार हैं भांति
अलंकारा आदिक शब्द अलंकार की पां
ति॥१॥वक्रोक्ति अथु प्रास पुनि कहि लो
रा नुप्रास॥जमक स्लेषो चित्र पुनि पुनः
क्ति बेश भास॥२॥सात शब्द अलंकारये
तिलमें शब्द जोहोइ॥ताहीने पजय पदादि
येन भासे कोइ॥३॥अलंकार ज्यों पुरुष
के हारादिक मन आनि॥प्रासो पत आदि
क कवित अलंकार ज्यों जानि॥४॥वक्रो
क्ति नुप्रासल॥और भांतिको वचनजे
और लगावे कोइ॥कैस्लेषकै काकसो व
क्रोक्तिहें सोइ॥५॥स्लेष वक्रांति कोउदा
हरनदो॥ए दृष्ट भानु सुता निशि विचार
जामुने ससु भेंन॥स्त्रिद्वै जीवन चातुर्
वन कीन्हो गुरु मेन॥६॥काक वक्रांति को

वक्रोक्ति

हादिक
प्रास पत

के अलंकार
के नाक
वृषभनु

उदा हरनदो गुरुवर वस परदेस पिय आ
यो ललित वसंत॥अलि कुल कोकिल
मा विना नहि रेंहे सरिकंत॥७॥अनुर
प्रासको लखना॥समता जो आदरन की
अनुप्रास जो जानि॥छेक वृत्ति है आते
सो है विधि ताहि कवनि॥८॥छेक अनु
प्रासको लखनादो लखिनेहो आदरन की
वारक समता होइ॥चिंतामनि कावि का
हत यों छेक काहोवे सोइ॥९॥छेक अ
नुप्रासको उदा हरन॥दोहा॥जो अनेक सुखा
भा सदस मधुर भेद सुखकानि॥धन जी
वन आनंद धन नंद नंद लखि जानि॥
१०॥वृत्ति अनुप्रासकोलखना॥हो॥एक अने
काक्षर रचत बार बार सर होइ॥चिंताम
नि कावि कहत है दृष्ट काहोवे सोइ॥११॥
वृत्ति को उदा हरन॥कावित॥तेसुनु करख
रेखर बाहरखरे खरके दिग तोहि पतेंहें॥
मूरखतेरीया दुर्गम लंकाहि खेलहिमें रघु
नंदन सेहें॥*॥*॥मुंडकी माल दियाइ म
हेस सों संपति राम छिडाइ सुलेंहें॥कुंड
ल मंडन मंडित मंजुल मुंडकी माल महे

ता बिन

मालिका

कुर
लते खर

राकौहैं॥१२॥अथरतिभेद-हो-माधुर्यो विंजकव
रनउपनागरकोहोइ॥मिलिपसादपुनर
कोमलापुरुषावोजसमोइ॥१३॥विदभीपंच
लज्जाभौडीथरमनवीन॥रीतिवाहतकोउ
उंकेदृतिजेंहैंसमीन॥१४॥उपनागरिका
दृतिकोउदाहरन-हो-छकिप्रनंदरतिरंगकेथति
तअंगभुकुमार॥मगयगमंदशवंदरतिथ
रतितरुनिकुचभार॥१५॥कोमलाकोउदाह
रनहो-कौहूवोविसरीतवाहोवहमुसकयानिअ
नूप॥लग्योअरीहियरालग्योललितलालको
रूप॥१६॥खानपानपरिधानसबजाननवि
संखोबाल॥थोमोहीतुमकोनिरखितुमनि
मोहीलाल॥१७॥पुरुषदृतिकोउदाहरन॥थ
नादारी॥उदयरविकरततमरासिहंहरतम
नध्यानकेथरततमरासफांटे॥परमकिर-
पालप्रभुपलकपाइनपरतप्रीतिकरिपुन
कैपुंजपौटे॥नामकेजापसोअमापसंपति
कौरेप्रवलपरतापकीटाटटाटे॥विधनअति
सधनअथसधनवंकाटनिपटविकाटसंकाट
कटकीप्रकाटकाटे॥१८॥लाटानुप्रासकोल-हो-
तातपथकेभेदतेंदीन्हो-जोपददेशसोलाटानुप्रासहैं

हतीन
शक्तिअंग

वितर्यो

समुभासकौनेलेइ॥१९॥लाटाप्रासकोउदा
हरन॥*॥तोमेंदोषकरनहींहोननसंको
परतोव॥दोषजुदेखतआपुमेंहैंतिहारो
दोष॥२०॥जमककोउदाहरन॥अथहोतअ
न्यारयकवरननकोजहंहोइ॥फिरअवन
सोजामकाहिवरनतयोंरावकीहू॥२१॥जम
ककोउदाहरन॥चंदननुरखसमसनपरि
चंदनजेटअमोज॥कुंदनरदसनरुतिनिह
रिचुंदनरदनसमान॥२२॥फुलीपोनिपु
तीसुरभिबोलितरावन॥काहेजाललह
लहेसाहीछविअन॥शाबतकोबिताबानी
परासदनअन॥मुदितसुसनगोहेंमधुप
गल॥२३॥पदअभिन्नमिन्नाथकोवाहनन
होअप्लेय॥काकोहंतउदाहरनहंजहंउक
विछविसेय॥२४॥प्रासरसीसखतविरह
गोषमअनुकोधाम॥जीवनतामेंअलपहें
सुधिजीजेअनस्वाम॥२५॥हादुहिवोला
लमविरहवृक्षभयोवरजो॥धलीसाही
अनकीधमकाधरख्योनहींकाडोर॥२६॥दे
परखेलतहैंकाहोअगहैंअतिहंआइ॥ल
लजानहैंहाथमेंअरीसुखेयहहाइ॥२७॥

नोइ

अ-याशक्ति

नकोइ

नखलम

मधुप

नको

नको

नको

कविता॥ वसन दिशाहि और वासन कपाल
कर विषो खादू रहै पेनहोत हिय जानिये
चिन्तामनि कोहै ऐसी रीतिहोत दुसकादीन
कोऊ गौत भोले जाको सांजी बात मानिये
नाथन पहार पर राहत जतीको बेध सोय
भूत संगपेन संका उर आनिये॥ भसमसका
वै रहै रहै शूल धरै सदा जाको गिरा जाई धन
ताकी एही शूल जानिये॥ २॥ खड्ग आदि
कर वरन काम धेनु है आदि॥ चित्राखंड
त बहुत विधि वरनत सकावि जनादि
जोर खोर पर पीर हर सरवर धर धर धीर
मेर सर पर ढेर कर सर कर धर नर धीर॥
३॥ खड्ग बंध कपाट बंध कमल बंध काम
ति गोमूत्रिका बंध दूतने बंध या दोहमि देख
ये॥ दोहा॥ एक छंदमे छंद बहुकाम धेनु है मो
द॥ बहु छंदन भारवै बहुत यहौ कहत कविको
द॥ ४॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥ क
रुसरो सह नैन स मोहत पेधिय सांजोरोहि
सहार्द॥ साजत नैननि चैनजे जोहत रोहि
ये देख अजाके गनार्द॥ सीपात सो गन जेस
न मोहत रोहिंये सीमन को लल मर्द॥ ५॥

कविता॥ वसन दिशाहि और वासन कपाल
कर विषो खादू रहै पेनहोत हिय जानिये
चिन्तामनि कोहै ऐसी रीतिहोत दुसकादीन
कोऊ गौत भोले जाको सांजी बात मानिये
नाथन पहार पर राहत जतीको बेध सोय
भूत संगपेन संका उर आनिये॥ भसमसका
वै रहै रहै शूल धरै सदा जाको गिरा जाई धन
ताकी एही शूल जानिये॥ २॥ खड्ग आदि
कर वरन काम धेनु है आदि॥ चित्राखंड
त बहुत विधि वरनत सकावि जनादि
जोर खोर पर पीर हर सरवर धर धर धीर
मेर सर पर ढेर कर सर कर धर नर धीर॥
३॥ खड्ग बंध कपाट बंध कमल बंध काम
ति गोमूत्रिका बंध दूतने बंध या दोहमि देख
ये॥ दोहा॥ एक छंदमे छंद बहुकाम धेनु है मो
द॥ बहु छंदन भारवै बहुत यहौ कहत कविको
द॥ ४॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥ क
रुसरो सह नैन स मोहत पेधिय सांजोरोहि
सहार्द॥ साजत नैननि चैनजे जोहत रोहि
ये देख अजाके गनार्द॥ सीपात सो गन जेस
न मोहत रोहिंये सीमन को लल मर्द॥ ५॥
कविता॥ वसन दिशाहि और वासन कपाल
कर विषो खादू रहै पेनहोत हिय जानिये
चिन्तामनि कोहै ऐसी रीतिहोत दुसकादीन
कोऊ गौत भोले जाको सांजी बात मानिये
नाथन पहार पर राहत जतीको बेध सोय
भूत संगपेन संका उर आनिये॥ भसमसका
वै रहै रहै शूल धरै सदा जाको गिरा जाई धन
ताकी एही शूल जानिये॥ २॥ खड्ग आदि
कर वरन काम धेनु है आदि॥ चित्राखंड
त बहुत विधि वरनत सकावि जनादि
जोर खोर पर पीर हर सरवर धर धर धीर
मेर सर पर ढेर कर सर कर धर नर धीर॥
३॥ खड्ग बंध कपाट बंध कमल बंध काम
ति गोमूत्रिका बंध दूतने बंध या दोहमि देख
ये॥ दोहा॥ एक छंदमे छंद बहुकाम धेनु है मो
द॥ बहु छंदन भारवै बहुत यहौ कहत कविको
द॥ ४॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥ क
रुसरो सह नैन स मोहत पेधिय सांजोरोहि
सहार्द॥ साजत नैननि चैनजे जोहत रोहि
ये देख अजाके गनार्द॥ सीपात सो गन जेस
न मोहत रोहिंये सीमन को लल मर्द॥ ५॥

CMKA
p. 100
गौत

चित्राखंड

अवधारित

गुन मे
नमो भगवते

तीन भजन
६३०

शिव

गणेश

गणेश

रिजा पौर॥ एक विनायक करत है एक वि
नायक सौर॥ १॥ जाँमें मंजुल आनसों स
मता वरनी होइ॥ वरणी मान दाखु वस्तु जो
पमा कहिये सोइ॥ २॥ सो पुनि श्रीजी आ
रथी है विधि चितमें ल्याय॥ पूरन लुप्रा मे
दने होऊ दुविध गनाय॥ ३॥ ज्यों आदि क
पदके दिये श्रीजी उपमा जानि॥ सदस कृत्य
पदके दिये होति आरथी आनि॥ ४॥ उप
मा नो उप मेय पद उपमा वाचकी होइ॥ अ
र साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ॥ ५॥
शब्दा पूर्णो उपमा को उदाहरन॥ नाह चंद
विरहते आइ अचानक रोह॥ दया जीचकी
बेलि ज्यों उमडि वरस जल मेहदेक श्रीय
दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविको
वरने द्यो॥ श्रीपति आपही दुभात है अरु दे
खि महा छवि रीभात है यो॥ लालन के भात
रीनिके मंदिर सुंदरी बंदन सों भालके यो॥
लाल सलाकन सों जकारे विलसे सुनियान
भरे पिंजरानय्यो॥ ७॥ अर्थ पूर्णोपमा को उ
दाहरन॥ दोहा॥ बल काल चौर जरा धरे का
गा जरके तीर॥ राम लखन होऊ जाने भये रि

पिनके तल॥ ८॥ जहाँ एक है तीनिको लोप
चारिमें होइ॥ चिंतामनि कवि कहत है लुप्रा
कहिये सोइ॥ उपमान लुप्रा॥ चिंतामनि मनु
जगत में दूढ़ फिरौ चहु ओर॥ तोसम मोस
न मोहनी कोनि तरुनि सिर सौर॥ ९॥ उप
मेय लुप्रा॥ सुललित खंजन से चपल दस
त रहत वैचित॥ तिन परनिवृत्त बरि करे न
न मन सब काछु विज॥ १०॥ धर्म लुप्रा॥ वदव
चंद सो तरुनिको ओर सुधासे बैन॥ चंदि
क सी हासी लसे बूंदी करसे जैन॥ ११॥ वाच
क लुप्रा॥ सजल जलद अभि नाम तनु त
डित ललित पद पीति॥ नंद नंदन सखि चं
दमुख चोरत चित नव नीत॥ १२॥ जित य
कहि व उपमेय जहंसे उपमान अनेका॥ सोमा
लोपम जानिये भिन्न धर्म के सका॥ १३॥ अ
भिन्न धर्म मालोपको उदाहरन॥ वाकित॥ सरद
तें जलकी ज्यों दिनतें कामल की ज्यों थनतें
ज्यों थलकी निपट भर सार्दे है॥ थनतें साँव
नकी ज्यों दोपते रतनकी ज्यों गुनतें सुजान
नकी ज्यों परम सुहाई है॥ चिंतामनि कहै आ
छे अक्षरनि छंदकी ज्यों निशा गम चंद

की ज्यों दृग सुख दाई है ॥ नगलें ज्यों कंचन
 वसं ज्यों वनकी यों जोवनलें तनकी नि-
 कारी अधिकारी है ॥ १५ ॥ भिन्न धर्म मालीप
 मालीप दहन-क माली ज्यों मोदकों सुहा
 वीत सहज वास सुधा ज्यों जिवाइ देकी
 जातन धरति है ॥ चिंतामनि चारों वार कारीत उ
 ज्यारी प्यारी चंद्रिका ज्यों मेरी चित चाडून
 भरति है ॥ करारी ज्यों मंद चारु चलाति मय
 क सुखी मंद राज्यों मोहि महा मोहित क
 रति है ॥ प्रान ज्यों सुंदरि नेकु हिये तें रति
 नाहि नाद ज्यों नवेली नैन कोर विह रति है
 ॥ १६ ॥ दोहा ॥ दूत साधारन धर्म बुद्धि जन के
 भांति गनाइ ॥ वस्तु और प्रति वस्तु से काम
 विंदोज बनाइ ॥ १७ ॥ एक अर्थ द्वै शब्दों ज
 ह कहिये द्वै वार ॥ क ही वस्तु प्रति वस्तु यह
 भावसु बुद्धि विचार ॥ १८ ॥ एक शब्दों अर्थ
 जुग जहां वरवान्यो होइ ॥ तहां विंव प्रति विंव
 यह भाव कहै कवि कोइ ॥ १९ ॥ वस्तु पवस्तु भाव दो-
 निज तनुन पिय तनु परसि ज्यों सुख अधि
 क उदीत ॥ आपुनन पिय पर सरवी अधिका
 प्रेम न्यो होत ॥ २० ॥ विंव प्रति विंव ॥ नाह वचा

ई विरहते आइ अचानक गेह ॥ दवा वीचकी
 वाल ज्यों उमड वरस निभमेह ॥ २१ ॥ प्रथमहि
 जो उपमेय वह प्रति उपमान जु होइ ॥ वस्तु ज्यों
 रयो कामजु यह रसने पमहै सोइ ॥ २२ ॥ भावि
 सम मूरति मधुर अरु मूरति तरस न भाज
 ते जन सहित समाप्त हो श्री अजय सुखा ॥ अजय
 ॥ २३ ॥ वचन तुलित मन मन तुलित रुक ॥ वि
 राजत काल ॥ काज तुलित निराल रुजन
 सतत साथ सिर नाज ॥ २४ ॥ अन्वय कोरु रु
 ॥ २५ ॥ दोहा ॥ कहिये जो उपमेय अरु वहै जहां
 उपमान ॥ ताहि अनव्यय कहत है पंडित सु
 कवि सुजान ॥ २६ ॥ हियो हरत अरु करत
 अति चिंतामनि चित चैन ॥ वा सुंदर को मेल
 ये वाही कैसे नैन ॥ २७ ॥ जहां वराय उपमान
 को बदलो वरन्यो होइ ॥ उपमेयो उमान क
 हि वरनै है सब कोइ ॥ २८ ॥ नैन कमल से क
 मल से लगत नैन छवि भार ॥ वदन चंद से
 वदन से चंद्र प्रभा विलार ॥ २९ ॥ सदस धर्म
 सो अन्यता संभावन यों होइ ॥ वराय भानु का
 छु वस्तु को उत्प्रेक्षा कहि सोइ ॥ ३० ॥ उत्प्रेक्षा
 दवाय अरु प्रतिय माना और ॥ विनो आ-

दिपदविन गनो प्रतिपत्ति माना ठौर ॥३७॥ जाति
क्रिया गुनद्रव्यकी जोहे अर्थ्य वसाद ॥ ताको
विषय सुनो दूहे चोविधिविध गनाद ॥ * ॥
३७॥ चोविध चिंतामनि कोहे अर्थ्यवसाद वना
द ॥ क्रमतिद्विविध सुजोगर विद्यानाथ गनाद
३८॥ तकिभाव अभाव को वाच्या गम्यों जानि
हेतु वाच्याता गम्यता वाच्यादिविध वरवानि ॥
३९॥ जेजान्यादि स्वरूपकोहेतुहिको फलरूप ॥
अर्थ्य वसाद विषयसुयों भेद बहुत जेअरु
प ॥ ४०॥ वाच्या उत प्रेक्षा विषय हेतुका फा
ल जित होद ॥ वाच्यां होद निमित्त जित ग
म्य तहां नहिं सोद ॥ ४१॥ जातें वाच्य स्वरूप
की उत्प्रेक्षाही मांह ॥ वाच्य गम्यता अर्थको व
रनी विद्या नांह ॥ ४२॥ उपात्त गुनि निमित्त जा
तिभाव स्वरूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ विसद रूप हि
य रामकुत विलसत कच उतमंग ॥ जनु य
मुना जल पूर पर भल्लकत गंगतरंग ॥ ४३॥
उपात्त क्रिया निमित्त जाति भाव स्वरूप उ
तप्रेक्षा ॥ दोहा ॥ जघन पुलिन परहीर मनि
जडित किंकिनी कोति ॥ फोलति बोलति मधुर
जनु कल मराल की पंति ॥ ४४॥ अनु पात

गुन निमित्त जाति भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा
वदन दंदु समहीर मनि वार सुकात चहुओ
रा ॥ सुद्व विंद सुंदर मनो दंदुवाल जूत छोर
४०॥ अनु पाति गुन निमित्त जाति भाव स्वरूप
उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ लखे नयन सुंदरिनके
श्री घन स्याम सकाम ॥ विलसति कंचन
वेलिवन जनु खंजन अभिराम ॥ ४१॥ उपा
त गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा
श्री हरि वचन प्रमान जग की वेधम प्रका
स ॥ यह समभात अव करत लख लख कर ज
वन विनास ॥ ४२॥ उपात्त क्रिया निमित्त जात्य
भावस्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा ॥ पंचा नन चरचा
वारत, सुजत शंभुको दास ॥ पाषा मंतग चटा
मनो पावत भयन विनास ॥ ४३॥ अनु पात
गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ विदित
विभव यह यों परसु जाके उर निसि दाहि ॥ *
दूत्र चमर आयु धन विन मूर्खनि भू जनु
नाहि ॥ ४४॥ * ॥ ४४॥ अनु पाति क्रिया
निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा ॥ दु
र्जन दुर्जनता प्रगटि सकातन हिये ससोवा
रामनेज मानो मयौ अखिल अखिल यहलें

२१ भाग
अ. २७

दिया
मनो

See
P. 95
CMKA

क॥४५॥जाति हेतू त्पेक्षा॥श्री गिरिजा के ध्या-
नते ज्ञान होत मन भरी॥पदनाव विधि अ-
वलोकित जनु होतु अंधारी दूरि॥४६॥जात्य
भाव हेतू त्पेक्षा॥मही माहा नहिं कल्प तरु
यह करि हिये विचार॥जनु सज्जन प्रति पा-
लको कान्ह लियो अवतार॥४७॥जाति
फलो त्पेक्षा॥दोहा॥कालिंदी जल गोपिका
जल मुख छवि अधि कात॥कान्ह भौन सु-
ख रूप लखि जनु फूलें जल जात॥४८॥
जात्य भाव फलो त्पेक्षा॥दोहा॥चंद्रमुखी यों
चंद्रिका में कीन्हो अभिसार॥जनु क्षीर धि-
अधि देवता को ध्याधि संचार॥४९॥क्रि-
या स्वरूपो त्पेक्षा॥दोहा॥कुटिल कूवरी आ-
पने तनमें मन अटकाइ॥जनु हंदावन आ-
गमन हटवैयो हरिको आइ॥५०॥क्रिया हे-
तू त्पेक्षा॥दोहा॥सुंदरि मों है धनुष धर तो मन
वास अनंग॥लोचन वॉन हनें मनो व्याकुल ह-
रिके अंग॥५१॥क्रिया भाव हेतू त्पेक्षा॥दोहा॥वा-
दिनतें मृगलोचनी ललित भई पियराइ॥निज
छवि अने देखे मनो वदन कमल कुहिलाइ॥५२॥
क्रिया फलो त्पेक्षा॥दोहा॥कंदो दीन जनु वदन

तेज हीं राम यह नाम॥मानोत प्रति पालको तव-
ही पंहुचे राम॥५३॥क्रिया भाव फलो त्पेक्षा॥सब अ-
वतार प्रपंच मय आपु आत्मा शुद्ध॥कालि प्रपंच
अन लखन को मनो ध्यान मय बुद्ध॥५४॥गुण स्व-
रूपो त्पेक्षा॥दोहा॥सौभा धेनु गन दुहन की गुरु
रजन गंभीर॥खगन नचाइल तान की रस
मुरज ध्वनि थीर॥५५॥गुण भाव स्वरूपो त्पे-
क्षा॥दोहा॥राम चंद्रकी को मुदी की रति विद-
त उदार॥स्वत दीप कीन्हो मनो यह सिंगरो सं-
सार॥५६॥लाल और के ध्यान जनु कान्ह न-
हवत लाल॥सुंदरि तें जों वस किये सुंदर
स्याम गमाल॥५७॥गुण भाव हेतू त्पेक्षा॥दोहा॥
श्री नारायण वदन विधुलखि दुष मिटत असेष
जाते जनु सब तव परषटग कुवलय अन मेघ॥
५८॥गुण फलो त्पेक्षा॥दोहा॥साधु सुदामा को-
रई संपति स्याम निवाहि॥उन सेवा कीन्ही भ-
ली मनो इंदु सखि चाहि॥५९॥गुण भाव फलो
त्पेक्षा॥दोहा॥देत असाधुन साधु गति यों हरि नाम
निवाहि॥मनो कियो उन की रतन पाप अभावे
चाहि॥६०॥द्वय स्वरूपो त्पेक्षा॥दोहा॥चंद्र दिप-
त रमनीय रूचि सरद विमल नभ स्याम॥मनो

कौस्तुभ मनि लसति हर उरमें अभिराम॥६१॥
 द्रव्य भाव फलो त्पेक्षा॥६२॥ उमडि विंदु की
 भांति सौं हरि रवि ससि संचार॥तिमिर अच-
 ल कीन्हो मनो जग अकास संधार॥६३॥
 द्रव्य हेतू त्पेक्षा॥६४॥ औषध पति दुज राज
 धन ग्रीष्म ऊँख समीत॥चंद्र करस भौनों
 कियों सकल जगत मय सीत॥६५॥ द्रव्य भा-
 व हेतू त्पेक्षा॥६६॥ जल धर मद जल गजन
 जनु किय सीस सूर अभाव॥जानें जात न रा-
 ति दिन प्रावस चतु परभाव॥६७॥ द्रव्य फा-
 लो त्पेक्षा॥६८॥ यों पैली है चंद्रिका महि अं-
 वर अव गाहि॥मानो उमड़ो छीर निधि चं-
 द नंद नहि चाहि॥६९॥ द्रव्य भाव फलो त्पेक्षा
 दोहा॥ मदन दहन यह जानि यह मदन सहा
 यक आहि॥धरे भुजंगम नहम लय अनि-
 ल विनासहि चाहि॥७०॥ यों उत पेक्षा में कि-
 यो विद्या नाथ प्रकार॥उपमा हूं मैं करि सका-
 त यह क्रम का संचार॥७१॥ उत पेक्षा संभा-
 वना वस्तु हेत फल रूप॥उत्ता नुत्ता प्रथम
 ये कहत एक कवि भूप॥७२॥ सिद्धा सिद्धा
 स्पद बहु रिधि विधि औ निरधारि॥सुभग कु-

कलया नंदमें यह क्रम कियों चिचारि॥७३॥ उ-
 त्ता स्पदा स्वरूपो त्पेक्षा॥७४॥ सुख विधु लखि
 कुच कौक जुग यह विरहाग प्रकास॥रोमाव-
 लि जनु लई उन दुखन सधूम उसास॥७५॥
 अजुता स्पदा हेतू त्पेक्षा॥७६॥ वर सत अंज-
 न नभ मनो तमली पत जनु अंग॥स्यामा स्या-
 म स्वरूप धरित कैं स्याम कौ संग॥७७॥ ति-
 द्वा स्पदा हेतू त्पेक्षा॥७८॥ सुंदरि भूमि धरे म-
 नो लाल निहारे पाइ॥मुख समता वृक्षामनो
 विधु लखि कमल रिसाइ॥७९॥ सिद्धा स्पदा व-
 स्तू त्पेक्षा॥८०॥ कुच जीतन कौ हेम गिरि
 शृंगानि सौं संनद्ध॥भार गहन कौ कनक जनु
 दामन वद्ध निवद्ध॥८१॥ असिद्धा स्पदा फलो
 त्पेक्षा॥८२॥ सूरज सनमुग व जल वसत सह-
 त सदा दुख कंज॥सुंदरि पग साजो अन्य कौ
 करन मनहुं तप कंज॥८३॥ प्रतीप मानो त्पे-
 हा कौ उदा हरन॥कविता॥ अलि मनो हर दंप-
 तिके अलिंगन परवारियत त्रिभुवन सुख-
 मा सुखे खहै॥चिंतामनि कहै कवि कौ से कहि
 सकै कौऊ अद्भुत कुरूप रचना अलोरखे ॥
 सुवरन लता है तमाल सूर तह संग घन सदा

म संग थिर दामिनि विशेष है ॥ राधाजू को दीप
देव वनिता वरवानती है ॥ हरि उर निरख परवा
न हेम रेख है ॥ ७४ ॥ स्मर मरना लंकार को ल
दोहा ॥ सदृश वस्तु अनवे सदृश वर त्वत्तर को
ज्ञान ॥ स्मरन बोलत विबुध जन सम भौ सु
कवि सुज्ञान ॥ ७५ ॥ स्मरना लंकार को उदा
हरन ॥ दोहा ॥ दृगन सुधा वरवत सरद रावा
चंद निहारि ॥ सुधि आवत वा वदन की जाप
र हौ बलि हारि ॥ ७६ ॥ जह विषई अस विख
य को वरन्यौ होइ अभेद ॥ अलंकार रूपक
तहौ सम भौ सुजन अवेद ॥ ७७ ॥ जो अति
रोहित विषय को उपकारक जो होइ ॥ विष
ई सो रूपक वरन यौ वरनत कवि कोइ ॥ ७८
पुनि इत सा वयव अस निर्वय वस्तु प्रकार
द्वै विधि सा वयव पुनि त्रिविधि वरनत वि
मल विचार ॥ ७९ ॥ सरव वस्तु विषयक प्रथ
म वरनत सुकवि विचारि ॥ एक देस विचर
त अपर परं परित निरधारि ॥ ८० ॥ निरवय
वो पुनि द्विविध गन केवल माला रूप ॥ दू
के देत उदा हरन सुनिये सुजन अनूप ॥ ८१
सर्व वस्तु विषय को उदा हरन ॥ कवित्त ॥ को

किल कोपो तवीर कुलानि कोकल कल भारी
कोला हल दिसि विदीसि मे छाये है ॥ न
ए राते पातए पताका पाह रात मनि पुह्य पा
ग थूर अमर उडयो है ॥ भौर मोते मान गढ
गंजन मतंग छूट मोहन सौ रूसी मत कौन
मन भायो है ॥ आली महा वली रति पाति म
ही पाति को सोरिनु पति सेना पाति सेना साजि
आयो है ॥ ८२ ॥ रूपक कोराधारन उदा हरन ॥
कवित्त ॥ जाहि मिलि नैन नील कामल रबुले
हैं कान मुकुत नखत पर वारको विचार्यो है
परम मथुर सुसवयानि कौमुदी सौ बडो सु
ख सा राख बारि ज्ञान को विडार्यो है ॥ निर
खत सदन को सब वरवत को हिये हवरवत
हरि आन निरधार्यो है ॥ चिंता मनि कोहे चखच
कोरन को आनंद मुख चंद राधिका मुकुंद को
निरार्यो है ॥ ८३ ॥ एक देस विवर्ति रूपक को उदा
हरन ॥ दोहा ॥ सरद सिंहा सन चमरिका स
जल जलज कर अत्र ॥ किरनि माल मुकता
वली विधु अनंग सिर छत्र ॥ ८४ ॥ परं परित
को लछन ॥ दोहा ॥ जहां एक आरोप में आरो
पान्तर होइ ॥ परं परित रूपक तहौ अर्थावधि

तिहिंकोइ ॥ ८५ ॥ लिख विसेषन होइ कह और
अलि हनिहारि ॥ माला रूपक परं परित रूप-
क सुभग विचारि ॥ ८६ ॥ शिलस विशेषन प
रं परित को उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुंदर नंदन नंद
को रूप जितो जनुकांभ ॥ गोपी फूली हेम
तन वेलि रसिक अलि स्याम ॥ ८७ ॥ शिलस
माला परं परित को उदाहरन ॥ दोहा ॥ जीवन
दायक स्याम घन गोपी पदमिन मित्र ॥ संध
य महरन काला निधि श्री गोविंद विचित्र ॥
८८ ॥ अशिलस विशेषन माला रूपको उदाह
रन ॥ वृज जन सुरगल कल्प तरु मन अनंदत
र कोद ॥ सुखभा सलिल समुद्र हरि लोचन कु
वलय चंद्र ॥ ८९ ॥ दूसरो उदाहरन ॥ कविन ॥
मन कुल मंदाकिनि जलकी कमल महा राज
महा विमल प्रकाशित विविधि नय ॥ वृंदिाव
न अरविंद नैन दूंद मुख दूंदी वर दल दाम सुं
दर सदा सदा ॥ चिंतामनि मुनिमन मोरकेन
वीन धन सीता नैन मीन सुधा समुद्र अनंद
मया कौसल्या कल्प वेलि संभव सुमन राजा
दशरथ दूध निधि चंद्र राम चंद्र जय ॥ ९० ॥
निरवयव केवल रूपको उदाहरन ॥ दोहा ॥ ४

ललित अलक मुख चंद्र पर मनकी यहा अगो
द ॥ विहसौ है चंचल नयन भीने अनल कोद ॥
९१ ॥ निरवयव माला रूपको उदाहरन ॥
दोहा ॥ दर पसिरी कंदर पकी यनवी सह नम
साल ॥ भागनि की अधि देवता कौन अन्य-
ही बाल ॥ ९२ ॥ परनामालंकार ॥ दोहा ॥ लखि
विषई विषयात्मके कारण पलाति उप नारा
रूपकते परनाम जो भिन्न कहत कविलोरा ॥
९३ ॥ वृज वासिने जगत पर और सभा दिन
जानि ॥ कल्पद्रुम तिन दो ॥ भयो आपु अ-
त्मा आनि ॥ ९४ ॥ जहाँ विषे विषई सुभगा
वि संमत मत ताहि ॥ सोदेहास्यद होत है कवि
संदेह तहांहि ॥ ९५ ॥ प्रथम कहत निश्चय गर-
भ निश्चय यांत पुनि जान ॥ अलंकार संदेह य-
ह सजन द्विविध मन अन ॥ ९६ ॥ दर्पन थोयो
ललित वात ससि थों किते कलंक ॥ अंगुज
थों विलास यों त्रिय मुख लखि मनसंक ॥
९७ ॥ निश्चय यांत को उदाहरन ॥ सवेया ॥ खंज
नहीं थों उडातन अंबर बांज है थों थिरता नहिं
चीन्हें ॥ भृंग है स्यागल स्वेतन बद्ध थों मीन है
नैनन मोद जू दीन्हें ॥ कामके वान थों पांचर

481
CMK A
101

सुनेहमय अवयाथलदै विन कीन्है ॥ नैनन
चैनकोरै निरखैं अति नैनीति नैन स जानि जु-
लीन्हैं ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ जहाँ होतुहै प्रकृतिमें अ-
प्रकृतिहि कौं ज्ञान ॥ भौति मान यासों कहत
पंडित सुकवि सज्जान ॥ १०९ ॥ फटिका महल
चदि विधु मुखी देखत श्री नंद नंद ॥ कह्यो
सखीसों हरि चलौ ऊपर आयो चंद ॥ ११० ॥
अपनुत ॥ विषद को आरोप कौ करि जो वि-
षय निषेध ॥ ताहि अपनुत कहत हैं धर्म-
हि समुभि सुमेध ॥ १११ ॥ कवित्त ॥ वारन मत्त
विहार्यो महा तम देखि महा तमकी अधिका-
र्य ॥ अंकमें मारि गह्यो कर सायल जानत लो-
क कलंक करार्द ॥ मानसकै सेवचै मृग लो-
चनी कान्ह समीप वसैतौ भलार्द ॥ आवत ऊ-
पर मंदहि मंद सों दूद नहोपम गेंद है मारद ॥ ११२ ॥
उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहं ग्राहक के
भेद कहु विषय भेद सो होइ ॥ एकहि को उ-
ल्लेख बहु कहि उल्लेख जु सोइ ॥ ११३ ॥ नाम
भेद उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ दीन दया र
जल कौ जलधि सकल कामिनी काम ॥ कहत
भक्त जन कल्पतरु रामहि रिपु जम नाम ॥ ११४ ॥

विषय भेद उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कह-
त स्याम को कल्पतरु पूरन लखितव साध-
दीन दया निधि सब जगत सुखमा सिंधु अ-
गाध ॥ ११५ ॥ शिल्लेख को उदाहरन ॥ दो-
हा ॥ जीवन दायक देखिके राज वासी धन स्याम
कौन्हहि भक्त मुकुंदानी कहत कामिनी का-
म ॥ ११६ ॥ पर नाम उल्लेख र दोऊ रूपव
मोहि ॥ भिन्न अंग हात रूप तौ संमत वरन
नोहि ॥ ११७ ॥ अति शयोक्ति को लक्षण ॥ दोहा
॥ प्रोढ़ उक्ति जो कविन की अतिशयोक्ति है सो
इ ॥ भिन्न अंग हात भेदतें भिन्न काही को लो-
इ ॥ ११८ ॥ जहाँ ज्ञान उपमेय को उपमान
में होइ ॥ प्रत्युक्ति को जो अन्यता को होइ तें
वि जोइ ॥ ११९ ॥ जो वह यों तों होइ जो यदि-
धि के अभिधान ॥ कारज पहिले ही कह्यो
छे कहै निदान ॥ १२० ॥ अतिशयोक्ति र चारिवि-
धि मंमट कथन प्रकार वरनत चित्रा सनि
सुकवि निज मति के अनुसार ॥ १२१ ॥ अ-
तिशयोक्ति यथा क्रम उदाहरन ॥ सर्वेया ॥ पूर-
न मंडल वेलिके मूल लख्यो अकलंक मय
कान वैयोहै ॥ नील सरोज भौरे मधु सिंदूर

सरतारका चंद्र सवैयै है ॥ डोलतु है तिल मूल
के चैनव थूकी लखे छवि कोन छवै है ॥ गे
हके द्वार मैं काहु महा सुवृत्ती जनको जन पुन
पवै है ॥ ११२॥ * ॥ डोलनि दोलनि आन
काछू लटवै काछू आन सुभा यहि जोऊ ॥
आन काछू परिहास विला सहै आन हसी
मदु सुधि हि सोऊ ॥ आन काछू दग कंज नि
तो निहै आन काछू द्युति दांतनि सोऊ ॥ ऐसी को
यो पर है तम मैं मान लागे जहाँ करना दार दो
ऊ ॥ ११३ ॥ सरितो समहोन को सारदा सौ का
मलामिलि कैर स्वरूप थैर ॥ पुनि ताही स्वरूप
मैं चंद्र मुखी सब चंद्रिका आपनी चंद्र भरे
मति तापर जोत प कोरि करै पुनि तात प पे
जो विरंचि दै ॥ तिहुं लोक की सुंदरता हरि के
गव तोसी जो वाहि करै तो करै ॥ ११४ ॥ दोहा
मोष कामिनिन के मन निलखि छवि धन
धन स्याम प्रेम उमग पहिले भद्र पीछे व्या
प्यो काम ॥ ११५ ॥ प्रलेख विशेषे धन बल उकुत
जो काछू ओर की होइ ॥ याहि सभां सो कति
कहत पंडित संमट कोइ ॥ ११६ ॥ अति पवित्र
जल वास वत कुमुदिन नित अथि काइ ॥ फूल

है पति देवता दुज पतिको पति पाइ ॥ ११७ ॥ प
स्तुति वक्र विशेषे नन काइ जायल होइ ॥ अ
प्रस्तुति गमिता सभा सो जा कहै स कोइ ॥ ११८ ॥
जोन अलिंग देत धन कुम दिन को आनंद
निसा वदन चुवन करत उदित भयो जव चं
द ॥ ११९ ॥ शिलसु विशेषे न होत काहुं काहुं साथ
रन जानि ॥ उपमा गर्भित होत काहुं सज्जन
गम मन आनि ॥ १२० ॥ कहा मुदित अति ही
भई पतिको आगम जानि ॥ पगटे चारु मय
का सचि निसा वदन मुस क्यानि ॥ १२१ ॥ जा
को रूप स्वभाव अरु त्रियाजु जैसी होइ ॥ *
ताको ते सोई कथन सुख मोदी ते नति कोइ ॥
१२२ ॥ काकि ॥ जसु मति मैया होई तोया नद
हैं हैं सदा चिंता मनि वैरि नदो उर न मे सारि
सु वर धन गोप कुल हर धन लाख लाख कर कन
दज भूमि प्रति पालि है ॥ ललित ललाट पल लटकी
हैं लटें मानो चंदन कमल पर मधुर कार आलि है
देख लाल पल का की पाटी को पवारि खरे खेल
त हंसत किल कात हांस हांसि है ॥ १२३ ॥ दूसरो उदाह
रना कुल ही ललित विलसति चर ॥ दो ॥ पगटित वस्तु
छपाइये जो वनाइ काछू काज ॥ व्याजो कति ता सो

कहत पंडित सकवि समाज ॥१२४॥ कांनहिल
खि पुलकित कहति कालिंदी तट नारि ॥ ज-
लतरंग सीतल कहाँ सजनी वहति वयारि ॥१२५॥
संग अर्थ कोशब्द बल दैधाचक पद सका ॥ त-
हो सहोक्ति होतिहे यों कवि करत विवेका ॥
॥१२६॥ समुभिहिचेपति आशमन उमर्यो अ-
ति आनंद ॥ लस्यो निशामुखचंदवाल सततत
रुनि मुखचंद ॥१२७॥ जहां कछू विन होत कछू र-
म्य अरम्य जुवात ॥ बुध जन मत सो विन उ-
कति अलंकार कहि जात ॥१२८॥ अन्य वि-
शन विन होतिहे विद्या विमल अनूप ॥ विन
दोषन को कवित यह ताहि गनत कवि भूप ॥
॥१२९॥ निंदत नृपति विवेक विन चरचा को
है साथ ॥ दान विना सन मान को विना दान
को हाथ ॥१३०॥ प्रस्तुति में जह औरसों गुन-
के साम्य निहारि ॥ एक रूप तावरनि ये सो
सामान्य विचारि ॥१३१॥ चंदन लेपन मुकात
गन थस्यो सुभजन चीरा ॥ तरुनि चंदिका मि-
लिगई मनो संख को खीर ॥१३२॥ निज गुन
हजि उत हास गुन गहै आनिके कोइ ॥ अ-
लंकारत हुन सुनो कवि जन संमत होइ ॥०

॥१३३॥ तिय मंदिर की इंदिरा पति को भाग्य उदो-
त ॥ तनबी दीपति सौथ गृह सब सुवरन की
होत ॥१३४॥ और वस्तु गुन को मनहन जहंन का-
रे कछु वाल ॥ ताहि अंत गुन कहत हैं जो क-
वि मति अधिकृत ॥१३५॥ गंगा जल उज्ज-
ल जमुन जल छावि अंत समेत ॥ दुहुं स-
ख्य मज्जन कारतु हंस सेत को सेत ॥१३६॥
सो विरोध अवि रुद्ध में जह विरोध अभि-
थान ॥ सुनो जानि गुन क्रिया अह दूख मा-
हं स ज्ञान ॥१३७॥ जाति जात्या दियान सेो
गुन गुनादे सेो जानि ॥ क्रिया क्रिया अह
दूख सेो दूख दूख सेो मानि ॥१३८॥ यों विरो-
ध दश भाति सेो ममद गये बरवानि ॥ तिनदे
हेत उदाहरन सुवादि लेहु मन मोनि ॥१३९॥
जाति जाति विरोध ॥ दोहा ॥ अतिमन बलि
नो दल कमल मेवल मृदुल गुन ॥ अन-
ल भये या बाल को विरह तिहारे लाया ॥१४०॥
परवत में तारवन भये मारवन सुदु पयान
ललित पल्लवित वेसिहुन सय कलष
ल निदान ॥१४१॥ जाति गुन सेो विरोध ॥ गो-
पद सुहमी कानक मय गिरि सर यप को मि-

त॥समुद्र अंबु कन होतुहें भयो सखिनकेचि
त॥१४२॥जाति क्रिया सों विरोध॥दोहा॥जे-
जन साथत साथु जन वचन सुथाको पान
जन्म मरन भय रहितते सोदू पायात कल्या
न॥१४३॥गुन सौ गुन विरोध ॥कहों चढ़ा
वतिहें सखी वंदन चंदन संग॥सीतल सब
उपचार सखिजारत मेरे अंग॥१४४॥गुन
सों द्रव्य सों विरोध॥दोहा॥प्रेम मगन सुनि
जन कहत हजजन थव्य बनादू॥मिचका
सखि परमा तमा लोचन गोचर पादू॥१४५॥
क्रिया क्रिया सों विरोध॥दोहा॥लखिते सु-
खपरि सुखोनिज मुख होत निहाल॥तोका
पोल चुवन करत निज मुख चुवन लाल
१४६॥क्रिया द्रव्य सों विरोध॥कविता॥जगत
विदित न्याय मत पसिद्ध यह छोटी जगस
व्यं परमान ते नहै कछुक॥ताहीके समान
नरच्यो॥सबही कोमनु ऐसी रचीहै विरंचि
तुम रचना काछू अचूक॥चिंता मनि कहै
ताहि और भांति करतुहें मे नवल वंत याके
लाइयेरे मुहें लख॥पीतम के विछुरत भार
भार दानन सों करतुहें मार मेरे मनके हजा

रदक॥द्रव्य द्रव्य सों विरोध॥कविता॥मालती
के फूल मालतीके फलनही मार फूलनकी
मार सींठा मारे सुकुमारीको॥चिंता मनि कहै
है वदान नहीन अंग अंग औरई वदन होत अ-
निल विचारीको॥भयेहें जलज वाल सरको
जलज वाल गिरि गिरि भूत लमें जाये गिरि
धारीको॥भयोहै निसाहें समै कांन्हके वियेरा
सीत मान दध मानकी दुलारीको॥१४७॥वि-
रोधको लहरा॥दोहा॥विन पसिद्ध आधार जो
कांन अधेय वखानि॥एकहि की दूक वा लो
पित अनेक यल ग्रानि॥१४८॥एक वस्तु के
कारत जो होदू असंख्यो और॥विविध विरो-
ध विचारिके काहा सुकावि सिरमौर॥१४९॥
देव लोक वासहु भये जिनकी उत्तम बानि ॥
रहति रसावति सक्त नन सोयन वार विनमा
न॥१५०॥वह मनमें वह दृगन में दहै वचनहें
भाह॥वहत तिहारे वास वह हम पावे कितनो
॥१५१॥रचन उदार सुचार छवि मोहि चतुर्द
सिर मौर॥नई सिर रति दूसरी रची सारदा और
॥१५२॥जो आधार अधेय की अन रूपता
नहोदू॥दोऊ को अधिद्वय काम अधिद्वय अ-

लंकात सोइ ॥ १५५ ॥ पृथु अधिका लंकार को
उदा हरन ॥ दोहा ॥ जाहि जसोदा मोह में ली
न्ह मोह आखंड ॥ तावा लक के उदर में लखे
राकल ब्रह्मांड ॥ १५६ ॥ दूसरो उदा हरन ॥ कल
प अंत जाके उदर सकल चराचर रूप ॥ नंद
मेहनी रोह में ताहि सुवावत रूप ॥ १५७ ॥ *
अन्यत्र ॥ दोहा ॥ कलप अंत जाके वसत जग
त सकल सवि भाग ॥ तोहरि अंग अस्मात् नहि
राधे को अनुराग ॥ १५८ ॥ विभावना अलंका
र को लखन ॥ दोहा ॥ कारज उत्पत्ति की जहां
कारन की प्रति धैथ ॥ सो सब कहत विभावना
पंडित सकाधि सुमेध ॥ १५९ ॥ विभावना को
उदा हरन ॥ दोहा ॥ वान धनुष सब फूल को
सेना अवला संग ॥ कौन हेतु है जीति को जीत
तु जगत अनंग ॥ १६० ॥ विशेषो यो न्तिको ल
दोहा ॥ जो अखंड कारन मिले कारज काछून
होइ ॥ तासो विशेषो कति कहत पंडित सत
कवि कोइ ॥ १६१ ॥ कविज ॥ मंडप दुनाल ज
ल जातन के पातन के सेज हू में विछे जल जा
तन के पात है ॥ करी नीरै गुलाब के नीर की अ
नूपन दी सिकता कापूर चूर अति अवदात है ॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल विरहिनी को सी
तल अपार उपचार अधिकात है ॥ एते परप्रति
फल विरह अगति पीरे पीरे होत पेन सीरे होत
गात है ॥ १६२ ॥ अंगति को लखन ॥ दोहा ॥ हेतु
और थल में दाह काज और थल होइ ॥ अलं
कार ज्ञाना वाहत होति अंगति सोइ ॥ १६३ ॥
आजु चलाए नेन सर मोपे त कितवि नाह ॥
सखी लखे आचस्त यह छिरे मोति उर माह ॥
१६४ ॥ कहि विचित्र सुविरह फल पावन को उ
दाहर ॥ अलंकार सुन बीन यह वरनत पंडित
लोम ॥ १६५ ॥ गनपति प्रभु सुनिये वचन बोलत
विमल सुभाइ ॥ सवने ऊंचे होन वों नवत तिहा
रे पाइ ॥ १६६ ॥ जहां विमल देवान बाछु काइत
परम परकाज ॥ अलंकार अन्योन्य यह वरनत
सब कवि राज ॥ १६७ ॥ अन्योन्य को उदा हरन ॥
ताहि छया वति चांदनी समुझ बडो उपकार ॥
विपुल वारत है चांदनी सुंदरि की अभिसार ॥
१६८ ॥ जो रंग रंग देवान को जया जोग नहि हो
इ ॥ विषम अलंकार कहत यह कावि पंडित
सब कोइ ॥ १६९ ॥ कौन कौन किया फलै मुनि
अनर्थ कह होइ ॥ जो कारज गुरावियते कीज

नहीन

और विधि सोइ ॥ १७० ॥ यों विरह तारे विरह
विषम कहत कविनाह ॥ अलंकार कारनामके
देख्यो गंधन माह ॥ १७१ ॥ प्र. विरह को उदा
हरन ॥ दोहा ॥ कितसि रीख कोमल अमल कम
ल मुखी को अंग ॥ कितक र्कस वारह रतन ती
रवत तपत अनंग ॥ १७२ ॥ मदन सिली मुखके
उरन सेयो वन धन कुज ॥ भये महा दुख दानि
उत दुगुन सिली मुख सुज ॥ १७३ ॥ श्री हरिज
अरसी कुसुम स्याम तिहोर ध्यान ॥ विसद होत
मन मुनिनके विमल शुद्ध विज्ञान ॥ १७४ ॥ तीस
विषम को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मोहन तापसिरे
सदा मोहन सीतल संग ॥ तेहीने उपज्यो विरह
जारत मेरे अंग ॥ १७५ ॥ समको लक्षणा ॥ दोहा ॥
होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग ॥ दि
विधसु वरनेते सत असत जोग कहत कवि लो
ग ॥ १७६ ॥ संजोग समा लंकारको उदाहरन ॥ *
सवैया ॥ वैदूषके हित लेत उसासन ए उनके हि
त होतिहे पीरी ॥ सुंदरता हरि राधिका की लखि
औरकी सुंदरता विधि कीरी ॥ वैदूष नंद कुमार
इते वृष भान कुमारिए रूप गहीरी ॥ जो यह जो
री मिले सखि होहिं वनो अखियां सखियां

नकी सीरी ॥ १७७ ॥ दूसरो उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रग
ट भई संसारमें निदा वाही जोग ॥ ताके आदर
करनको प्रगट भये खल लोग ॥ १७८ ॥ को प्र
कृत निन होइके अप्रकृत को कोइ ॥ तुल्य थ
म इक वारही तुल्य जोगता होइ ॥ १७९ ॥ मंड
ल विधि मंद किनी वृष याहन सब गान ॥ स
दा सदा शिव त्व सासि सवे वात अव दात ॥ १८० ॥
प्रकृति और अप्रकृति की वृत्ति सदाही वार
कारका की बहु क्रियन में दीपका उक्ति उदार ॥
१८१ ॥ प्रस्तुति अप्रस्तुतिन को सदस धर्म संजो
ग ॥ गम्य होइ अगम्य जित तित दीपका बुध
लोग ॥ १८२ ॥ श्री राधाके अधर रस स्वादन और
सुहोइ ॥ दास सिना मधु सुधा ए हरिको भाव
त नाहि ॥ १८३ ॥ लोभी जन धन लाभ अरु नित्य
जन संग सकाम ॥ साधु सदा ल श्री रामके ना
म लहत आराम ॥ १८४ ॥ देह तरुनि मन रोह
पुनि लसत सिरी संपन्न ॥ जल अरु वित्त कवि
न ए नीके लगे प्रसन्न ॥ १८५ ॥ पूरव पूरव करे
जो उत्तर को उपकार ॥ माली दीपका होत यह
समझो बुद्धि उदार ॥ १८६ ॥ कविन ॥ लूनी अली
चित्त वैनन मे मन तोमह जीवन मे यह जानी ॥

ता यह जोवन बीच वनाई अनूपम रूप कला
 पहि चानी ॥ ताही अनूपम रूप कालामें मनो
 रथ में न महां सुख दानी ॥ ताते वदो मन मो-
 हन को मन मो निलये के मनो रथ रानी ॥ १८७ ॥
 दोहा ॥ आवाति दू न पुनि जाति है ललित दि-
 खावति गात ॥ मृग नेनी हेरति हंसति कहति
 मधुर कछु बात ॥ १८८ ॥ सदस धर्म वृत्त को
 शब्द भेद सो होइ ॥ कवित रको द्वे बात मे प्रति
 वस्तु पमे सोइ ॥ १८९ ॥ प्रति वस्तु पम को उदा-
 हरना दोहा ॥ जो हरिके हिय रानी नरनि कीस
 मनि सोइ ॥ लिय गने ऊपर उर न सी सर्वांग रा-
 ही कोइ ॥ १९० ॥ माला मथ प्रति वस्तु पमा ॥
 दोहा ॥ हीरामें ते से ते सुवात अब दाते कैला-
 स ॥ ॥ रक्ते सत को हिये थव ले सति सिंघ पर
 गास ॥ १९१ ॥ मेरु थ दूति ही तुंग विधु सीत
 ल विजा उपाइ ॥ सहज समुद्र गंभीर अरु सु-
 जन सुभाइ गनोइ ॥ १९२ ॥ जहं विंव प्रति विंव
 को भाव सवन में होइ ॥ कहत सुकावि दृष्टांते
 सुनहु ताहि सब कोइ ॥ १९३ ॥ जहां तुलित द्वे
 वस्तु को शब्द भेद अभि ध्यान ॥ सो विंव प्रति
 विंव मय भाव कहत स ज्ञान ॥ १९४ ॥ अलंका

रदृष्टांत में सदस धर्म को होइ ॥ विसे धनहु को हो
 द पुनि विसे धर्म सोइ ॥ १९५ ॥ लाल तिहारे
 लावत ही बात हिये हुलसात ॥ तरनि तरनि
 अब लो कातहि पदमिनि पदमिनि कास ॥
 १९६ ॥ वैथर्मने दृष्टांत ॥ दोहा ॥ कहं दंभ दंभी
 न को दृष्टो न रहत निदान ॥ भाख मारत ही
 होतुं हे प्रगट वक्त को ध्यान ॥ १९७ ॥ अन
 होनी जग वस्तु को कछु संवध्य जु होइ ॥ उ-
 पमा पर कल्प का दूने निदर्स नो कीह सोइ
 १९८ ॥ कित अवला हम अल्प मीत कित य-
 हु जोग अगाध ॥ कैंकर कौर पील का अ-
 चल उचावन साथ ॥ १९९ ॥ अलि अंजन
 वंधु का दुति अधर अधर लखि लाल ॥ धरी
 नई दुति इंदु की कान बदन में बाल ॥ २०० ॥
 अपने अपने हनु को जोजा संवध्य ज्ञान ॥ हो
 न क्रियाते निदर्सना ताह कहत सुजान ॥ २०१ ॥
 कवि ज ॥ उज्जल स्वक्ष सुवृत्त प्रभाति धरे
 गुन वंत अनूपम जौं हो पाइ कै उन्नत सोपद उ-
 तम सोहत है निरखे मन मोहै ॥ सो यह बात
 विचारि कोहें मन देख्यो विचारि मतो सब कोहें
 मंजुल जो सुकाता हल हार सो नारिके ऊंचे उ-

रोजन सोहै ॥ २०२ ॥ दोहा ॥ अधिवा जहां उप-
मेय कवि थटवर नत उप मान ॥ नहं वितर-
का बनाइ को वरनत सुकवि सुजान ॥ २०३ ॥ *
कविता ॥ उपमेय गान उत वारं अरु अयका
र्य जहं उपमान को ॥ जहं होलहे नून दुहुन को
दुत कथन सुकवि सुजान को ॥ कहं कायन
होइ दूहन काहुं सवाही को जानिये ॥ कहं प्रा-
वदते काहुं अर्थते आछेपते काहुं मानिये ॥ *
२०४ ॥ दोहा ॥ रा-चारि-चारि सुत होत वारह चा-
रि को विसेख सों ॥ सब मैद रा वित रंक के मनि
जानि लेहु विसेख सों ॥ २०५ ॥ विविधिहाव भाव
ना सहित अति सुंदर जग माहि ॥ सज्ज निजिह
री चंद ज्यों वदन कलंकी नाहि ॥ २०६ ॥ रद-
काहा प्रवाल ज्यों अमल कमल ज्यों नैन ॥ कों
कहिये कुच को क ज्यों वारत कहा चित चैन
२०७ ॥ सुंदरि लुव अकलंक मुख जिन्यो कलं-
की चंद ॥ दृगन जि ते रंजन कमल जनु की-
ने रुचि मंद ॥ २०८ ॥ मेरी थिर सचिहं सदा जी-
ती विजुरी वाल ॥ जिते तिहार भुज नहं कांजनि
कलित मृनाल ॥ २०९ ॥ सकल चासता सहित
मुख क्यों ससि ज्यों कहि जाइ ॥ देखे वार वार

होतें द्वे विद्वान् संस्कृतनाइ ॥ २१० ॥ राव वाक्य से
होतें द्वे कायन अर्थ अनेक ॥ रावो अर्थ सलेख
काहि कवि जन करन विवेक ॥ २११ ॥ दृगलखि
मन सुख होत अति सब लस दुख मिटि जान
जहं दीपति इति देवता दरसन पाये प्रात ॥
२१२ ॥ लाभिषाय विशेष नन कथन सुपर कर
जान ॥ याको देत उदा हरन सुकवि लेहु मन
आन ॥ २१३ ॥ कविता ॥ हों तो हों अनाथ तुम
अनाथन के नाथ हो दीन तुम दीन बंध नाम
निज कीन्हो है ॥ हों तो हों पतित तुम पतित
यावन वेद पुरान वधाने कछु कहो मनवीनो है ॥
याव करी सेवा जो हों कहां मेरी सेवा रीमो आ-
पही ते आपनो के चिंता मनि लीनो है ॥ अत्र
तुम्हें मेरी रक्षा करि वेदा परी राम रावरे ही मो-
हि निज नानो जोरि दीन्हो है ॥ २१४ ॥ जहं विशेष
अभि ध्यान की दृष्टा कथन निषेध ॥ चिंताम-
नि कवि कहत है सो आछेपनि संध ॥ २१५ ॥
वद मान विषय निषेध को उदा हरन ॥ देहा ॥
कहों न काहु निडर सों हों काहु की बात ॥ विन
विचार कर काज अद मरो जु मरिहो प्रात ॥
२१६ ॥ उक्ति विषय निषेध आछेप को उदा ह-

रन॥दोहा॥प्रेम तिहारे चंदिका चंदन कमल
मृनाल॥अनल भये वा वालको काछूसे का-
हिये लाल॥१९७॥स्तुति निंदा मिमिकोर अ-
स्तुति निंदा होइ॥चिंता मनि कविकहत है
व्याजस्तुतिहै सोइ॥१९८॥कवित्त॥जाको कृ-
पा कोरे ताको संसारे छुड़ावै कोहै चिंतामनि भां-
ति यह भली मन भाईहै॥पापी सुकृती नसेसे
संके गति कोरे दुन्है जानै को कहंते भगवौ न
थों बड़ाईहै॥माया मोहै सबही को रहै व्या-
ध गनिकापै कीरति सकल जग रंसी क-
छू गाईहै॥रूप जाति गुन कहावै जगत पात
जगत की प्रभुता थौ कौन गुन पाईहै॥१९९॥
अस्तुति मिस निंदा मानस तोलीजियतु पर-
षि सुभाव लषि तुम पिय सज्जन सिरोपन
प्रकासहै॥जिनकेहू चुगयो मन मानिकति
हगरे सो वंहे नष दुति हिये पावतहु लासहै॥
चिंतामनि कहै कठोर कुच उर बीच ताही तुम
वांधे निसिगाढे भुज पासहै॥ताको सुखमा-
निलेत कहाँ लौ भलाई कहाँ रं से स्याम सुं-
दर सुथार्द के निवासहै॥२००॥अप्रस्तुति
प्रसंसा को लखन॥दोहा॥अप्रस्तुति के कथ-

न विनु प्रस्तुति जान्यो जाइ॥अप्रस्तुति पर
संससो सज्जन सुनो वनाइ॥२०१॥कारज के
प्रस्ताव मे कारज को अभिधान॥कारन के प्र-
स्ताव मे कारज कथन सुजान॥२०२॥अप्र-
स्तुति सामान्य जो तहं विशेष कहि जाइ॥क-
हुं विशेष प्रस्तुति कहें सामान्यो जवनाइ॥
२०३॥कहुं सहस प्रस्ताव मेहापसदम अभिधा-
न॥अप्रस्तुति संकार के चंच भेद नृसिंहा-
न॥२०४॥यथाक्रम उदाहरन॥दोहा॥सज्ज-
न तजी कुलकानिद्वज लखि गर लाज तमा-
न॥संयुगी हरि मुख निशि वसवन सज्जे रह-
कान॥२०५॥इहो अप्रानुत् को स्वडी कोनादी
है येहीहं तोनि कछु सुंथि नाही यह काज प्रस्ता-
व मे हरिमुख दखन को कारन बाह्यो कानन
के प्रस्ताव मे कारन कल अथर विंय बलत रहै
लाल उकति कारि को न अप्रानुत् ललीक वरन्यो
चहत रहत लाल राह मोन॥२०६॥इहं सखी
संडल मे नवोद के अथर विंय बलत नायक
कियो यह प्रस्ताव मे विंय खाहते नौकि कान
भाव वरन्यो नाही जान बुद्धि साध भयो यह का-
ज कह्यो सामान्य के प्रस्ताव मे विशेष को कथन

दो जल कन कमल निपात में उन मन मुकुता
 मानि कर परसत लषि लीन जड सोचत कहि
 निजु हानि ॥२२७॥ विशेष के प्रस्ताव में सामा-
 न्य को कथन ॥ दोहा ॥ जासों आपन मित्र को कि-
 या जाइ उपकार वह कुलीन वहै क्षती बहै क्षा-
 न्य संसार ॥२२८॥ जहां तुल्य अभिधान तहं
 तीन प्रकार विसेष ॥ श्लेष समासो कति अ-
 पर समता मूल कलेष ॥२२९॥ श्लेष मूलक
 को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहि मनि अधिक सने-
 ह कर कौरो लाख विधि कोइ ॥ कहं प्रकासत
 जगत में विन गुन दिया नहोइ ॥२३०॥ समा-
 सोक्ति मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ दसा
 जंगे जबलों नहीं होतुन आर मेह ॥ दसा ज-
 गे जा दीप में सबै करत है नेह ॥२३१॥ सदस प्र-
 स्ताव में सदस कथन ॥ दोहा ॥ जित तित ललि-
 त वसंत में फूली लता अतल ॥ फूल नहीं
 अलि के हिये विना मालती फूल ॥२३२॥
 वाच्य जु वाचक भाव की रीति तजै कुधु भ-
 क्ति ॥ पेच लिये सो सब कहत पर्या यो वात
 जक्ति ॥२३३॥ साम अर्थ जो विंजना सो प्रताप
 दित दोइ ॥ पर्या यो कति ताहि को कहत विबुध

सब कोइ ॥२३४॥ निर्गीयकान्ह को दस सावक
 जीवास को प्रीति ॥ मंदरता उन मद मदन मय
 मन सुध बुध बानी ॥२३५॥ प्रसूति कारण ने-
 जूहे प्रसूति कावन जान ॥ प्रजो यो कानि कान
 तयो विद्या नाथ तु जान ॥२३६॥ प्रजो यो कानि
 या नल राजी सारी अति चित चेत न जान को
 हैं से नानि नहं आन लजो हैं नेह ॥२३७॥ प्र-
 हर चि को यो रचने में सी कहि काव्य जान ॥
 जुवा दो प उप मान को सो प्रतीप कति जान ॥
 २३८॥ उप मानो उप मेव यद करे अन्त सरा
 ज ॥ इहां प्रतीप कहत है पंडित सब काव्य राज
 ॥२३९॥ रचि मधुरादे अथर को संदा वदन वन-
 इ ॥ मृधा मृधा निधि यो रचे विधि दुखि म-
 व पाइ ॥२४०॥ गारुध धरत मन जानि नौ एक
 तरुनि मिर मोर ॥ रूप चलो अति जगत में ले-
 सी रति है और ॥२४१॥ जूहे साध्य साध्य क-
 दिन सोदर नन अनु मान ॥ तर्क न्याय मूलक
 सुतो अर्थ काव्य जान ॥२४२॥ भौंर भाव जाइ
 तिय कोरे तही परति है दान ॥ इनके अंगो सर-
 मदन लीने दान कमान ॥२४३॥ हेतु वाक्य-
 को अर्थ के अर्थ पदन दो दोइ ॥ काव्य लेख

तासो कहत हेतु बखानत कोइ ॥२४५॥ हरि
 उर निर्मल नील मनि दरपन मिला समान ॥
 प्रति विवत इत राधिका कमला कांति निधा-
 न ॥२४५॥ पदार्थ को हेतु ताको उदाहरन ॥ *
 दोहा ॥ आथ अगाथ नदी बढी पारन पावत
 लाल ॥ हे अद्भुत लवन कुच कलस जस असो-
 ल से बाल ॥२४६॥ नील वसन पावस निसा
 चली जहां नंद नंद ॥ नेक कह मराल प्रयति है
 कछु उधार मुख चंद ॥२४७॥ श्लेष मूल को
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ पाप भतंग ध्यान तिन भ-
 नरनो निय रहि ॥ चिंता मनि जिनके वसत
 पंचानन उर माहि ॥२४८॥ कारत परस परसो
 मथन जो सामान्य विशेष ॥ सो अर्थ तरन्या-
 स कहि लखि पंडित गन लेख ॥२४९॥ विसे-
 ष परि मान को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मूढन की
 मति मंद ता तियन साधु करि लेत ॥ लावत
 सर पति कमलिनी मधुपन को मधु देत ॥
 २५०॥ रीभनिखी भानि बूझ विन बूझ लेत
 रिभाइ ॥ नीके कौनी को लगे सब विधि स-
 वै सुभाइ ॥२५१॥ काम कन को अन्वय जहां
 वरन्यो काम काम होइ ॥ यथा साव्य सो अलं-

कृत समति कहत सब कोइ ॥२५२॥ अथ वदन
 कच कुच लसत सुभा वैन अरु वेल ॥ विव चंद
 तम कोक जग अमी कमल से ऐन ॥२५३॥ अ-
 क वस्तु को भरणे और भई जो होइ ॥ ताको क-
 हिये यह कहा अर्थ पतिस कोइ ॥२५४॥ सुंदर
 की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक
 की जीती कहा चंपकली की जोति ॥२५५॥ अ-
 क वस्तु जो अनेक थल पापत एक निवार ॥
 नियमित की जे एक थल पर संध्या लंकार ॥
 २५६॥ एक वस्तु जो एक ही दोर नेम जो होइ ॥ पंख
 संख्या तासो कहत कावि पंडित सब कोइ ॥२५७॥
 अथ पूर्व जो का पुनि नाते भिन्न ज और ॥ परिसं-
 ख्यो देविध प्रयका कहत समति हिर मोर ॥२५८॥
 वर्जनीय दूत जो कछु कह शब्द गन होइ ॥ क-
 हूं अर्थ बल पाइये यह विधि होइ ॥२५९॥
 प्रथो अथ प्रथो कथन कछु वस्तु को होइ ॥
 ऐसे और न देत यह परिसंख्या कहि सोइ ॥२६०॥
 परिसंख्या लंकार नै कहत शब्द गन होइ ॥ क-
 हूं अर्थ बल पाइये जो सम नाही कोइ ॥२६१॥
 मंमट अकार जइहां से सो विधि विवेक ॥ प-
 रि संख्या लंकार को समुझो पंडित एक ॥२६२॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या को उदाहर-
न ॥ दोहा ॥ कौन सुखी जो राम को नहि संपति
रस लीन ॥ कौन सुखी जो राम ते विमुखन सं-
पति हीन ॥ २६३ ॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि-
का परि संख्या ॥ दोहा ॥ कहा से दिये पुरुष को
सब दिन सज्जन संग ॥ कहा थिय ये कहत स-
निव्यापक ब्रह्म असंग ॥ २६४ ॥ शब्द गत वर्ज-
नीया प्रश्न पूर्वि का परि संख्या ॥ दोहा ॥ भूप-
न की रति नहि रतन बन बिद्या नहि विना ॥
लोचन सुमतिन नैन जग समभान सज्जन
चित्त ॥ २६५ ॥ अर्थ गति वर्जनीया प्रश्न पू-
र्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ कुरि लाई तेरे कुचन
कर पग दोठन संग ॥ नैन नि चलीता कटिन
ता कुर्बान भाल मे भान ॥ २६६ ॥ शब्द गत व-
र्जनीया प्रश्न पूर्वि का श्लेष मूल परि संख्या ॥
दोहा ॥ कौन नहि विन दो सक दीपन सज्जन स-
माज ॥ कौन मंद स्तन दार नहि मनुज राम के-
राज ॥ २६७ ॥ प्रश्न पूर्वि का अर्थ गत वर्जनीया
श्लेष मूल परि संख्या ॥ दोहा ॥ कोविन गुन र-
ति हार विन जो ती को कुच चंद ॥ कौन मंद गति
अवध में वात वाल सा नंद ॥ २६८ ॥ शब्द गत व-

र्जनीया प्रश्न पूर्वि का श्लेष परि संख्या दोहा ॥
तिथ छवार मंगल विना क्यों कहिये खर कोद
विसमप रस नहि खल वयन जित हार चर-
चा होइ ॥ २६९ ॥ अर्थ गत वर्जनीया पूर्वि का
श्लेष मूल परि संख्या ॥ दोहा ॥ मजि मरोच
मय द्वारिका हरि नगरी अवदात ॥ सुनी विगु-
न वर वाहि मे जा मे तम की वात ॥ २७० ॥ उत्त-
र सुनि जहं प्रश्न को अटक रही ते जान ॥ का-
हु पिष्टा उत्तर कथन प्रथमो नर सज्जन ॥ २७१ ॥
वसन कहौ कैसे प्रथिक पति मेरो पर देसा ॥
सासु अंध बहिरि ननंद वंदे कल कल लेस
॥ २७२ ॥ कावित ॥ सुंदर क्यों मन मोह जूझत वैठी
हो वैठी कहौ सब जी की ॥ वात कहै सुनि हो
कहि संपति की वतिया सुख दायक लीकी ॥ अ-
बो दूते मिल आर सी देखिये हैं हम नदी कि
हो तुम नीकी ॥ नीकी भई जु जो हो तो कह हम
कैसे के होहि वरा वर पीकी ॥ २७३ ॥ दोहा ॥ रि-
खवन पठये तुम जु दूत ऊधो सब गुन थाम ॥
निरागुन कुविजा संग ते के सुत बल सो र्याम
॥ २७४ ॥ एक सिद्ध कर संग मिलि औरो साथक
होय ॥ होइ अपने क समुच्च या अलं दार यहर

कोडू ॥ २७५ ॥ काविज ॥ दुलारे सा बापके सका-
ल गुन धाम राम महा राज कुमार ललित रूप
वानि हैं ॥ जोवन को आगमन मंदिर पूरन थ-
न जगत निहाल कारवे को हाथ वानि हैं ॥ सी-
ता जू ललित अंग सहित सखी को संग सखी जो
सिखाई सब सकल कालानि हैं ॥ जोन कांहे चिं-
ता मनि मनि मय मंदिरनि अप जोति रूप जो-
से खेले कछू अनि हैं ॥ २७६ ॥ विरहि नी को
असत वस्तु को जोग ॥ काविज ॥ चिंता मनि थ-
न वन वीथिनि बोलत मोरते सिंघे रहो हे थरा
थनकी उने उने ॥ तेसिये भई है लाल भूमि दूंद
वधुन से वधुन पहारि लाल चूनी चुने चुने
सीरी सीरी तेसिये कादंबन की वासुलैले पा-
य बंदे लह लही बोलनि दुने दुने भांकि कै भा-
रोखे मुरभाति वाम थरी थरी हरी हरी पैषि अं-
कुरन की मुने मुने ॥ २७७ ॥ सदस जोग समुच्च-
य को उदा हरन ॥ दोहा ॥ रूप हीन अह अपरसी
देवि देवि मुसकात ॥ मूरख प्रगटे चातुरी बडी
हंसी की बात ॥ २७८ ॥ गुन गुन जोग समुच्चय
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ दृज नन पालक को सखी
प्यापक दह अंग ॥ थरे अंग इक संग ही स-

भयाम हैरंग ॥ २७९ ॥ क्रिया क्रिया जोग स-
मुच्चय को उदा हरन ॥ दोहा ॥ औंध नगर ते
निकारि कारि वन वसि रथकुल राज ॥ स-
त्य पिता को वचन अरु कियो देव गन काज
॥ २८० ॥ दूज कारन के मिले काजु न हरवर होद
से समाधु वरनत विवुध समभत सज्जन
कोडू ॥ २८१ ॥ हरि चाहो परापरन को मान
वती लखि वाम ॥ भई तडित थन स्याम मे
निरखि तडित थन स्याम ॥ कहं करिये परत-
स सम भावी भूत ज्वात ॥ अलंकार करता का-
हत स्वाभा विक कहि जात ॥ २८२ ॥ दियो हुल्यो
जावक ज्यो पराट देखिये पादू ॥ अंग भूष के
सखे भूषित लखो वनादू ॥ २८३ ॥ जा उपाय काह
वरी काधुज अन्यथा बात ॥ ता उपादु जोते सि-
ये कौरे दुयो व्याधात ॥ २८४ ॥ ज्यावति है तिय
नेनही नेनजु ज्यो यों काम ॥ जीतति विद्यम
फिलोकननि वाम लोचनी वाम ॥ २८५ ॥ कभक
स एक अनक मे एकाहु माह अनेक ॥ दे प्रका-
र पर्जाव यों सत कवि करत विवेक ॥ २८६ ॥
संवेया ॥ अडि दई तनु ताजु निते वाहे ताको क-
हं सेवन लाब्यो ॥ पादुन चंचल ताजुत जो अ-

वसा परनेन जंगे अनु राग्यो ॥ संद सुभावालि द्यो-
 गति जो मृगलोचनी की मीत द्यो तजि भाग्यो
 अंग न के गुन को बदल्यो करि के तिय के तन
 जीवन जाग्यो ॥२८०॥ कावित्त ॥ शिबी काम भयो
 सुख हसी वास भयो दुख जाको मुख परन सर-
 दरितु को समी ॥ चिंता मनि द्यो मन मोह-
 न जू आयि बाके बाके चारो वोर चंदिका स
 चिर है लसी ॥ राख्यो दिन घर वासी रहति घर
 वासी मेरे कोह कोसे रसी ॥ अवे हारे लगनि का-
 सी ॥ नेनीन मे वसी रूप आज से ज बाच उर व-
 सी जानी लाग उर वसी ॥२८१॥ सवेया ॥ नाह
 जु नाहर लाग लहे काछु दोसन मे उन मान
 ल्यो ॥ भयो भीत सुभावाहिलाल थटे दिन ह
 दिन ज्यों उन नेह ब्यो ॥ बहु यों वडे प्यार को दो-
 र भयो सजनी मृदु दायक रूप नयो ॥ अवजा-
 के छूटे छत्र को जित ज्यो सखि पीतम प्रान स्व-
 रूप भयो ॥२८२॥ दोहा ॥ पूरव पूरव अर्थ जा-
 हं उत्तर उत्तर हेतु ॥ कारन माला होतु सो सुने
 वटे चित चेतु ॥२८३॥ विद्या तें उपजे विने वि-
 नय जगत वस होत ॥ जगत भये वस धन मि-
 ले धन ते धर्म उदेत ॥२८४॥ किय पिये के दूहि

थै किये विसे धन भाउ ॥ यथा प्रथम पर फेरि
 कहि सका बली गनाउ ॥२८५॥ थाम वाम ज-
 त वाम जो रूप वंत बहु रूप ॥ सहित विलास
 विलास जो मन मथ वान अनूप ॥२८६॥ नज-
 ल जहां नहि कांज नहि कांज जहां नमि लंद
 नाहि मिलंद क सरवन जो खनन जित आनंद
 द ॥२८७॥ जह समास सम अर्थ को बदलो
 बरल्यो होइ ॥ चिंता मनि पर चत बह वरन त-
 है कवि लोइ ॥२८८॥ वासु दियो तन जोवनहि
 जीवन तन को जोति ॥ उप कारन उत्तमन की
 रीति परस्पर होति ॥२८९॥ काहा कहों हों
 कान सों आहु हों दुह काहु ॥ सुधि बुधि ह-
 रि सब हरि लंद दीन्ही विरह वलाइ ॥२९०॥
 जाइ लियो नहि वे ॥ जह परसो प्रवल विचा-
 रि ॥ एकै को अपकार जो प्रत्य नीक निरथा-
 रि ॥२९१॥ रूप दु पहनेना इगो वह तुम
 सों अक मेन ॥ जोतिय चाहति है तमै ताहि देत दु-
 ख मेन ॥२९२॥ होइ जू कोनो अर्थ ते सुखम अर्थ
 प्रकास ॥ सुखम नाम प्रसिद्ध यह अलंकार सु-
 ख वास ॥२९३॥ कावित्त ॥ कहु किंसुक फूल फ-
 लानि सो पूजतु प्रांशु लखे हय भान दूरी ॥ मुसका-

ति कछु मनि डोहि रखी को सुवाल उरो जन-
 वीच परी ॥ अंसुवान विलोचन परी रही सु-
 वि सरति सी कछु आध धरी ॥ तब कौल क-
 ली सेदु ओ कर जोरि तिया नति संकर धोर
 करी ॥ ३०४ ॥ दोहा ॥ जहां कौनह बातें में कछु
 वर्निये सार ॥ सो उत्तर उकार्य यों सुनिये सार
 विचार ॥ ३०५ ॥ पुहु मीसी वारा नसी तां में पंडि
 तसार ॥ वहरि पंडितन में समुझि सार सुब्रह्म
 विचार ॥ ३०६ ॥ जहां तहां संपति कायन सो उ-
 दार मन आनि ॥ जो उप लक्षन बंदेन को क-
 हो वंहे पहि चानि ॥ ३०७ ॥ कवित्त ॥ लालन की
 सीलनि को ललित पटाउ लाल जटित दिवा-
 लन की चो क चहू वोर की ॥ लाल बहु भूमि है
 महल खंड खंड लाल खंभनि खुलनि छवि वृं-
 के भ्रकोर की ॥ चिंता मनि मनि में भारो खन-
 की बैठ कन गान मृदु घुमर मृदंग धन थोर
 सुंदर रतन मय सुंदरि सुंदरी संग बिलन ल-
 तलाल लसनि विहार की ॥ ३०८ ॥ दोहा ॥ से-
 यह चंद्रावन जहां रच्यो राम नंद लाल ॥ मुरली
 मधुर वजाइ के मोही सब हृज वाल ॥ ३०९ ॥
 एक कवित्त में अलंकार भासे भिन्न अनेक

को निषेद्यज्ञ परस्य रहे संश्लिष्ट विवेक ॥ ३१० ॥
 शब्द लंकार अनुप्रास यमकी यष्टि ॥ दोहा
 शिव गिरिपरगज मुख मुदित गरजत गिरिजा
 पौर ॥ एक विनायक करत है एक विनायक
 सौर ॥ ३११ ॥ चाप मुकुट पट तडित दग पांति
 मुकत मनि दाम ॥ कनकलता लावि कुनयो
 आइ दूते धन स्याम ॥ ३१२ ॥ संकर पुनि दूनकी
 दूते अंग गिला बलानि ॥ आपुहि को विश्राम
 को पावत जे नहि आनि ॥ ३१३ ॥ कनकलता
 इह अति सयोक्त संबोधन में ताको उपमा वा-
 रि उपस्था पित जो अर्थ सो याको उपजी व्य-
 है यति अर्था लंकार को संकर है ॥ दोहा ॥ व-
 हुत अलंकार में जहां अर्थन निश्चित होइ ॥ को-
 है में संकर बहो वरनत है सब कोइ ॥ ३१४ ॥ क-
 वित्त ॥ हों दो तुम्हें पहि चानति हों बल वातन
 के बहु पंच बने हों ॥ ओर के माल भयो छति
 या कुच कुकुम छाप छपा वन रेहो ॥ बाहू
 सों सेति ही बोलहुगे मनि पीत ह जाकि धरे
 जव जेहो ॥ मोहनी मंत्र से वैनी मोहि को मो-
 हन मोहि कहा वहं कहो ॥ ३१५ ॥ * ॥ यामे
 मोहनी मंत्र तुलित जे वचन है तिनकर मोहि-

वो कारन ताहे यह कारनते विद्यमान ताह
 वह करि की वसों सलाहते अर्थ लंकार की स
 र्हि है या कविन की वस्तु सो योमे मोहनी मंच
 वलित से वचन हैं तिन कार मोहिनी कारनता
 है यह कारन के विद्यमान ताह वह करि की
 वसों सलाहते अर्थ लंकार की स र्हि है या
 वित की वस्तु सो कविन प्रथम ॥ तेरे कपोल से
 हो इन सोह जू कां चुकी की करि आरसी योमे
 अंग प्रमाण अनूप नैन वधू सोहाही गुमान नि
 लोपे ॥ याद सन बूति चंद्रिका लालची चाहे
 चकार भये हग तोपे ॥ वारक तो विधु वंशु
 हसि नेकु विलोकि बिराहिनि मोपे ॥ ३१६ ॥
 इहां प्रथम शक्ति प्रथम चरन मे ॥ विलोक
 दूसरे चरन मे ॥ पर नामा तीसरे चरन मे ॥ रूप
 चौथे चरन मे वा सत है ॥ दोहा ॥ सहकै देऊ
 जने है नहि करतु अनंग ॥ प्रति विं वित आ
 पुहिल वत रा हो ऊ दुहु अंग ॥ ३१७ ॥ * ॥ * ॥
 श्री राधाकृष्ण की रदाता लाध है अरु अरु
 रामे उभयाव लोकात हेतु है यति साध्या साध
 न अनुमान है के अंग करत विचारते अंग
 ते भिन्न करत तात पर यह माया प्रतिविंबित

चेतन्य उभयवदे आपु आत्मा एके है माया स
 वको छोदे शूद्र चेतन्य है आपु आत्मा एके
 है माया सवको छोदे शूद्र चेतन्य है महाश्ले
 प है सो उभयव एकत्व साधक है ताते अनु
 मान लंकार है अरु अरु अंग अंग अलं
 कार संभावित है अन्या अन्या दिका याते स
 कयो निग्रय नाही ताते संकर है ॥ दोहा ॥
 काधुन सूर्य सा सृदलता विलस वन जत फ
 लो ॥ लंपन सेलिहि तवात अलि सव वेलिन
 को रल ॥ ३१८ ॥ * ॥ दुहां विहंगम गत समास
 निहं के अप्रतीति प्रससा है ताको निग्रय ना
 ही ताते संकर है ॥ दोहा ॥ अस्फुटि जो एक दि
 विसय पद अर्थ लंकार ल है जवासा को जपुनि
 संकर समुभा विचारक मोर विरीट ल से अयल
 पद नील वला हक रंग हेर है ॥ गोपके कंध
 शेर भुज दंड अनूप विलास कलकाल अरु है ॥
 बाल और नव मंजरी मंजरी विलास कंधाल ते
 निकरे हैं ॥ सुंदर मारुते सुकुमार सो जेलाति
 नंद कुमार खर है ॥ ३१९ ॥ दोहा ॥ खवि कुलक
 ति तब सहज की तापर ललित विलास ॥ सुंद
 न पर सुंदर लगत ज्यों मनि दंड प्रकास ॥ ३२० ॥

Chap 4

निरर्थ

निरर्थ
मम
निरर्थ

i.e.
अप्रयुक्त

यहो उपमा लंकार को कति अनुपास को संकार
हे ॥ दूति श्रीचिंतामणि विरचिते कवि कुल का-
ल्यतरो नाम अर्थो लंकार निरूपनं त्रितीयं प्र-
काशमा ॥ ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रस को जु दूत देखि
परे अप्र कर्ष ॥ दोष कहत है ताहि को सुने छ-
टतुं है हर्ष ॥ * ॥ १ ॥ श्रुति कदु च्युत जो संस-
कृत अर्थ जुक्ति अस मर्थ ॥ निहता रथ अनु-
चित अर्थ ओर जु होइ निरर्थ ॥ २ ॥ ओर
अवाचक त्रिविधि पुनि दूत अश्लील विचा-
रि ॥ सं दिग्धो अप्रतीति पुनि गामनि चार्थ
निहारि ॥ ३ ॥ क्रिष्टो बहु विवाचनिये विसद्व-
मति कम जानि ॥ शब्दन के र दोष हैं सुजन
लेहु मन आनि ॥ ४ ॥ कानन को जो कदु लगे
श्रुति कदु दोष सुजान ॥ संस कार च्युत होइ-
सो च्युत संस कृत मान ॥ जो नहि प्रोगी सत
कविन काची भाषा जान ॥ मथुरा मंडल गवारि-
ये की परिपक बखान ॥ ५ ॥ श्रुति कदु को उदा-
हरन ॥ दोहा ॥ थन्य भयो कृत कृत्य हों सफल
भई है दृष्टि ॥ दरस तिहारो पाइ को हिये भई सु-
खदृष्टि ॥ ६ ॥ काची भाषा को उदा हरन ॥ दोहा ॥
वाकी स्मृति सावरी सो मुहि लागी नीकि ॥ व-

हे वसति है चित्त में ओर नई सुधि देवि ॥ ७ ॥
मथुरा मंडल गवारि यर की सुर बानी कोइ ॥
जोन प्रयोगी सत ॥ कविन अप्र युक्ति है मोइ
॥ ८ ॥ अप्र युक्ति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ जवते दे-
खा भावती तवते स्मृति चर चान ॥ भिन्न भिन्न त-
नु जारि है मो कंदर पकवान ॥ ९ ॥ असर्थ को
उदा हरन ॥ दोहा ॥ वन मे सोहत कमल अर
राजत सारस हंस ॥ सर मे अति सुंदर लसन
सरद वाल अवतंस ॥ १० ॥ द्वे वाचक पद मे ज-
हां अप्रकृति निहि को बोध ॥ सो निह ताग्य कह-
त है चिंता मणि भल सोध ॥ ११ ॥ निह तारय
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लो इन ललित विला-
सहे रक्त रूप हे हाथ ॥ वात कहत कथु मंदग-
ति चली सीवन के साथ ॥ १२ ॥ अनुचिता को ल-
सन ॥ दोहा ॥ होइ अनुचिता अर्थ तहं उचित
न वरन न होइ ॥ ताहि अनुक्तारथ कहत पंडित
सत कवि कोइ ॥ १३ ॥ मानति नाही मे गर्द हरि-
ज वारक आठ ॥ बोलति नाही गुरु के बैठ रही
है काठ ॥ १४ ॥ निरर्थ को लसन ॥ दोहा ॥ छंद
पूरन को जु पद होइ निरर्थक सो दुपलौ वाचक
पदन जो दहे अवाचक होइ ॥ १५ ॥ बोलति है

वाको

यह कोकिला सोपुनितहं तू पेय ॥ रिसहा प-
 र्त्ती है सखी तुही बोल पुन लेष ॥ १७ ॥ अम्ली
 को उदा हरन ॥ दोहा ॥ वि मारण देवति उहा पा-
 द परी हों आइ ॥ तू तब दोसी करान जो विर-
 ह पीत मरिजाइ ॥ १८ ॥ सं दिग्ध को लखन ॥
 दोहा ॥ जहा हेतु सं देह है सो सं दिग्ध वावा नि-
 शास्त्र हीन ने जो कह्यो अपु लीति सो मान ॥
 १९ ॥ सं दिग्ध को उदा हरन ॥ दोहा ॥ कूदत
 जाके होल है ये विरह मनु लाइ ॥ अति रंज-
 र सुंदर वन्यो हरि देख्यो किन आइ ॥ २० ॥ अ-
 पुतीति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ तो चितु मे चितु
 है महा ल को वेठी रूठि ॥ ते भिज मान कि-
 यो भद ज्यों मरकट की मूठि ॥ २१ ॥ मास्य को
 लखन ॥ दोहा ॥ होत गंवारी पद जहां मास्य
 कहत हैं ताहि ॥ चिंता मनि कवि कहत है सुक-
 वि तजत है वाहि ॥ २२ ॥ मास्य को उदा हरन ॥
 दोहा ॥ चुन्नी जमीरी सी बनी गोल लाल है मा-
 ल ॥ जानै नेन विशाल वह गेर लगे कव वाल
 २३ ॥ ने गार्थ को लखन ॥ जहा निधि द्वि की ल-
 खना सो नैया र्थ वखानि ॥ चंदा है इनत चंघट
 सो तेरो मुख मृदु वानि ॥ २४ ॥ क्रिय को उदा हरन

जाके अर्थ कहि विना जान्योई नहि जाइ ॥ को-
 वेलि सते जानिये सोहै क्रिय वनाइ ॥ २५ ॥ दू-
 व्य नाम दग हीन पद आसन रिपु परनासा ॥
 फूल द्यान ताको मृदु तीन्यो दूर दूर तासा ॥
 २६ ॥ विरह मति कत को लखन ॥ दोहा ॥ तो वि-
 रह मति कत जहां जान्यो जाइ विरह ॥ सो सो
 कथितन की जिये हे यह निपट अणु ॥ २७ ॥
 विरह मति कत को उदा हरन ॥ दोहा ॥ वड पु-
 रीन सुबुद्धि है सदा अकार थ मित्र ॥ कहा ओ-
 र संभार मे रोमो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अ-
 वायु होय गगन लिरखे है ॥ दोहा ॥ प्रति दूहा
 हरि होत है अरु हत वृत्ति वावनि ॥ अरु अधि-
 क पद कायित पद पतत प्रकीर्षा मान ॥ २९ ॥
 पुनि कला पुनि रात कहि चरनां तर पद हो-
 न ॥ पुनि अम वनमत जोग कहि अक धित दा-
 जेन कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अस्थन स्थ पद संकी-
 र्णो निहारी ॥ वसित और प्रसिद्ध हत मंदा का-
 स निर थारि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमृत अपार दो-
 वाक्य होय र माणि ॥ वादि चिंता मनि कहत
 है सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ पुनि दूहा ॥ हर
 को लखन ॥ दोहा ॥ अक्षर रस अनकूल नहि प-

ति कूलांतर सोइ ॥ कहत विबुध हत वृत्ति सो
 छंदो भंगहि जोइ ॥ ३३ ॥ कटुत वटु विषटु कु
 च बुद्धिपुट्टिय मार ॥ दंपत जुट्टिय लुट्टि सरव
 छुट्टिय पट्टिय वार ॥ ३४ ॥ हत वृत्तः ॥ दोहा ॥
 रूप काम अभिराम तन अमल कमल दल नै
 न ॥ चलि जात हो वा गली देत हंसत सीविसे
 न ॥ ३५ ॥ जोइ कर सजा छंद में भलो जो उत्तम
 होइ ॥ जो जाके प्रति कूल है योहं कहत स
 व कोइ ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ धरनी धसि पातालहि
 पेठी ॥ धूरि इंद्र के महल न वैठी ॥ सेस नाग फा
 न सहस नावाथो ॥ साजि सेन जव भूपति था
 यो ॥ दोहा ॥ सर्व लक्षन न कर अहित सुनत न
 नीको होइ ॥ यहो कहत हत वृत्त हैं ते सज्जन
 कवि लोइ ॥ ३७ ॥ कामीन लागत चंद है जो मे
 कांति कामीन ॥ ऐसो सुंदर वदन है वचन स
 मान अमीन ॥ ३८ ॥ न्यून पद को लक्षण ॥ *
 दोहा ॥ जहां वरन के करत है न्यून्या दिक् प
 द होइ ॥ चिंता मनि कविकहत है न्यून ॥ दि
 क पद सोइ ॥ ३९ ॥ वाकी अद्भुत रीति है कों
 काहू सो जानि ॥ है सब वष लनि लख्यो परत
 जहीं तही है आनि ॥ ४० ॥ कनक लता दामिनि

विथो आरुहि चंया दाम ॥ एक लखी वह कामि
 नी दूती मन मथ वाम ॥ ४१ ॥ काथित पद ॥ *
 दोहा ॥ जो पद दीन्हो है कछु वंहे वहुरि दे जाइ
 होत काथित पद है तहां कवी जन सुनहु वनाइ
 ॥ ४२ ॥ कोमल मुख वह कमल सो तिरल जैन सि
 त नाम ॥ गोरी कोमल देह है सोहत ललित
 पिलास ॥ ४३ ॥ प्रजति प्रकर्षन लक्षण ॥ दोहा ॥
 जो आनर अरंभये तैसे जो निव है न ॥ चिंता
 मनि कवि कहत है प्रजत कार्य सो ऐ न ॥ ४४ ॥
 चाह चुनरी चपन चप चौका चम कान चार
 चतुर चंद वदनी चली गरे पहिरि के हाग ॥ ४५ ॥
 समाप्त पुनर्हति ॥ दोहा ॥ जह वाक्यार्थ समाप्त
 है वहुरि विमये देइ ॥ सो समाप्त पुनर्हति है
 जानि सज्जने लेइ ॥ ४६ ॥ बडे वार लोइन बडे
 श्रीनो दरि वर नारि ॥ दक्षिण दिशि मे सावरी
 वह सोहति सुकुमारि ॥ ४७ ॥ जह जो उत्तर अरध
 पद पूरव अन्वित होइ ॥ अर्थो तर गत पद सुयो
 दयित भाषा कोइ ॥ ४८ ॥ जामे अन्वय वनत
 नहिं सो अभव नमत जोग ॥ चिंता मनि कवि
 कहत यों सुकविन करे प्रयोग ॥ ४९ ॥ वे मन
 मोहन ए इते रन्धी सकल सो भाहि ॥ जो वह

जोरी सखि मिले वेन नेन सिय राहि ॥५३॥ *
 अनुक्त कथनीय ॥ दोहा ॥ जो अवश्य कथनी-
 प्रसोक हो जहां नहि होय ॥ इत अनुक्त का-
 थनीय यह दोष कहत है कोइ ॥५३॥ जो पा-
 र्द नहि मै निका पार्द काम बधून ॥ सो कह ला-
 ल लट् निर्दिष्ट तू कात लखत भटन ॥५४॥ ज-
 हां होइ संकीर्ण पद सो संकीर्ण बतानि ॥
 एक वाक्य में और जहं सो गर्भित यहि चा-
 नि ॥५५॥ पीजे पान नखाइ ये पानी बेली
 पानि ॥ पिय हिय ठाऊं राखे सुखाहि मिला-
 ऊं आनि ॥५६॥ गर्भित ॥ दोहा ॥ और के अ-
 पकार ते खल सों कहं मिलाप ॥ तुम्हहि सि-
 खाऊं कारहु जनि कि ये परम संताप ॥५७॥
 जो पद जायल चाहिये सो नहि जायल होइ
 दूषन अस्थानस्थ पद कहत सुकवि जन
 कोइ ॥५८॥ तू कात लखत भटन यह नकार
 अस्थानस्थ पद दो ॥ जो पद अस्थानस्थ पद
 योंही अस्थ समास ॥ जो न बुद्ध की उक्ति में
 कविकी उक्ति प्रकास ॥५९॥ मेरे आगम मा-
 नयों कहि यत पिक थुनि वंत ॥ अलि हंकि
 त हंकि त कलित आयो अली वसंत ॥६०॥

प्रसिद्ध हत कोल ॥ दोहा ॥ थुनि ख आदि प्रसि-
 द्ध जहं तहां ही जिये सोइ ॥ और भांति योंही भि-
 ये तें प्रसिद्ध हत होइ ॥६१॥ वा मृग नेनी को
 सुनत नूपुर को निधवान ॥ पंच वान अभि-
 मान सों ताने वान कामान ॥६२॥ पूर्व मनु वा-
 देन प्रसूय मानो दयः पश्चा दन्पत्र विधितः ।
 प्रजुज्य मान प्रति निर्देस्य ॥ छंद ॥ ॥ उद्देस्य प्रति
 निर्देस थल में प्रथम ही जो ही जिये ॥ पुनि जा-
 व है कहिये पोर तो वहे ताथल लीजिये ॥
 जा कायित पद की भांति ते पत्ताय पद मिल
 कीजिये ॥ तो होइ प्रकाम भंग दोष सु सत्य ज-
 न पती जिये ॥६३॥ अरुन उदित रवि होन है
 अरुने अथवत आइ ॥ संपति विपति वडेन
 को सके काम लाव जाइ ॥६४॥ अरुन उदित वि-
 कारत है लाले अथवत आइ ॥ दोहा ॥ जो कवि
 ये सुतो प्रकाम मंगल जाइ ॥६५॥ जिन विरंच
 जगती रची तिन नरची तू दास ॥ और लट् क
 औरै ठवनि औरै दुति अभि राम ॥६६॥ *
 और लट् क औरै ठवनि से सोन कवि सोइ
 नमत दूसरे और जहं अमत पर रथ होइ
 चिंता मंग कवि कावित में रचि ॥ अत आदि को

यहै गहे पर हार है पर पीतमे सुहाव ॥ सव थ
ल देखो मेन है ऐसे सती सुभाद ॥ ६८ ॥ वा-
क्य दोष ॥ अर्थ दोष गाना अर्थ अपु वृत्त वा-
क्य पुनि व्याहत अस पुनरुक्त ॥ अनामो संस-
थित पुनि जोन होत संयुक्त ॥ ६९ ॥ ओर प्रसि-
द्ध विरुद्ध पुनि अनवी कत मन गल्य ॥ नेम
अनेम विहीन पुनि विन विशेष सामान्य ॥
७० ॥ साकी ओ पद जक्ति पुनि सह चर मि-
न्न विचारि ॥ कहिय प्रकास विरुद्ध पुनि चि-
ता मनि निरधारि ॥ ७१ ॥ न्यक्त पुनः स्वीकृ-
त कह्यो निप्रसील वखानि ॥ अर्थ दोष याभा-
तिके अपने मन मै आनि ॥ ७२ ॥ अति विस्ती-
रन समुद्र को पार उत्तरि किनि जाइ ॥ धरि नर-
वर तुव गुन कथन कियो न जाइ वनाइ ॥ ७३ ॥
कार्य ॥ दोहा ॥ कारन दियो है सूरके या दिन
जात विहात ॥ तेरा त्यागते भिटत नहि संची
बोलत वात ॥ ७४ ॥ व्याहत ॥ दोहा ॥ सुधि न जा-
हां निज कथन की सो व्याहत मजान जोनि
जित कहिये प्रथम सोई पुनि उप मान ॥ ७५ ॥
तेरे सम होना तवो चन्द मुखी यह चंद ॥
कमल नयन तो नयन लखि कमला गति

दुति मंद ॥ ७६ ॥ पुनरुक्तार्थ ॥ दोहा ॥ काहू को-
वर बन करत होइ विरुद्ध प्रकास ताको सोई
कहत है जाको मन पर गास ॥ ७७ ॥ मोहि
चहत दिल्ली सनिह रत तरवार नरेस ॥ क-
हत न क्षितिको समुद्र सो कित मानो सं-
देस ॥ ७८ ॥ जांमे विधि अस वाद को कथन-
न नीको होइ विध्यनु वाद अयुक्त सो कह-
त विवृथ सब कोइ ॥ ७९ ॥ प्यो अयो परदे-
मेत सख समुद्र अधिकात ॥ अति प्रचर वे-
धित सखा सोवंगी तुम पात ॥ ८० ॥ उपसंह-
त करि वाक्य को बहुरि कोरे अभि ध्यान ॥
न्यक्त पुनः स्वीकृत तहां कवि जन करत वखा-
न ॥ ८१ ॥ कालि अली नद लाल को रूप नि-
रखि अभि राम ॥ होमोही सुधिवुधि गई सा-
रत तीर न काम ॥ ८२ ॥ अश्लील ॥ दोहा ॥ हो-
काटार मार्यो चहत छिद्र तके जो कोइ ॥ र-
ताको हर वर पात ज्यो उन्नत है नहि होइ
॥ ८३ ॥ रस दोष ॥ दोहा ॥ संचारी चार्द रसो रा-
व कथित जो होइ ॥ अस अन भावकी भावो
अक्त कायते होइ ॥ ८४ ॥ प्रतिकूल वि भावा-
दि को गहन आन सम उक्ति ॥ मुरव को अ-

नु संथान नहि अंगहि की बहु जूति ॥८५॥
 प्रकृतिनि को पुनि विपरीत अनु मित
 वर नन जानि ॥ चिंता मनि कवि कहत है
 परस दोख वावाने ॥८६॥ शब्द कथित सं-
 चारी अस्थाय रस ॥ दोहा ॥ संका दुरजन
 के हिये याके हिये उछाह ॥ अरिन सा-
 हत वीर रस अनु रागी नरनाह ॥८७॥ *
 विभाव की क्लेशते व्यक्ति ॥ वाकी मद सु-
 धि बुधि गर्व वाहिन कहं विप्राम ॥ निमि
 वासर रोवात रहति कछून भावे काम ॥८८॥
 प्रति कूलोक्ति ॥ दोहा ॥ * ॥ प्यारी हंसि को
 वात कहि डारि गारे मे वाहि ॥ रोस छोड स-
 ति मान करि जोवन धन की छाहि ॥८९॥
 अलिशयोक्ति ॥ दोहा ॥ भली भई बहुते अ-
 ली लारी घरमे आगि ॥ मेरे कर की गागरी
 लीन्ही साजन मागि ॥९०॥ मुख्या नन सं-
 थान ॥ दोहा ॥ मै चौपर खेलन लगी निमा
 संमे मे आजु ॥ वैठी सखी समाज मे भूलि
 गय वृजराज ॥९१॥ अंगको विस्तार ॥ दोहा
 कालिंदी सुंदर नदी सुंदर पुलिन सरूप ॥
 दृढावन धन छांह नकि कुंजनि रूप अंग

प ॥९२॥ प्रकृत विपर्ययाः ॥ दोहा ॥ निख
 त नैन सहस्र सों सुंदरता सवि सेय ॥ रंभा
 की मधवा दुखित लागत हेत निमेय ॥९३॥
 अनु चित वर्नन ॥ दोहा ॥ विरहिनि नैननिमे
 सुझमि काजर लोमे नवीन ॥ विन देखे पियके
 रहे मनो स्याम मुख कीन ॥ कहं कर्न अवतंस
 इत यदि पदन को दान ॥ सं निधान इत्यादि
 के बोध हेत सज्ञान ॥९४॥ जहां हेत पर सिद्ध
 है तहं नरहे तन दोख ॥ सब अदुष्ट अनुकार
 न मे इनते नही अतोख ॥९५॥ चिंता मनि
 गोपाल को वर्नन कोरे वनाइ ॥ वक्ता दिव्यो
 चिंत्यते दोषो गुन है जाइ ॥९६॥ इति श्री
 चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प जरो
 दोष निरूपण नाम चतुर्थ प्रकरण ॥ * ॥९७॥
 दोहा ॥ पद वाच्यक अरु ला सणि क व्यंजक
 विविध वावान ॥ वाच्य लक्ष्य अरु व्यंय पुनि
 अर्थो तीनि प्रमान ॥९८॥ विन अंतर जा शब्द
 कर जाको हेत वावान ॥ सो वाचक पद हेत
 है कहत सुकवि परमान ॥९९॥ लक्षक ताको
 कहत जो हेत लक्षणा जूत ॥ चिंता मनि क-
 वि कहत है यह प्रमान है उक्त ॥१००॥ मुख्या र-

थके बाध अरु जोग लक्ष्मना होइ ॥ होत प्र-
 योजन पादुके कहं रूठ हित सोइ ॥ ५॥ गंगा
 घोषक है तहां होत तीर को बोध ॥ सीतलता
 रूपविता तहां प्रयोजन सोइ ॥ ५॥ तहां वि-
 जना वनि वह होत लक्ष्मना मूल ॥ जहां प्रयो-
 जन जानिये कहत ग्रन्थ अनुकूल ॥ ६॥ *
 जहं अभिधा अरु लक्षणा अनिकछु भि-
 न्न प्रकार ॥ होइ अर्थ को बोध तहं कवि जं-
 जक व्यापार ॥ ७॥ शब्द अनेका रथवरनि अ-
 तिकछु भिन्न प्रकार ॥ होइ संजोगा दिक्
 गनन दूत अवाच्य को सार ॥ ८॥ तहां व्यंज-
 ना वृत्ति दूत यह मं मट तत्व है ॥ चिंता मनि नि-
 जमत्य मे कवि दूत वरनन आनि ॥ ९॥ संजोगा
 दिक् जोगने प्रथम एक सों जोग ॥ चिंता मनि क-
 वि कहत दूत वरनो बहुरि विजोग ॥ १०॥ अर्थो
 प्रकरण चिन्ह पुनि ॥ दोहा ॥ * ॥ आनस दूकृत
 चिन्ह पुनि आन शब्द कृत संग ॥ सामर्थ्यो अ-
 चित्य ओ देस सों पर संग ॥ ११॥ ओर आभरन
 आदि ते शक्ति नियं त्रित रीति ॥ एक
 अर्थ में ओर की व्यंजन ते पर तीति ॥ १२॥
 शब्द चक्र जूत हरि तजे शब्द चक्र करि आनि

राम लवणा दसरथ तनय साह चर्यते जानि
 ॥ १३॥ रामार्जन तिन दुहुन को परस राम दू-
 त मानि ॥ सहस बाहु अरु मनि कहै दुऔ
 विरोधित जानि ॥ १४॥ मकर ध्वज इहि चि-
 न्हते गनत कंदरप लेखि ॥ देव पुरारिसु आ-
 न पद जोग सद को पेनि ॥ १५॥ मधु मत्स्या को
 इ लरित राज सामर्थ्य उर आनि ॥ रक्ष्या संदरि-
 सन मुषता ओ चिपो पहि चानि ॥ १६॥ इत
 राजत परमे पूर्वै यह रज धानी देस ॥ चिंता
 मनि कवि जानिये तहां नृपति को वेस ॥ १७॥
 राजे दिन निसि अमन रवि चित्र मानते
 लेखि ॥ इत नो बालक बड भयो यह अभि-
 न्हते पेखि ॥ १८॥ व्यंजन व्यंजन जुक्त पद
 विरु सुता को अर्थ ॥ वाच्या वाच्या लक्ष-
 निक को कहि लक्ष्य समर्थ ॥ १९॥ ओ अर्थो
 व्यंजक वरनि शब्द संगते होइ ॥ व्यंग्य लक्ष-
 ना मूल यह तहां सुनो कवि कोइ ॥ २०॥ *
 लक्ष्मना मूल व्यंग को उदाहरन ॥ दोहा ॥ भ-
 ई अनूपम चोपतनु प्रफुलित नैननि चैन
 आंकुस है फेरो हियौ वाला पन ते नैन ॥
 २१॥ कविना जेवन को आगमन दोसे मकर

ध्वज के नीकी लगी लगन सखी की रस दतियां
 चिंता अनि पल पल पर प्यार चढ्यो उपज्यो
 वियोग व्याधी विथा दिन रतियां ॥ मोह ही-
 ते जहां तहां पिय को देखन लागी हंसि रे-
 लि बोलि सहां लह्यो है सुख तियां ॥ याही
 सों आये वेद संचि आपु आपु ही ते नकल
 लप कुलागी लालन की छतियां ॥ २२ ॥ अ-
 र्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ साखी है सखि
 यां सखे अवहो भई अचेत ॥ मैं मनु दीन्हो आ-
 पनो वै दूत पाउ नंदत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंग्यक ॥
 वर्तिय मान सुरति गोपना ॥ कविता गनीष
 मं मे व्यापी कूप सरवर सुखे सब जल नदी
 भारनाते आवतु नगर में ॥ जहां जात आवत
 लगत कांट भारन के होन जेहो हूं ही पान
 पीवति हों घर में ॥ अति दूर हीते भरी गारि
 लैं आवति हों छूटत पसीना कोंपे अंग धर धर
 में ॥ वाहति हों पुनि सासु नन दभु कौन मोपे
 जाउंगी तो अरुगी भरि दुप हर में ॥ २४ ॥ इति
 श्री चिंता मनि विरचिते कवि काल कल्प तरौ
 शब्दाणि भिरपाण नाम पंचमं प्रकारां ५
 दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम र त्रिविध कवि-

त पहिचानि ॥ तिन के लहा उदा हरन देत
 लेहु मन आनि ॥ १ ॥ वाक अर्थते कहत मनि
 व्यंग अर्थक जहं होइ ॥ सों जन उत्तम क-
 वित यह जानत कवि कोइ ॥ २ ॥ उत्तम व्यंग
 प्रधान गन अप्रधान गन व्यंग ॥ सो मध्यम
 पुनि अधम गन त्रिविध चित्र अव्यंग ॥ ३ ॥
 वाच्य लक्ष्ये भिन्न जे कवितु सुनोते अर्थ
 भासेते सब व्यंग कहि वरनत सुकवि समर्थ
 ॥ ४ ॥ उत्तम काव्य को उदा हरन ॥ दोहा ॥ सखि
 निसि ते पतसों जितो रति रन मदन प्रसाद ॥
 सुंदरि जय दुंदुभि सज्यो कल किंकिनी निनाद
 ॥ ५ ॥ कविता ॥ कीन्हो मधु पान सुधि कथु नैन
 रही मन भाई को अवर स्याम बोल्यो चित वा-
 न के ॥ चिंता मनि कोहे लाल लोचन ललित
 सोहे लाल भाप कोहे रत्न जेहें अल साइके
 हमसों घरी कोमे राखते कहि आवन सो दी-
 न्हो मन भावन दरस भोर आइके ॥ रहो नक-
 ल नायक रस कनिसि चांदनी की देखे हा-
 ल आस खाल बाल को सुवाय के ॥ ६ ॥ * ॥
 दोहा ॥ एक विरचित वाच्य ध्वनि सकु विव-
 क्षित वाच्य ॥ दोहा ॥ उत्तम काव्य यह मत क-

वि पंडित राच्य ॥ ७ ॥ वक्ता की बुद्धि न जहं
 वाच्य अर्थ में होइ ॥ सो अवि वक्षित वाच्य है
 कहत सकल कविलेइ ॥ ८ ॥ अत्यंतति रस क
 त वाच्य अनर्थ संक्रमित वाच्य द्विविध मू
 ल ध्वनि वरनते अवि वक्षित वाच्य ॥ अत्यं
 त तिरस कृत वाच्य को उदाहरन ॥ दोहा ॥
 सज्जनता प्रगटिन करी कियो बहुत उप
 कार ॥ ऐसे काजु कारे सदा जीवों वर्य न जा
 र ॥ ९ ॥ अन्यार्थ संक्रमित वाच्य ॥ दोहा ॥ तो
 सो पद हम कहत हैं रक्त संगति मति जा
 हि ॥ कीजे काम विचारि के भले आपनी
 चाहि ॥ १० ॥ वाच्य अर्थ सुवि वर्तिता वाच्य
 द्विविध पहि चानि ॥ लब्ध अलब्ध क्रमानि
 सों व्यंग्य सुमन में अनि ॥ ११ ॥ प्रति शब्द
 कृत लब्ध क्रम व्यंग्य सुद्विविध वरवानि ॥
 शब्द अर्थ जुग सक्ति भव इमि ध्वनि भेद
 सुजानि ॥ १२ ॥ शब्द सक्ति उदभव व्यंग ॥ *
 दोहा ॥ अलंकार की वस्तु जहं व्यक्त शब्द
 ते होइ ॥ शब्द सक्ति उदभव सु वह वरनत
 हैं कवि कोइ ॥ १३ ॥ शब्द सक्ति मूल व्यंज
 ना कार को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मधु मोदित

अलि मंजरी मंजु मौलिछवि जाल ॥ पद्म
 गग पल्लव खलित राज तल्लालरसाल ॥ १४ ॥
 इहां नायक अरु ग्रामकों उपमा नोपमे
 यते उपमा लंकार व्यंग्य है ॥ शब्द सक्ति मू
 ल व्यंग्य वस्तु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ चौपर
 खेलत है कहा जुगहें जीति सुभाय ॥ ला
 ल जानें हैं हाथते अरी चुंको यह दाय ॥ १५ ॥
 इहां शब्द सक्ति सों नायक अनु न योक्ति
 है है जातन चलियत व्यंग्य ॥ दोहा ॥ दोऊ
 पद गत वाक्य गत जो गनि चारि प्रकार ॥
 अर्थ सक्ति भव भेद के कारत विदुध विस्ता
 र ॥ १७ ॥ अर्थ सक्ति उदभव ध्वनि भेद ॥ * ॥
 दोहा ॥ स्वत संभवी सुकवि की पौढ उक्ति
 पर सिद्धि ॥ कविनि वद वक्ता हुकी पौढ उ
 क्ति पर सिद्धि ॥ १८ ॥ विविध अर्थ व्यंजक
 छविधि वस्तु अस कृत रूप ॥ लोकोप व्यं
 ग्य छ भेद सों द्वादस भेद अनूप ॥ १९ ॥ मेरी
 बातनि आजु उन दियो कान छविवानि ॥
 सुनत तिहारो नाम के मुस कानी मृदुदानी
 ॥ २० ॥ इहां नाम अवनांतर मुस कानी रूप व
 स्तु करि दुं मे वह चहति है मिलेगी वह वस्तु ॥

व्याप होति है काहू देखे कान्हू काहू काहू का-
 न्हू कौसो कान्हू कान्हू कान्हू कौरे यों लगन
 अधि काई सों ॥ वाही के विकल तमें कछु
 पर वाहि नाही भले हो गुपाल जर निपट नि-
 दुर्द सों ॥ चिंता मति कहै तुम कौंहो निह
 चित वैं कहां जाइ कहौगी विरह ताप तर्क-
 सों ॥ वाकी यह दशा भई तुम तौ न सुधि लई
 जानि कौरे दई कोऊ नेहु निरदई सों ॥ २१ ॥
 यह ऐसी अनुराग वती निहुर जे तुम तिनमें
 असक्त भई यास विषमालंकार व्यर्थ है ॥
 कविता ही धन तूही प्रान तोही मैं हरिको मनुते
 रेही रिभाइये की रीति में प्रवीन हैं ॥ चिंता
 मनि चिंतानित तेरी रहै तेरिही विरह पिन
 पिन होत घीने हैं ॥ टीका चुनकी जै रकु रास
 निवृत्तै काहू छोड़ दीजै तेरे दृज दाकुर आधीन
 हैं ॥ तूहै पीकेनेन अरविंदन की वृंदिता ओपी-
 केनेन तेरे तनु पानिषके मीने हैं ॥ २२ ॥ इहां प-
 र ॥ परित रूपक करि और नायका की और अव-
 लेखि वी नाही ताते और अलंकार नाही वस्तु
 व्यंग्य है ॥ आवति दिग दृष्टि तिन तनु हंसति दृगं
 तनिहारि छर कायल मनि रूप मद छकी छवी-

ली नारि ॥ २३ ॥ इहां स्वभाव उक्ति करि मोपर स-
 काम है इह वस्तु यो नित होति है ॥ स्वभाव की अ-
 लंकार करि अलंकार को उदाहरता है ॥ कोव सौं उज्ज-
 हुन को कौन थरावै थीर ॥ दोऊ प्यास जै रके
 दोऊ सीरे नीर ॥ २४ ॥ इहां नायका अरु नाय-
 क को अस्यसे जै र मास पिपा सित अरु जै र
 मास को सीतल जल इन सोम्य भेदन रूप
 न निरूप अलंकार करि दोऊ परस पर निर-
 वधि प्रेम पावैं नाते समालंकार यो नित होत
 है ॥ कविता ॥ कर वास गिरि को मल कामल
 करते उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात
 है जीवै गो से जीवै जो मरे गो बहु मरे मोसो
 कैसे निरुज वालक कौं कैसे देख्यो जात है
 मेरी कही कामना तौ निकसि तारौगी काहि-
 चली जहां करिका सिलान कौं निपात है ॥
 जहां कौं गोपी गोप गन संग नंद राजी तहां
 रदा की वकौ अचल अधिकांत है ॥ २५ ॥ *
 कविता ॥ दोऊ जन दुहू को अनूप रूप निर-
 खत पावत काहू छवि सागर को छोड़ें ॥ चिं-
 ता मनि केलि के कलानि के विलासनि ॥
 ऊजने दोहन के चितन के चोर हैं ॥ दोऊ ज-

ने मंद मुसकानि सुधावरसत दोऊ जनेछ
के मोद मंद दुह वोरें हैं ॥ सीता जके नैन राम
चंद्र के चकोर राम चंद्र नैन सीता मुख चंद्र
के चकोर हैं ॥ २६ ॥ राम चंद्र के नेत्र चकोर
सीता को मुख चंद्र राम चंद्र मुख सीता के ने
त्र चकोर यह पर रूप करि दोऊ सम प्रेम
जुत हैं ताते समा कार व्यंग्य है ॥ इहां कवि प्रो
क्त वस्तु करि अचल को अथि काइ वों को
जो वरनन सो श्री कृष्ण की दृष्टि में सब सा
मर्थ्य है यह अर्थ द्योतित है ॥ कविता ॥ वाजे ज
व वाजे महा मधुर नगर की चनागरि निनि रिल ल
लकानि अकु लाई है ॥ चिंता मनि कौहे अति
परम ललित रूप अष्टा पर दूलह विलो कन
को आई है फैली महलनि मनि मेखलामन
का महा मनि नूपुरन की निनादन की भाई है
पहिले उज्यारी तन भूषन मयूषन की पोछ
ते मयंक मुखी भारोखन आई है ॥ २७ ॥ इहां
चंद्र प्रद प्रदीपा दिवाजे लहादक तेजस पादा
र्थ तिनके आगमनिते पहिले ही जैसे दीप प्र
लति है तैसे उनके मुखादि अंगन की असुर
तन की दीप्ति फैलति है पहिले उज्यारी तन

भूषन मयूर के पीछे ते मयंक मुखी भारो ख
नि आई है ॥ यह कवि प्रोदोक्ति शब्द वस्तु क
रि दल सों चंद्र प्रदीपा दिवा तिन सौ उपमान
रूप में व्यंग्य आवे है याते उपमा लंकार व्यंग्य है
॥ २८ ॥ कविता ॥ परम अपार भवसागर उतावो एक
सुधा लामची जल की त समतल है ॥ चिंता मनि
कौहे राम कानन उजियनि है कोटि कोटि मह
पाप दुर्जनिय रहनि है ॥ यवन अगोचर तोम
रि साहि सारी साहि बहि कोरक साहि श्रुतों
जा कहि है ॥ अपनी साहिनी सब देते निज से
यवन जल से वानि लीखी जल तंड है सो वै सि
धे रहति है ॥ २९ ॥ इहां कवि प्रोदोक्ति ॥ सिद्धि
ता प्रोद प्रसुते प्रोदार्थ ज अथि का वरनन में
पहिले का लंकार परम परम संयन्त्र राम से रा
मे प्रोदार्थी याते अजन्म का लंकार व्यंग्य है ॥ क
विता ॥ जल की जल की असंख्य अति मोक्ष जो प्र
पत्ति ये दिव्य की स्वना दिवा लक्ष्मी ॥ चिंता म
नि कौहे खड्ग परस रंड का कोल छिति मरीच
तक अगार दान लासनी ॥ जल तिधु नूपुर
दुर्ग जल अजनिन निवाही रहि रहि आवे तन
जाति जलनाली यावत भनू गिरनने काही सर

पांति प्रलै चंड कर मंडलते चंड कर माल सी।
 २८॥ इहां कवि प्रौढोक्ति उपमा लंकारक प्रलै
 कालिका सूर्य मंडल ताते निकारि कि रनि
 मंडल जैसे जगति को संहार करत है ऐसे
 मंडलित श्रीकृष्ण के धनुषते सर चंदनिकारि
 करि जरा सिंधु की सेना को प्रलै कीन्हो यह
 वस्तु द्योतित होति है कविनि वद्व वक्ता प्रौढो
 क्ति सिद्धि वस्तु करि ॥ वस्तु व्यंग्य धुनि को उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ मै समुद्रौ यह आजु ही है अंत
 क बल वंत ॥ मो सुत माखौ दूंदू जित जिति व
 ल भरन अनंत ॥ २९॥ अंतक बल वंत है यह
 कथन रूप वस्तु करि रावन के अंत कह को
 भय नाही यह वस्तु द्योतित होति है ॥ कविनि
 वद्व प्रौढोक्ति सिद्ध वस्तु करि ॥ अलंकार व्यंग्य
 धुनि को उदा हरन ॥ कवि त ॥ जबते आपुन
 ल्याये जानु की लंका बीच भये ताही दिन ते भ
 यंकर निमित्त हैं ॥ परी सेना समुद्र के तट मे अ
 संख्य कपि रीछन के काटक बढत उत नित
 है ॥ जौ लौं राम लखन तेरे तेज बानन सों
 भये लंका पुरी के न भट भित्त भित्त हैं ॥
 तौ लौं रघुनाथ दिग जानु की पटाइ दीजे सैंसे

मेरे उत्तम विचार होत चित्त है ॥ ३१ ॥ इहां क
 वि प्रौढोक्ति सिद्ध जो अलंकार असंख्य सेना को
 बढिबो सो तुम्हारे विनाश को उपस्थित भ
 यो है जो सीता राम के निकट पटाइ देउ नो वं
 शका विनाश न होइ ॥ कवि त ॥ बारिबो रिबे को वृ
 ज बोले वृज धर प्रलय बारिद पटाइ वृषता
 समुभाइ हो ॥ चिंता मनि आगुरी के वरी
 पराषि गोपी गोप गैयन को गन को वचा
 हो ॥ * ॥ दूर के गुमान वरषा को महा मेघ
 न को आलो महा मधुवा को रोदन काइ हो
 वाही के हजार रक लोचन के आसुन सों
 दर पुरंदर के मंदिर बहाइ हो ॥ ३२ ॥ इहां प
 स पर कार्य करि बोसो अन्योन्या लंकार क
 होवे कार्य वह सनी होइ कै ॥ असत होइ इ
 द असत कार्य कीन्हो वृज के धरन को विना
 स करिबो प्रलै कालीन मेघन को वरषा को गु
 मान जैसे दूर होइ ये सो चंद्र के सहस्र नेत्र
 न के आस वरसाइ की मंदिर दहाइ ता बाल
 को बदलो हो कविनि वद्व वक्ता प्रौढोक्ति र
 सिद्ध अन्योन्या लंकार करि आपनो परिदृ
 रों स्वयं अरु वृज को लस धान यह विधि

वस्तु अभि व्यक्त होति है ॥३३॥ कवि निबद्ध
वक्ता प्रोढोक्ति सिद्धि अलंकार अवि को उ
दाहरन ॥ कविता ॥ अमल अमोल मुक्ता
हल को हारतें सौहं सनि अमोल मुक्ता हल
के हारसी ॥ चिंता मनि चारु चीर खुल्यो छी
र फेन सम सरद जुंहे या सुख सुखमा को
सारसी ॥ जगत हमारी पर रीभिंहे हमारी प्य
री राधा रिभा वार सारदा को अवतारसी ॥
धवल पुलि न मध्य जमुना की धार थ
सी दुरद रदन थर पर जनु आरसी ॥३३॥ इ
हां गन पर वृत्त श्री कृष्ण को देखि प्रनय को
प करि अप्रसन्न हृदय श्री राधा को समु
भि श्री कृष्ण उनके मन उदास को स्तुति
कीन्ही सर स्वती अवतार को साम्य दे सा
भि प्राय विशेषन काहे की प्यारी हमारी रा
धा रिभा वारि रीभिंहे सवातें सुनि रीभा
बेकी उन मुख भई सोई उन जूति कही
धवल पुलिन पर यमुना की धार थसी
दुरद रदन थर पर मानो आरसी ॥ यह उदे
ता लंकार कह्यो प्रसाद को और हेतु कह्यो
ताने समाधि सुकर कार्य करनो ना जो वात

यह समाध को लक्षन है ताते ॥ श्री राधा ज प्र
सन्न भई अधर सुधार सुधा प्रसाद दीन्हो
ताते अलंकार व्यंग्य है ॥ यह स्वतः संभवी
के उदाहरन मैं जानिबो ॥ दूसरो कविता ॥ उम
डि थुमडि यन अंबर अडंबर लौकाहं लग प्रले
धन धरा चोर थिरि है ॥ चिंता मनि कोहे चि
त चिंता जिनि वारो कोऊ काहा लों विचा
रो थों विचारो दूद चिरि है ॥ एक की काहा है
कोटि प्यार थर थर रहो जो लों कोटि विधि
की उपज पियारि फिरि है ॥ जानो जानि वडे
परमान भारी गिरि है सो मेरे कर पर परमान है
न गिरि है ॥३४॥ इहां परत द्रव्य परमान
कारि दिखायो यह विरोधा लंकार करि नंद
पुत्र जे आपु तिन काहा अथ दन थटना प
टी यत्न साधारन धर्म कारि आपनो गरो
क्त नारायण साम्य व्यक्ति कारत भये हैं ॥ दो
अर्थ शांति उदभव अर्थ वारह भेद विवा
द ॥ सो यह काका पुंथ रात छंते समंति
निहारि ॥३५॥ सिद्ध कहत सब सकल पा
रत तुरंत ज्योना ॥ आपका अरु गुन जू
जस धवल विषो श्री कृष्ण ॥३६॥ इहां व्या

क निर्गुन आत्म स्वरूप से व्यापक अद्वय
जसुकीन्ही निर्गुनते सर्गन कीन्ही यह वि
रोध करिये सो कार्य करिबो सामर्थ्य रामही
मे है और मे नाही ताते रामसे राम यह क
वि निबंध वक्ता प्रोदोक्ति सिद्ध अलंकार
रि अलंकार व्यंग्य है ॥ पद गत संभवी वस्तु
करि वस्तु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लोग ज
गत है वाज पर धरत नाम को नेम ॥ त
व करि हरि साहजिक दीन बंधु से प्रेम
॥ ३७ ॥ साहजिक दीन बंधु पद को अर्थ विना
प्रयोजन दीन बंधु हैं यह स्वतः संभवी व
स्तु करि परमेश्वर परम दयालु हैं स्वतः संभवी
वस्तु द्योतित होत है ॥ प्रबंध सक्ति उद भव
को उदाहरन ॥ सवैया ॥ व्याकुल दौरि के
दोऊ जने उठलै उत आइन जानकी देखी
दिव्य अमोलक लाल गँयो गिरि आश्रम
भूमि अग्र ठिके लेखी ॥ दुख पयोधि अ
गाध बह्यो गति दीन कछूरघुनाथ की प
खी ॥ मानो अरन्य भई अमरावति सेसी
अरन्य की भांति विशेषी ॥ ३८ ॥ ॥ राम
काह्यो सुन मीत कदंब जू तैरे तैरे संग मेरे

है वली ॥ तैले फूल रची जिन मान गले मान मे
रिये कंठ मे मेली ॥ माल देहें भुभुं पुलकी जिन की
यह हास विलास की केली ॥ मोहि बताइ अ
केली किंते वह पूरन दंदु मुखी अलवेली
॥ ३९ ॥ सवैया ॥ बेल से चाह उरो जनवेली केल
खी कह जाकी लगे रति चेटी ॥ मीत असोक
विलो की कहं जिन है जग रूप की रासि सम
टी ॥ पीत दुकूल लसे पट भूषन श्री मिथिल
महि पाल की बेटी ॥ सुंदर रूप धरे जनु दामि
नि राजत दामिनि दाम लपेटी ॥ ४० ॥ तें मृग
देखी कहं मृग लोचनी बोलि किंते अव जा
इ छपी है ॥ छाडि छवीली धने परि हासन
छाती विछोह के ताप तपी है ॥ तें नहि जान
त तेरे छुटे पलु तेरी जीव नमोह तपी है ॥ दो
लिते हरि को याको गुमान जो को किल कुंजन
में जल पी है ॥ ४१ ॥ से से सवै वन के दूम जं
गुन प्रहृत जानकी जी को पुकारे ॥ व्याकु
ल है मुरभाइ गिरे उछलै मनि नैन न नीर
की धारे ॥ दुख सहो दधिकी लहरें जनु मूर
छा आवति जाति अपारे ॥ लहरा के उपचा
र जगे मुख भाई को दीन निहारि सम्हारे ॥ ४२

२०

मेरी भई यह भांति दसा दूत रैन छपी जो
जो नहि आई ॥ राम जू से से कह्यो कवल
न सीता जू से सी करी निठुराई ॥ वाचन वीच
मृगीसी भई सु कहा मृग लोचनी आपदा
पाई ॥ मैं जिनको अपराध कियो तिनका
कस हृदन धेरि कै खाई ॥ ४३ ॥ इहां दूसरे क
विजते अंत को कविता छोड़ो प्रबंध को उ
न माद व्यंग्य है ॥ उभय समुद्र को उदाहर
न ॥ दोहा ॥ लसे हार के मध्य सरित सो मो
रे विसाल ॥ हिये गारिवो योग्य है बहु मनि
नायक लाल ॥ ४४ ॥ इहां वाच्य अर्थ व्यंग्य
अर्थ के उपमानों पर मेय ॥ भावते उपमा
लंकार व्यंग्य है सलक्ष्य भेद्यों कहे एक चा
लीस ॥ दोहा ॥ असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि
आनिरसा दिका चित्त ॥ दूतै आदि पहलम्य
जे तिन्है गनावत मित्त ॥ ४५ ॥ प्रथम हिरस पु
नि भाव गनि तिनको पुनि आभास ॥ भावसं
ति अन भाव को उदै बखानि प्रकास ॥ ४६ ॥ भा
वसंधि पुनि सवलता भावन की भन आनि ॥
असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनको भेद बख
नि ॥ ४७ ॥ अर्थी तर रस स्वर रस निरूपण ॥

गनि विभाव अनु भाव अरु संचारी नमिला
दु ॥ जित थार्द है भाव जो सौरस राघ गनाइ
४८ ॥ कछुक यथा क्रम अधिक यह तीन
हु को क्रम कोइ ॥ व्यंजन कोन लख्यो परे
तो अलक्ष क्रम होइ ॥ ४९ ॥ भाव लक्षन ॥
दोहा ॥ मन विकार कहि भावसंज्ञा वार
नारुपा ॥ विविध संथ वारता कायत साविता
प अनूप ॥ ५० ॥ जो नहि जाति विजाति सं
होइ निरस कृत रूप ॥ जव लखे रस तव ल
जा सुथिर थार्द भाव अनूप ॥ ५१ ॥ कालं
दित रामादि सुख दुखा थन शब्द जात ॥ अन
विकार संचारितति यह थार्द विर भास ॥
पावे ल्यावे आपने रूपहि आन ॥ अने दोहा
विरुद्ध भाव ननि रहि विद्वेषक भेद ॥
५२ ॥ सो थार्द है समुद्र सो जव लखे रस अ
खाद ॥ तव लागि यह वह रहत है जो थार्द अ
वि वाद ॥ ५३ ॥ प्रथम भादि रति अरु हास पु
नि बहु र सोक गन जोथ ॥ पुनि उत्त राह
ह गुण पुनि विस्मय सम बर बोध ॥ ५४ ॥
यह थार्द नव भेद जो ताको जुंहे निदान ॥
कारज सहकारी जगत कवि तां मे कहि आन

५७॥मनि विभाव अनुभाव पुनि संचारीय
ह नाम॥विभाव नादि अवलोकिके व्यापा
रन अभिराम॥५८॥निन नितुके अवलो
किके करि व्यापार बनाइ॥विभावता अनु
भावना संचार ना बनाइ॥५९॥सर्वज्ञान सा
धारन त्रिविध व्यापारन को तीन॥सहृद
य द्विध विर भावको व्यंजन व्यंग्य मर्तीना
इ॥साधारन व्यापार वल सब साधारन है
इ॥नियत प्रसारहि मै दक्षिणतः अपर नि
त होइ॥६०॥महा नंद उल्लास वह मुहूर्त
सबल कोइ॥सज्जन सखदजु मंथनै बरु
नि रूपना सोइ॥६१॥रत्या दिव्य कोइ तु जे
ज ओर सह चारि॥जगमै तेई तफत में आ
न नाम निर आदि॥६२॥विभाव नादि को
लोकिक व्यापार निरुमिना ते विभाव अनुभाव
संचारी धरि चित्त॥६३॥साधारन व्यापार
सों जग साधारन जानि॥ते विभाव अनुभा
व अह पुनि संचारि वरवानि॥६४॥पाई सा
मायह कहिय वसत वासना रूप॥व्यक्त वि
भवादि कनि मिलि रसहै लसत अनूप॥६५॥
प्रथम कहत शृंगार के विभाव नादि दूत आ

नि॥अपारे सिंगरे सबन के कहिहों सिंगरे जा
नि॥६६॥आइ हेतु जग मध्य जो कादित म
अ सुदि साव॥आलखन रुहीप नो द्विध
थ प्रसिद्ध गनाव॥६७॥नायका ल॥दोहा
आलखन शृंगार को लिय नायका वरधाति
कालानि प्रदीप बिला सिनी सुंदरता की खा
नि॥६८॥कादित॥बहव मै विधि कांति दो
रीको मजानी जाति सोरे गात वेरी नारी के
सुरि के रंगवी॥चिंतामनि कोहे चारु चंद्रिका
सी हासो खेले मिसि भावता बली मुवात फा
ति संग की॥जाने ओर सुंदलाल दिव पर वि
ल सतु अंधर की आभा मुवाता हल के सं
गती॥यग परको सरंग अंगन अनूपयोय
अंगन मै टाही सानो अंगना अनंग की॥७०
दोहा॥दिव्य अदिव्य कोहे सुकावि दिव्या दि
व्य विचारि॥विधेय नायका जगत मै मं
थन वह निहाये॥७१॥दिव्य देव नित्य वाने
ये नारि अदिव्य वरधानि॥अमर नारि सुव
अव तरी दिव्या दिव्य सुजानि॥७२॥नखते
दिव्य तिथा वरन सिखते विबुध अदिव्य॥
नखते सिखते वानिये जोलिय दिव्या दिव्य॥७३॥

इहांनख सिख वर्ननं जानवी ॥ दोहा ॥ प्रथम २
सुकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि
सामान्या समुभिंये यों कवि लसत बखानि ॥
७४ ॥ स्वकीया लहन ॥ दोहा ॥ जो अनेही पुर
षमें प्रीत वंत निर धारि ॥ कहत स्वकीया ना
यका सज्जन सुकवि विचारि ॥ ७५ ॥ सील सु
थार्द लाज जुत गुरजन सुकवि विचारि ॥ प्री
तम के चित हनि सो कही स्वकीया नारि ॥ ७६
कवि ॥ चिंता मनि सखी कोऊ सीख देति
कहै जय सतता के जानि हो ॥ प्रीतम सो जायसों
जीवको बारने बाहि वरज्यो चहै तत्ताइ कहि
पेन सखी कछु सह चरी लिया सों ॥ गुरजन २
संमत सकल आचरन बाको वरनत होत २
नाह चाहिय सों ॥ पीउ जानै गुरजन हूमें नवा
ल जानै गुरजन जानै कहा बोलि जानै पिय-
सों ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ मुग्धा मथ्या प्रगलभ
तीन भेद निर धारि ॥ सुभग स्वकीया नारिके
तत कवि संघ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जीवन अं-
कु रिन सो सुग्धा वर नारि ॥ दुहु वहि कस सं-
धिमें तव बय संधिनिहारि ॥ ७८ ॥ उवन चह
त जीवन सखी सुंदरि काला निकेत ॥ मंद मधु

र मुसकनि मुख कियो जुहेया खेत ॥ ७९ ॥ +
कवि ॥ राधाजूके संग संग रुचि त्यों रुचि
र वासु गुलावलके रंग रुचि सौर भाजि सों
भिरि ॥ चितहि चुगवति सुको किल कीक
नी लखी वानन चितौनि प्रेम मदकी मनो
भिरि ॥ चिंता मनि सोही है रसाल सोरेकुं
जनि से अलिन के पुंजन सुमानो मुनि आ
धिरि ॥ दातन के दीच तरुनाई आदि सिस्ति
रमें नाथ सुदी पंचमी में ज्यो वसंत कीति
॥ ८० ॥ दोहा ॥ मुग्धा अवि दित जो वना
अविदित कामा पोरि ॥ विदित मनो भव जो वना
बहु भिन बाढ़ा लेखि ॥ ८१ ॥ पुनि विप्र ध्वल
गंद गांन कोमल कोषा जानि ॥ चिंता मनि
कवि कहत हैं बट विधि मुग्धा मानि ॥ ८२ ॥
अवि दित जो वना ॥ संवेया ॥ वांकी भई
भकुटी विन कारन लोचन कानन आनि
रहैं ॥ छाती कछु उचकी विन ठौर वंकी
चितवै नूक भाउ लहैं ॥ पाइ उठाइ धरे
गारय मनि वैन सकोच न जात कोहैं ॥
मानहि मोन विचारि कोरे मरे अर्गनि को
न सुगल गंहेहैं ॥ ८३ ॥ अविदित कामा ॥ को

किल कूक सजे उसरी लजि और सुभाउ भू
 यो अवहीको ॥ फली लता दम कुंज सुहाउ
 लगे अलि गुंजत आवन जीको ॥ काबल को
 न भयो जजनी यहु खल लो गदियान
 को फीको ॥ कहिते सावरो अंग लखी लोख
 गेदिन देवाते नैना नि नीको ॥ ६५ ॥ विदित जे
 वना काहू को पूख सुख लता सते वेलि
 अपूरव सखल ही है ॥ सोन सो जावो सख
 प सवे कर पल्लव कांति वाह उमही है
 फूल हंसी पालन धुच जाहि के हाथ लो
 सुकृती सो सही है ॥ अली किंदो सुनि
 वतियां मुस कादु तिया मुख नाद रही है
 ६५ ॥ विदित वामा कविता ॥ काम काला
 की चोप चढी चित जंग ॥ अनुपम दोष
 है ॥ केसरि सो थो सुहान लंगो मनि
 दन वेलि वनाइ दई है ॥ भौह उचाइन ना
 इक नैन कहू मुरि को मुस कथानि लई है
 ओहन रें ठि लगी अठिलानि सोवे सर नी
 की ठोनि नई है ॥ ६६ ॥ वेसरि बारहि दार
 उतारत केसरि अंग लगानि लागी ॥ अ
 है नैननि चंचलता दम अंचल वाम छपा

वन लागी ॥ दूख के अंग लोख को दाअ
 दानि भारे खनि नदानी लागी ॥ दोस देली
 नद ते नतियां वन आव मेरी नव भावन
 लागी ॥ ६७ ॥ नजोह लंगो ॥ दहा ॥ नोल
 जा भय नम धौन नि रोखे वाता सोद ॥ स
 तिसे पतिहि पन्याइ वा सुख लखन वेता
 होव ॥ ६८ ॥ माल वरु नि सख लखना अ
 ति अधिकार ॥ अने सख लखना लोख नि
 व जव कहू चरित कथा ॥ ६९ ॥ संतिया ॥
 राखने जो नाइ लखने नैन सखन कलापि
 यसा मिलि आखे ॥ वही भन भिनिन कादि
 भजे पकोर केरी ॥ वन लखने नारे ॥ वन
 न बोहा यधुसुस की वेकी सो आवने लखने
 अभिलखे ॥ एक छिनी बारि को थिर ज्यों
 जल विंदु पुरेनि के पाल में राखे ॥ ७० ॥ दा
 लके मिलन आस बार चिर साल लाल
 लल कत पल सवा धीरज ल रहै ॥ सखी
 सब ल्याई नवला की छल बल लखि हखी
 लो छवीली के सवाल अंग है ॥ वारी जो
 वरी प्यारी सखी सेज उपर सु आशिवन को ऊ
 पर है आस नों दर है ॥ चार कोस मध्यम

करोवनि ?
 दो तीन

नकोडा ॥ ६८

नौल नवल
 नी

कोता ॥

॥ ६९ ॥

६७ नी

थुकर अकुलाने मानों छल की शरीर जन
के ऊपर है लहरे ॥ ८५ ॥ विन अ न बोला ॥
सबैया ॥ लाल की दीठ बन्दा के बाल कि
यो चंहे हरि प्रदीप की बाली ॥ पीके हिये स
ख पुंज बढो सुतौ पूछत ही कछु बात
सुहाती ॥ लागत ही तल में पतिको कर चं
द मुखी चित चौक सकाती ॥ सोई है आ-
ई के पीतम साथ पे सुंदर हाथ छयाइ के
छाती ॥ ८६ ॥ सोई के मेरी प्रतीति लै देखो-
हो भाजिन जांडगी योही बरो जिन ॥ नेकु
दया करी काहे खिभावत रातिकी भाति
सो अंग भरी जिन साथ तिहारे हों पोरि
रहो पर छाती के ऊपर हाथ धरो जिन ॥
जो कछु की वसो बालि परी पिय दाय प
रो कछु आज करी जिन ॥ ८७ ॥ कोमल को
पा ॥ सबैया ॥ और तिया की छुट्टि छतिया
पिय नोल बधू सो कहं लखि पार्द ॥ भां-
कि भरोखे ह्वे अचल बोट हंग चल ताकि
के भौंह चढाई ॥ अंदर दोन छपाई के अं
गन पोरि रही पलका रिसदाई ॥ मेरी लया
रो है प्रानहते मुंह चूवि लडाइयो कां लला ॥

८५ ॥ मध्या लहने ॥ दोहा ॥ जातिय के हिय
होतुं है लाज मनोज समान ॥ ताको मध्या क
हत हैं सिंगर सुकावि सुजान ॥ ८५ ॥ सबैया ॥
पेलो चंहे पिय की विन बोद वनेन कछु वि
न घुघट खोलै ॥ भावेन संग छुटो पतिको
सकु चैन कोरे कछु काम बालोलै ॥ चाहति
वात बाहोन कहो पर जातरहोन रहे अन
बोलै ॥ भूलतु है मन प्रान पियारी को लाज स
नोज के बीच हिडोलै ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ कहि आ
रुहो जोवना आरुदे मदना जानि ॥ पुनि विचि
त्र सुरता कछु प्रगलभा वचना मानि ॥ ८७ ॥
अरुद जोवना मद उदा हरन ॥ सबैया ॥ मन
नेन विमाल रसाल चितोन पैलाज सुभाव
लए अपनो ॥ कचलावेलचे कच भार सों लं
क सैंव तन कंचन रंगानो ॥ पगपेंजन ओ वि
छिया भल के कल किंकिनि नेवना दयनो
यह पूरन जोवन चंद मुखी चली आवति मं
द गयंद मनो ॥ ८८ ॥ अरुद मदना मध्या ॥
काबिज ॥ अवलोकिनि में पलकों लगे पल-
कों अवलोकि विना ललकों ॥ पतिको परिपू
न प्रेम पगी मनि और सुभाउ लगेन लदे ॥ ति

यकी विहसो ही विलोकनि में मनि आनंद आव
 नियों भल के ॥ रसवंत कवि जन को रसु ज्यों का
 ख रान के ऊपर है छल के ॥ १०६ ॥ कावत ॥
 चेतकी चांदनी के रों चंद अवलोकन ते रस-
 नीध छीर के पूरन पूर उमंगे ॥ चिंता सनि
 कहें मन आनंद मगज है के विहरति दंपती ॥
 रस प्रेम सो पगे ॥ अधखुली करिद को सुखति
 सुरख रसवस मानो भोर अधखुले कामला-
 नि में खगे ॥ प्यारी के सकल तन यम जल
 बिंद सोहे कानक लता में मुकता फल मरी ॥
 लगे ॥ १०७ ॥ प्रगल भा जोवना मध्या ॥ संवेया ॥
 रंहे प्रवीत महा सिगरी परि हास के लहलह
 हागुने सी ॥ मोसों सदा रिह बोलन को चतराई
 के वैन विचारि चुनेगी ॥ नेक रहै सति बोलो
 आवै जानि पादुन पैजनि भान उनेगी ॥ जानती
 हैं सगरी सखियां मेरे नेवर की भाज कार सुने-
 गो ॥ प्रौढ़ा को ल ॥ दोहा ॥ कोलिकाला में चतुर
 अति प्रीतम सों अति प्रीति ॥ लाजत जेहें मद-
 न वस प्रौढ़ा की यह रति ॥ * ॥ प्रौढ़ा भेद ॥
 दोहा ॥ प्रौढ़ा जोवन प्रगल भा मदन मत्त पुनि
 जानि ॥ केहि पति प्रीति मती सुरति मोद परखस

मानि ॥ १०८ ॥ प्रौढ़ जोवना प्रगल भा ॥ संवेया ॥
 कोटि विलास कटाह जालाल बढ़ावे हुलास
 न प्रीतम ही नर ॥ यों मनि यामे अनूप मरूप
 जो मेनका मेन वधू काहि ईतर ॥ सुंदरि सारी
 सुपेद में साहत यों छति ऊंचे उरो जन कीतर ॥
 जोवन मत्त गयंद के कंभल से जनु रंग तरंगनि
 भीतर ॥ १०९ ॥ आगिनि छेड़ि देके शिसि आनि
 अचानक पीठ उरो ज लगाने ॥ केह कहूं मुस
 कादु चिते अगारत अनूप जंग दिखाने ॥
 नाह छुड़ छल से कतिया होम भौह चढ़ाद
 अनंद बढ़ावे ॥ जोवन के मद मत्त तिया हित-
 सों पति को नित दिन चुरावे ॥ ११० ॥ रति प्री-
 ति मती को उदाहरन ॥ संवेया ॥ लीन सी है त-
 न प्रीतम के सभरे अति आनन सों जिय को ॥
 मनि आपुहि ते मुख चुंबन के सहरे मन मोह
 न के हिय को ॥ छन मान बितावति है छन दे
 सुछना छन दे सुख यों पिय को ॥ रति कोल वि-
 लासिनि छेड़ि के और न भावे काछू तरुनी ति-
 यको ॥ १११ ॥ रत्ना नंद परवसा ॥ संवेया ॥ प्रीतम
 को रति रंग समै सुमनों रस को वरसा उनई है ॥
 ऐसे भुजा भरि भौंटे रही जनु दे तन की करि ए-

कलई है ॥ सुंदर मोहन के मुखों मुख लाइ अ-
नंद में लीन भई है ॥ ऊंचे उरोज लगाइ हिये जनु
अंगन बीच विलाइ गइ है ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ मध्या
प्रोढ़ा मान में कवि मनि त्रिविध वरवानि ॥ थी
रा और अधीर तिय धारी थीरा मानि ॥ १०८ ॥ व्य-
प कोष प्रगटे जु तिय मध्या थीरा होइ ॥ को-
प वचन बोलत प्रगट मध्य अधीरा होइ ॥
१०९ ॥ मध्या थीरा ॥ संवेया ॥ सांभते चंद्र का-
लंक उचो मन मेरो लै साथ रहे तुम न्यारि ॥ वैदि
वची मनि मंदिर वीच खेग ॥ सब दीप प्रकास
अध्यारि ॥ प्रातहि पाइ सुधा मय पार ना नैन
चको रन मोहन प्यारि ॥ कैंपान अनूप कला प्रग-
टो अकलंक कलानिधि मोहन प्यारि ॥ ११० ॥ म-
ध्या थीरा ॥ कविन ॥ कहां जागे रैन आस निपट
उनी देहो ॥ जू सोदूर हो प्यारि विधो आँखो पर
जंको है ॥ खिलत हैं चांदनी में ग्वालन के संग काहु
ग्वालन को नाम लीजो कहा कछु संको है ॥ योही भले
मान सैल गावती कलंक हो कैं देख्यो कहं चिंताम
निरतिहू के अंको हैं ॥ पीतरंग अंबर सुनील रंग भयो
लाल भूठी हो गुपाल तुम्हें काहे को कलंक हो ॥ १११ ॥
दोहा ॥ वचन रुदित के संग काहि कोप प्रकासै नारि

मध्या थीर अधीर तिय कवि न कल विचारि
११२ ॥ उदाहरन ॥ संवेया ॥ राति नंदे मनि लाल कहं
रमि इहां दुखदाल विधोगले हैं ॥ आस थोर अरु नो
द्वय होत सरोस तिया दूग दूग बांहे हैं ॥ लाल
भये दग को रनि आनि को को अंशु बान के वृ
हरहे हैं ॥ चोचन चोप मने लीपिले विचख
जन हाडिम बीज गहे हैं ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ प्रोढ़ा
थीरा नेकु नहि कोपे कैं प्रकास ॥ पति को
अति आदर को रनि ते रने उदास ॥ ११४ ॥ सा-
वहि त्या को उदाहरन ॥ संवेया ॥ बोलति काहे
न बोल मुने मधुरी बलिया मन मोहन भारे
बोले काहा कछु चित्त में है दुख पित वड़े कदु
लागती दारें ॥ पाले हैं लाल बिलो के नवाल
क्यों तेरी बिलो कनि को आभिलारें ॥ लाल भ-
ई विन काजहि आजु संहरी कहा मेरी दूख
ती आरें ॥ ११५ ॥ सादर थीरा ॥ संवेया ॥ आजु
क्यों पलकाते थोरो पुहरी पर साथे हमारे न
पाइ थोरो ॥ काहु बोलो सखीन सों संभ्रम सों हं
सि बोलि हमारे न ताव हरो ॥ कित जान हो पान
न आन को मान लो आन मुजा भदि अंक भरो
दुख देत सभे दित बाहर रें दह आदर आप

नौ दूर को ॥ ११६ ॥ रतु दास थीरा ॥ संवेया ॥
 वेलौगी वेनतो बानन चैनन वेलौगी वेन अ-
 नंद भईहौ अंचल सों मुख मंदि रहों तब ध-
 नमै जो धरि चित्त लईहौ ॥ वैठति काहे न
 हो दिग सुंदरि मोको दई सुख रास दईहौ ॥
 मोहि गनौ निजु दास मनो तुमको विन काज
 उदास भईहौ ॥ ११७ ॥ जावक रंजित भाल
 किये मन भावन भावती गेह सिधार ॥ दूरि
 भौह कामान चढ़ाई के सुंदर नैन काटाह तेहा
 रे ॥ आइ के बालम वांह गही दिग चंद्र मुखी
 भुकि के भाभ कारे ॥ चंपक मालसी को म-
 ल बाल सुलाल च मैली की माल सों मारे
 ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ पौढ़ा थीरा थीर तिय बोलै थी-
 र अथीर ॥ चिंता मनि कवि कहत है समु भा-
 त बुद्धि गंभीर ॥ ११९ ॥ कविता ॥ मेरी कहा च-
 लीहौ न आपनी कहति बात वही भली करौ कथ-
 काहू सों निवाहिजो ॥ मोहि अजिगरा जाइ वामों
 सुकरम कियो यह कौन धर्म तजत अवाहिजो ॥
 चिंता मनि कहै कौन वाकी सुधिलेत जाइ जाकी
 मन के व्याकुल करिताहिजो ॥ जांपै रति मनि
 प्यारे अपार हो हमारे घर एकौ धरी करौ वाकी

अथ ॥ ११६ ॥

जावक
आपनी

प्रीति को मुलाहिजो ॥ १२० ॥ दोहा ॥ जहां होति
 होति वा नहीं रीति यह जानि ॥ पुरुष अ-
 धिक चट प्यार ते जेय कनिष्ठा जानि ॥ १२१ ॥
 कविता ॥ ॥ गवा पलका पे वैठी सुंदरि मलेनि
 होइ चाहि को दुखी लौ लाल आये रतिकेलि
 अर ॥ चिंता मनि कहै दिग बढो आनि पीतम
 पे काहू सों कसने कहि सकत दुह के डर ॥
 मुद के मजा दुख को रुका को दिखायो नाह
 विपरीति रतिको सुख लखि चित्र पर ॥ जो
 तों सकाचन वद ओखें मंदि रही तौलों पान
 प्यारे प्यारी के कुचन पर रख्यो कर ॥ १२२ ॥ प-
 र कीया को लहरा ॥ दोहा ॥ प्रीति को पर पुरु-
 ष सों पर कीया सो नारि ॥ उंहु और अनुर-
 गति सोंहो भांति विचारि ॥ १२३ ॥ ऊहा होइ वि-
 वाहिता अविवाहिता अनुर ॥ पर कीया दो-
 ति की जानत जगत अनुर ॥ १२४ ॥ ऊहा को उ-
 दाहरन ॥ संवेया ॥ अति सासु भोके ननदी स-
 त रात लखे कुल कानकी दानपरी ॥ घर बाहि-
 र सों बलि वैर बढो सु अजो तुमको नहि जा-
 नपरी ॥ मनि भांभ गली तुम वांह गही सु-
 तो कौन अहो यह दान परी ॥ वह बात कही

३८

हुती कानन में सुनी कानन कानन आनपरी
 १२५॥ दोहा ॥ सुरत गोपना चतुर कहि कुल-
 टा बहुरि बखाना ॥ कहत ललितता सुकाविजन
 अनुसेना उर आन ॥ १२६॥ सुरत गोपना को
 उदाहरन ॥ कविज ॥ गीखम में वापी कूप स-
 रवर सरवे सब जल नदी भिन्न नाते आवत
 नगर में ॥ तहां जात आवत लगत कांटे भर
 न के होन जैहों हों ही पानी पीवति हों घर में
 अति दूर हीते भारी गागारि लिआ एकै सो
 छूट पसीना अंग कां पे थर थर में ॥ कहति
 हों पुनि सासु ननद भुकेन मोपे जाऊंगी
 तो आऊं में भर दुपहर में ॥ १२७॥ दोहा ॥ वर-
 नत सुकाविजु नायका द्विविध चतुर सिरमौ-
 रा वचन चतुर कहि एक पुनि क्रिया चतुर
 पुनि और ॥ १२८॥ वचन चतुर को उदाहरन ॥
 कविज ॥ एहो तुम कोहो नेकु धरे क्यों न रहौ दे-
 खो चिंता मनि वागन में कोपै लहलही है ॥ तु-
 मको थरम ह्वै है देव अरचन काज सुंदर चमे-
 ली की कली कछूक चही है ॥ वाग में अध्या-
 री डस लागतु है जात उत ताते हों कहति इहां
 जो लोग और नहीं है ॥ कैसे करि जाउं फूल ले

नहों अकेली इहां तो आछि आछि फूलन की
 वेली फूल रही हैं ॥ १२९॥ क्रिया चतुर को उ-
 दाहरन ॥ संवेया ॥ कैसे देव बधू नसे कोऊ
 होइ तो ताको बरावरि वाछे ॥ सो कहति है जखते
 सिरखलों मनि अंग अनूप सिंहासन को ॥
 रील बहादुर जनादु विने चहै मानु ओनंद
 जिठानी के पाछे ॥ नेन को सेना में सोहन की
 मुरावे मुसबयादु विलो कांति आछि ॥
 १३०॥ दोहा ॥ जहां प्रीति पर पुरुष की आ-
 दित जग में होइ ॥ ताहि ललित कहत है
 चिंता मनि कवि लोइ ॥ १३१॥ संवेया ॥ सोन-
 की लाज से काज कहा मन मोहन ते कल-
 कानि दुगी हैं ॥ दोलें कहा हम बावरी हैं वह
 सावरी सरति देखि ठगी हैं ॥ जानति नंद कि-
 ठानी ओ सासु चहूं दिसि मेरे दवरें जगी हैं
 जाने सो कोऊ हजार कहो हम नंद कुमार
 के प्रेम पगी हैं ॥ १३२॥ दोहा ॥ बहु पुरखान
 की केलि को जाके मन अभिलाख ॥ कुलटा
 तासे कहत हैं सब सज्जन कविलाख ॥ १३३॥
 संवेया ॥ छेलनि गेल में आवत देखि के भां
 कि भारोखनि रीभि रिभावे ॥ चंचल अंचल

डारे रहे अगाराद अनूपम रूप दिखावै ॥ ला-
दू की गति नैनन की निरखे निरखे विन
चैनन पावे ॥ जोवन के मद मत्त तिया तजि
काम की केलि सु ओरन भावे ॥ १३४ ॥ अ-
नु सेना ॥ दोहा ॥ संकेत स्थल के नमत भावि
स्थान अभाव ॥ मीत गयो हों ना गर्द जो पोछ
पछिताव ॥ १३५ ॥ हेतु अनु सेना त्रिविध
विधि वरनत सब क वि राट ॥ क्रमते देत उ-
दाहरन सब सज्जनन सुनाइ ॥ १३६ ॥ प्रथम
कावित ॥ गेहै सजीव को उ कछे गोद न केहे
त अधर मलेत कौन ठाट स ठाटत हैं ॥ सिंगरे
काम हई है इनके कहा सुभाइ ओरन के तौ हाइ
हाइ हियरा फाटत हैं ॥ चिंतामनि सज्जन दुहां है
तिन्हें पूछे दरबो आगे न्याउ बहे है वैतौ इनको डाट-
त हैं ॥ देखे इहि देस आलीखे निरदई लोग हरे
हरे रुख अहर के काटत हैं ॥ १३७ ॥ दूसरी सवेय
आली अगरी चौवारे त्यों मंदिर वैट्कासन सुहावन
जीके ॥ खेलन को तुमको थन ठौर है जैसे उ-
तै सुख पावे गी नीके ॥ हैमनि सुंदर लोग उ-
जागर नागर नेह पगे परतीके ॥ ज्यों दुहां
त्यों ससुरारि तिहारी में वाग बडे दिग हैं ॥

खिरकी के ॥ १३८ ॥ तीसरी ॥ सवेया ॥ अपने भी
त परोसी सों सुंदरि सने चौवारे सहेत वखा-
नी ॥ दू उन बोलि कपोत की वान अगार
आनि दूसारत ठानी ॥ जागत है भरता यह जा-
नि मनोज के वान लगे यह शनी ॥ आइ ग-
यो तने से परसे दपरी पति संगरवरी अकु-
लानी ॥ १३९ ॥ मुदिता ॥ सवेया ॥ द्वे दिन यों
पय तीरथ न्हा न को लोग चलेयो सिनि के
सिग रोई ॥ सासु वह सों कह्यो यों रहे यह
ओर रहे नहि राखिय कोई ॥ सुंदरि अनंद
सों उमगी यह चाहनि ही जु भयो अव रोई ॥ १४० ॥
सों पूरन दोऊ जने धर आपु रही को वही
नन रोई ॥ १४१ ॥ दोहा ॥ परकीया काटि काटि
ता सुतो अनूटा नारि ॥ सब संजन को नै सों
कवि मन कहत विचारि ॥ १४२ ॥ सवेया ॥
जामे कछू मनि सोचु स कोचन आश्रये
सो तो कछू लरकाई ॥ आवत हीं इन नैन के
रस मोहन के बसिको लल चार्ई ॥ देखे वि-
ना कल नेकु नहीं अरु देखे तो गोकुल गांव
च वार्ई ॥ जामे हंसे हू कलंक लगे यह कौन
धों वैस विस्वा सिनि आई ॥ १४३ ॥ दोहा ॥

प्रेम

अनिन दिग

कहि स्वाधीन प्रिया बहुरि वासक सज्जाजा
 नि॥ बहुरि विरह उन्नकांठिता विपुलब्ध पु
 निमानि॥ १४४॥ पुनि रंजिता वरवानि ये
 कलहं तरिता नाम॥ पुनि कहि प्रेषित
 भर्तृका अभिसारिका सुवाम॥ १४५॥ सोस
 व भेद तिहून के भेदन हू के होत॥ जे जैसे
 संभवत ते तेसे लहत उहोत॥ १४६॥ सो स्वाधी
 न प्रिया कही जाके नाह अधीन॥ सुतो सदा
 आनंद मय वरनत सुकावि प्रवीन॥ १४७॥
 मुग्धा स्वाधीन पतिका उदा हरन॥ संवेया॥
 जो सो छवि मोहि दिखाइ भारोखे के सोध
 वि पाइ कही सुर अंगनि॥ चलि नोलवध
 मनि नैन चकोर से ज्याये कहा है सुधारस
 सींचनि॥ अंबर लाल मै यों मुख ज्यों प्रतिवि
 वत चंद्र हारस्वति बीचनि॥ मानो उदै गिरिकं
 दग अंबर इंद्रज्यो कुर विंद मरीचनि॥ *
 १४८॥ मुग्धा स्वाधीन पतिका॥ संवेया॥ पु
 ल्यो कलौ मृदुवाग वन्यो मनि मंदिर की ग
 ति त्यों चरकीली॥ प्यारे यों प्रेम की खानि ख
 ली अखियां विलसें मुसकयानि रसीली॥ कं
 चन के रंग अंगलसें पिय ते रेही रंग रगी

हैं रगीली॥ मे रेही संग विहा करि दे अव
 लाज सों काजु कछून छवीली॥ १४९॥ २
 पौढ़ स्वाधीन पतिका॥ संवेया॥ आपुही पा
 इन देत महा उर वेनी सुहे अरु वेनी डुलावे
 आपुही वीरी बनाइ खवावे अनेक दिला
 सनि रीभा रिभावे॥ तेरी सखी सनि आपने
 मित्र सों ते रेही प्रेम की बातें चलावे॥ तोते
 विलोकैं को रह नागनि को विष को पिड
 को बस पावे॥ १५०॥ हरि न वेनी रास मान
 धनो सनि जासुव मान को लोह भयो है॥
 सांवरो सुंदर जो सगरी हज्ज नारिन को वि
 त चोरिलो है॥ आपने आप जटामे भर
 घन चोरि चहान की सोर भयो है॥ नंद कि
 सोर भारो खेकी चोर सुतो चारु चंद चकोर
 भयो है॥ सामान्य स्वाधीन पतिका॥ होहा॥
 या पर नेह निपाइ न है यह निपट सकार
 लन चन नान सब लोह है सुही करी सब काम
 १५२॥ पिय की जाग जागि को अंग विंग
 रे वाम॥ सोध केज सुंदरि रचे वासक सज्जा
 नाम॥ १५३॥ मुग्धा वासक सज्जा॥ संवेया॥
 मंदिर सुंदर पुन सदा मय जो नु की जोति

जहां अधिकानी ॥ यारी सिंगारी प्रवीन स
रवी मनि मोतिन की सुखमा सर सानी ॥ से
जरची पय फोन सीया पिय आगम वेरी
जंदे निय रानी ॥ हेरी अली सों चली हंसि
नोल बधू मुखकी लन वादूल जानी ॥ १५४ ॥
मध्यावाः ॥ सवेया ॥ मंदिर थूप करे से से म
दिर दंदिरा देवी प्रसन्न निहारति ॥ सेज सं
वारे दुकांत में आपु सकांतहि आपुन अंग
सिंगारति ॥ फूलानि हार सुगंध रच्यो जन
मेरे से और सरवी की सुधारति ॥ दंडु मुखी
पिय आगम ओसर योंरति कौलि की साज
संवारीत ॥ १५५ ॥ पोटावाः ॥ सवेया ॥ चंदन
लीप्यो मनोहर मोनसों थूप्यो भले अगरो
झव थूपनि ॥ दंडु काला सित सेज रची पिय
आगम सुंदरि सेंदु सरूपनि ॥ अंग सिंगार
धरे गहने जेवने मुकता मनि दंद अन्न पनि
वासने ऐसो रव्यो वह मंदिर मंदिर मा
नी रव्यो रस कूपनि ॥ १५६ ॥ पर कीया वा
सक सजा ॥ सवेया ॥ सेज रची मनि मंजु प्र
सूननि आवत ही सुख पावहै जोपी ॥ देरवत
सो भगवाम वनी जिन काम बधू हकी दीपति

तिलोपी ॥ वाहिर चंदकी चंदिका आनर ल्यों ह
ख चंदकी चंद्रिका वोपी ॥ देखे पहा फूल के पुं
ज कुलाद्र असो कके कुंज विराजत गोपी
॥ १५७ ॥ सामान्या वा ॥ सवेया ॥ सांभ ममै न
खते सिरवलों मनि दंदनि मंजाल अंग हिं
गारे ॥ नेकु चितै मुसक्याद कटाह सुगंधना
रूप गुमान निकारे ॥ कोसकती साको बार
बधू मुकता फल दंदन बार संवारे ॥ सीम
धरे तम तोर तमी पति आनन मानो अमी
के दुलारे ॥ १५८ ॥ दोहा ॥ नायक के आगम
समे सुंदरि अंग सिंगार ॥ दो लावति है आ
भरन पहिरि मुदित वर नार ॥ १५९ ॥ भु
ग्धा विर होल्कांठिता ॥ सवेया ॥ बाल भली
पहिले पति सों उर छट्यो त्यों लाज कट
न घटाई ॥ नेकु उर्दु मील मेम कल्य हुति
दुलह की यह लागी सुहाई ॥ दूसरे दोस
त्रिजाम लो वाहिर वात में बालम बार दिताई
बोलि सकैन सहै लिह सौ चित चंद मुखी
के भई दुचितार्द ॥ १६० ॥ खंडि को उद हसन
सवेया ॥ जामिनि की पहिलो जव जाम वि
तीत भयो पिय गेदन अथो ॥ साजल बोलि

सकै नसरवी नमैं वामको कामहिो अकुला
 यो जो मन बीच विचार करै उनके हन मोहि
 वियोग दिखायो ॥ जानति हौं न कहा गति है
 मेरे प्रानन को पति को विल भायो ॥ १६१ ॥
 प्रोढा विःउ॥ सवैया ॥ आजु विलंब भई
 काहु काज में औरै पै प्यारे को चितन जैह
 को कपटी यहु जाति बड़ी तुम पीउ तुम्ह
 रो प्रभात में रहै ॥ आनंद ब्रह्मै रीको फा
 जन नैन सरोजन सों सुख पैहै ॥ तेरो क
 ह्यो सब ब्रह्मै सरवी यहु पूरन चंद जो जीव
 न दैहै ॥ १६२ ॥ जीवति क्यों अव भारत मा
 र बड़े दुख जा मिनि जा भ विताई ॥ देखे वि
 ना जग सों पल जातु सुजानि के प्यार
 हों त्यों तल फाई ॥ हौं लखि हों मुस कयात
 मनो हर श्री सुख चंद कौनै सुख दाई ॥ अ
 द पर्यौ धौं कहा गुर काज जो बालम आ
 ज विलंब लगाई ॥ १६३ ॥ परकीया विःउ
 सवैया ॥ इंदु उदै पहिले ही संकेत में आ
 गेही दूती यहै रह रायो ॥ नागरि आइनि
 कुंज के भीतर नागर नेकु विलंब लगायो ॥
 तौ लगवाके हजार विचार भस अतिवाही

को मै न जगायो ॥ चंद्रिका लीक चढ़ी नभ में
 प्रभु गोबुल चंद किंते विल भायो ॥ १६४ ॥
 समान्य विःउ॥ सवैया ॥ जाइ रखी चलि
 ल्याइ उदै यह बालवो ताहि उदै तजि दाप
 हि ॥ आगम तेरो सुमेर है मेरो हों चाहति
 एक तिहारे मिला पहि ॥ लाजवो मोहि उ
 ताल मिलाउ कहात रंचे उपचार अमाप
 हि ॥ मोतिन हार मनोहर ह्यो बहु मेदै गो
 मेरे वियोग सता पहि ॥ १६५ ॥ विप्रलः ॥ ल
 दगा ॥ दोहा ॥ जाहि बोलि संकेत पिय जा
 य आन तिय पास ॥ ताहि विप्रलब्धा वधू
 कहि कवि करहि प्रकाम ॥ १६६ ॥ मध्या
 विप्रलब्धा ॥ सवैया ॥ पीतम भीतर जानि स
 रवी निजपेलिके मंदिर केलि पठाई ॥ पीउ
 गयो गह मध्य छपे मग और पै इंदु सुखी
 इत आई ॥ जोवन चंदकी चांदनि में मग पे
 म को चाहि हिये अकुलाई ॥ सेज निहारि
 के सुनी सरूप गुमान के भंगकी भीति दवाई
 ॥ १६७ ॥ मध्या विप्रलब्धा को लदगा
 ॥ सवैया ॥
 इंदु मुखी मनि इंदुकी रैनिकरु गुर सेवनहीं

मे विताई ॥ पादनि देशनि वासीहि अपादु सखी
 सुखदै यहु नेह पठाई ॥ सोधके ऊपर खंड ॥
 सिधाइ जहां रति मंदिर सेज सुहाई ॥ नाह
 निहा रौन देखिगरी सुख दायक सेज भ
 र्द दुख हाई ॥ १६८ ॥ पोट विप्र लब्धा ॥ संवे-
 या ॥ कांति कपूरन चंदकि चंदनि पूरन छी
 रथकी छवि छीनी ॥ सलो विलोकि विहार
 को मंदिर क्यों करि जीवैगी प्रेम प्रवीनी ॥ वा
 हि बुलाइ हों औरपे जात सुकैसे वने यह वा
 त प्रवीनी ॥ वंचन मेरे कियो सजनी यह
 रंचन प्यारे दया मन कीनी ॥ १६९ ॥ परकी
 या विप्रलब्धा ॥ संवेया ॥ आदमनोरथ मे च
 द्विके दूत वाके धके सुकुमार थकी है ॥ १
 कीन सके रहि और नि कुंजन खोजन ह
 कौन जाइ सकी है ॥ फूल प्रसूनके खान हजा
 रन मारन कारन मारतकी है ॥ गोन भुलानी
 मृगीसी विलोकि रत्ननि कुंजकी चाहि चकी
 है ॥ १७० ॥ सामान्या विप्रलब्धा ॥ कावित ॥ सं
 दार थनिक नवचोवन निरखि कोउ
 सुंदरी सुगंधले गावन को लगी है ॥ बोली म
 सखाइ नेकु वैठिये हमारे गेह दून कही स

नमुख छवि जगमगी है ॥ चमेलिनकी
 काली रों रचना अनूप रची मंदिर मे चंद
 की उदोत जोति जगी है ॥ यह तो अध फूल
 फूल हंसत हैं याहि जानु जग की ठगनी
 काह भले ठग ठगी है ॥ १७१ ॥ खंडिता लल
 न ॥ दोहा ॥ आन वधू रति चिन्ह धरि आ
 यो जाको पीउ ॥ पात चंदे सो खंडिता यह
 रसिकान को जीव ॥ १७२ ॥ सुधा खंडिता ॥
 संवेया ॥ आन वधू रति चिन्ह धरि रत पात
 हि पीतम आगम कीन्हो ॥ आन के हाथ मे
 आरसीदे मनि नोल वधू भासि नीतर ली
 न्हो ॥ बोली सखी यह रूपकी रस कहें व
 ह वैषा उपद्रव कीन्हो ॥ यादु मने सो पत्था
 नी मृगी को कहा चित्त लाल को काइ न
 कीन्हो ॥ १७३ ॥ उत्तमा ॥ कावित ॥ जोपे प्रान
 प्यारे चितवाहन तिहारे काहो तुमही क्यों
 कहा गति मेरी तो विहारी है ॥ नेह रस भरे
 डीठि राखिये अधीन हों मे स्याम रुचि प
 र जात काम रुचि दारी है ॥ चिंता मनि तों
 लों लह लहे जो लों सींचि यत अनसीची
 कुम्हिलानी मालती निहारी है ॥ ऐसी पा

रुषाई मरजां उगी बारने जाउजी वनि हमारी
 हंसि वोल्नि तिहारी है ॥१७४॥ मध्याखंडि
 ता ॥ कुंकम लेपसों कीन्हो सवै तनु लाल हो
 दीपति पुंज उज्यारे ॥ दुकव हरे हम सींचक
 ईन के फूले एलोचन कोल विचारे ॥ बाहि
 र आइते नारिनि की खुली नीविन वेहो बंधा
 वन वारे ॥ आइ प्रभात दिखाई दई तुमली
 जिय मित्र रा प्रान हमारे ॥१७५॥ पौढाखं
 कविता ॥ आन अंगना के अंग संग चिन्ह
 धरे आयौ पीउ जीउ दूरित जो अराध हो
 यमै ॥ कोप सुंद राई पर बोपसी चढ़ाई भ
 यो मोहन को मनु प्रेम कोरी भितो समै ॥ रै
 नि मग देखि जगी पीतम पे आइ परी नीर
 भरी अरिवयां अरुन अति रोसमै ॥ ऊपर दै
 आई जल लहरि आइ कलमले अरि मानौ
 को कानद को समै ॥१७६॥ पर कीया रंविडता
 दोहा ॥ स सपने को रंक निधि समुभि आ
 ज पछिताहि भली करति इनसों सरवी जो
 त चितवति नाहि ॥ सामान्याखं ॥ दोहा ॥
 आन चिन्ह लखि कंठते लीन्हो हार उतारि
 लाल नैन करि हाथ सों गमन बताये नारि

॥१७८॥ रिसते पिय अपमान कारि पुनि पी
 दे पछिताइ कलहं तरिता कहत हैं ताही
 सों कवि राइ ॥१७९॥ मध्या कलः ॥ सवैया ॥
 लाजन मै पहिचानि कै भै पुनि हों पहिले
 पिय को न पत्यानी ॥ पेच सों आलिन दी
 हो मिलाइ भई मन प्यारे के प्रेम विका
 नी ॥ कालि अकेलिये सेज में सोई वे आये
 न याते वाइ मे सकानी ॥ प्रात पिये है अ
 जी हो वहांत सुराटि गयो उठिही पछितानी
 ॥१८०॥ मध्या कलहं तरिता ॥ सवैया ॥ काल
 र रेख लखी अथरा पर प्यारे के प्रात मै प्रात
 वरलानी ॥ काहु विलोक्यो विभाति बधू कहै
 सो सानि के सजनी मुखयानी ॥ नाथ के हा
 थ दई उन आरसी वैतौ लजाने सुमै यह
 जानो ॥ पीउ गय उठि के जवते तनु तापनि
 ते अति ही अकुलानी ॥१८१॥ पौढाकाः ॥ कविता
 मृग मद चंदन सुरभि अंग आवै कियो प्रा
 न प्यारे तेरे सोन गोन मेरे आगेरी ॥ ताको
 आन बधू अंगाराग परम लजानि त कियो
 कहल सब सहो बड भागेरी ॥ तोहि रूसी
 जानि अगमन उठि गयो पीउ कहा खों कर

तजो आये कहूँ जागेरी ॥ अब वैंत भैंत
नि मानि करि बैठी कात लागी ॥ पछितान
मन भैंत वान लागेरी ॥ १८२ ॥ परकी याक
दोहा ॥ प्रेम कियो कुल कानि तजि पठयो
रिसन रुसाइ ॥ गयो लाल मो हाथते कहा
लेउं पछिताइ ॥ १८३ ॥ समान्या कलहंती
ता ॥ दोहा ॥ भई विपुल धन वंत हों जाके
पाइन सेइ ॥ तामें रिसि अनृताप यह
मोहि महा दुख होइ ॥ १८४ ॥ प्रोषित भर्तृ
का कोलहरा ॥ रंगार मंजरी यथा ॥ प्रोषि
त यह भावर्थ्या निततिहं काल प्रवासाहि
कहत आन ॥ सो जामे सो प्रोषित विचार
यह प्रिया प्रोषित भर्तृका जान ॥ १८५ ॥
* ॥ प्रवस्यत भर्तृका और जानि ॥ प्रव
स्यत प्रिया पुनि और मानि ॥ प्रोषित भर्तृ
का और रुक ॥ योतीनि भांति यावो विवेक
॥ १८६ ॥ बड़े साहिव अपने मंथ माह ॥ निर्नय
कीन्हो कवि बुद्धि नाह ॥ १८७ ॥ दोहा ॥ प्रिया
वासके हेतु कहि ताप धरे यों होइ ॥ कही
सो प्रोषित भर्तृका समुभालेहु सय कोइ
॥ १८८ ॥ याके भेद कहत ॥ दोहा ॥ प्रथम प्रव

स्य प्रिया पुनि प्रवस्यत पति का जानि ॥ पुनि
प्रोषित पति का कहीतीनि भांति यों जानि
॥ १८९ ॥ प्रवस्यत पति का कोलहरा ॥ * ॥
दोहा ॥ प्रिय विदेस को रोजको उद्यम ल
खि दुख पाइ ॥ होति प्रवस्यत प्रिया लिय
याकुल चित वनाइ ॥ १९० ॥ सु प्र उदा ॥
सदैया ॥ जानि अजो दुल हीन कहूँ यह
जाज सिखापते राति है सातें ॥ दुलह की दु
लही वानि भूलै कहा जर ही है सको चित
सातें ॥ हों दुख सागर में सखि बूडति आ
नि कही कातते चरचातें ॥ दंपति के पहि
चानि समै कछु नीकी राणी के पयान की वा
तें ॥ १९१ ॥ मध्य प्रः उदाहरन ॥ सदैया ॥ *
॥ प्रतिम सारयो विदेस निदेस सुने तिय
के विरहा गानि जागी ॥ नैन निभै असुवा
भालवें तिय के हियते सिगरी सुधि भागी
सुंदरि सीस नवाइ रही सुमई मति है अति
ही दुख पागी ॥ यों निरख्यो मनो जीव सो
पीव के संग सिधारि वो वृभान लागी ॥ १९२ ॥
पुलभा प्रवस्यत पति का ॥ सदैया ॥ नाह विदे
स की चाह सुनी वह साहस काज विचार

कस्योहै॥ चित्रलिखी सी हली न चली वपुमा
नो कलेसन सों अकरीहै॥ जैव को लाल
अलिंगन कीन्हो सुवाल दुह भुजसों जक
स्योहै॥ सुदत दुक्वपयो निधिमें पियको
लियमाने गो पवस्योहै॥ १८३॥ परवीया
प्रवस्यत पतिका॥ दोहा॥ लोगन वृभाति
लाल वह पुरीकिती धौं दूरि॥ तिया कह्यो
सरिव आइहैं चंद आनुही पुरि॥ १८४॥
सामान्या प्रवः॥ दोहा॥ सरवी कारन तमको
उचित सुवरन हीके पत्र॥ सुंदरि बहुत म
दाइके पुनि लैहै सवात्र॥ १८५॥ कदत पी
उ पर देसको अपने आखिन देखि॥ प्रव
स्यत पतिका नाम कहिनयो भेद यह ले
खि॥ १८६॥ मध्या प्रवः॥ दोहा॥ यह मध्या
अन समुझ को राखै अंजलि जोरि॥ नि
दुर होत सवार यह नई दुलहि याछोर॥
१८७॥ मध्या प्रवः॥ सवैया॥ लाल विदेस
की साज सजी सब सुंदरिहैं हियोर अकु
लानी॥ चाहै कह्यो अहो प्यारे रहो तव ला
जन तेन कदी मुख बानीतौ लगि यों अस
वार भयो गुर काज भयो गुरता अधिका-

नी॥ नैननिहै जल पूर बह्यो दृग सोचनी
दुक्ख समुद्र समानी॥ १८८॥ प्रमत्त प्रव-
स्यत॥ सवैया॥ मंगल साज प्रधान को रो
हते प्यारे दियो पहिलो पग भूपर देखत
लाल अलज्ज अयो निकटै सह आनन
को जैसे कूपर॥ ता सम व्याकुल सुंदरिहै
असुवां परे दूटि उरोज दुह पर॥ प्यो अरु
ओट चढावै सनो दृग मोतन माल अह
रोके ऊपर॥ १८९॥ परवीया प्रवत्प सवै
या॥ सुंदरि मंदिर के दिग मंदिर सुंदर दो-
प्रधान बनायो॥ भांकि भारेदेव है नारिक
देस पहायो बही यह देत पहायो॥ साकी
लगी ते चिरीनु लई उन बांचि प्रयास उदोत
जो पायो॥ आपनो आनन चंद मुरवी वह
योसको आनन चंद दिरवायो॥ १९०॥ स
मान्या प्रवस्यत पतिका॥ दोहा॥ लाल न
लत लखि लाल उर बोली लिय सति नेह
अपनी प्रतिभा लाल वह लाल निलनी
देहु॥ १९१॥ जाको पति परदेस को बाह्ये-
सु दुरित नारि॥ प्रो वत पतिका जोनि है
पंडित कहत विचारि॥ १९२॥ मध्या प्रवः

त पतिका ॥ सवैया ॥ जाके उरोज कंदे उ
रमे तजि लाजनि बाल मसों अनुरागी
ऐसे मै पीउ विदेस गयो यह जानि नही
तौ महा दुख पागी ॥ पूनो को चंद काला
सी मनोज कालान बहैगी जु जोवन जा
गी ॥ * ॥ पूनो लौ यावे जो आवै धरे
पति दंपति तौ गनिये वड भागी ॥ २०५ ॥
मध्या प्रोः ॥ कविता ॥ मोसों वृक्षमली भा
ति समा धान कसौ तेरी कितनो वियोग
ताहि स्रुत जगुन है ॥ सुनु सरखी सपनो
मै लख्यो आजु नीको आप चित्र रूप दो
ख्यो भगवान जो छगुन है ॥ तिहारी सरखी
को कंत या वसंत पंचमी को आवत वसंत
तयाको भयो सुभगुन है ॥ पूजैगे कवै थों
मेरे मन अभि लख यह छपिके छवी-
ली कहा पृथुत सगुन है ॥ २०६ ॥ प्रौढा प्रो
षित पतिका ॥ सवैया ॥ जीवित नाथ वि
देस गयो हम जीवति हैं विरहा गानि
हागी ॥ तेरति यां कल पंत भई पियके संग
जे निमिरै सम जागी ॥ मोपर आपने
प्यारे को प्यारे कही जे अनूप कथा रस पागी

जो छतियां लगीं वतियां सुनिते छति-
यां अव सालन लागीं ॥ २०७ ॥ परकीया ॥
प्रोषित पतिका ॥ दोहा ॥ दुसह होत पति
को कछु ललित दिखा वतिवात ॥ कव-
रै हे प्यारो सरखी मोहि कछु न मोहात ॥ २०८ ॥
सामान्या प्रोषित पतिका को उदाहरन ॥
दोहा ॥ रोद कहति है आई है मेरो धन मोपा
स ॥ सुंदरि पिय मग लखन को कीन्हो द्वा
निवास ॥ २०९ ॥ अभिसारिका लखन ॥ दोहा
सुभ वेख धरि जोन्ह मे वरै जति या अभि
सार ॥ सो जो लखा अभि सारिका सकल र
सिक रुचि सार ॥ २१० ॥ कविता ॥ तन सव
सुवरन दरपन समता मैमैन अधि काई
जो गुराई महि गई है ॥ तामह पूर चंदिका का
लक सोंदी सारी सेत सुखमा समूह लख
साई है ॥ आभरन जोडे मुकुता पाल विमल
दुति अंग अंग तारागन तेई जनु आई है
चली इंद्रु सरखी उत इंद्रु अधि देवता री
सुकती तिहारो कोऊ दरसन पाई है ॥ २११ ॥
तमो भिसा स्या भदेव धरि तम समय चलै जु पिय
यथे नारि ॥ वह कहियतु अभि सारिका स-

ज्ञान लेहु विचारि ॥ २१२ ॥ सदैवा ॥ मेचकरंग
 के अंगकोरा कुंग मर दूवटा कि उज्यारी ॥
 चोवके रंग रंगी पगिया पहिरे तन नील
 अनूप सारी ॥ हे विरकी मग है निवारी
 सु अंधारी जे हलसी अतिकारी ॥ वागमे
 अनि रसी मन मोहन प्योके संग मनोह
 र नारी ॥ २१३ ॥ दिवा भि सारिका ॥ दोहा ॥ व्या
 ज पुराट अभि सार जो चौस कोरे वर नारि ॥
 सो कहि दिवा भि सारिका सज्जन लेहु विचा
 रि ॥ २१४ ॥ तन सिंगार आर्द्र जु करि वागवि
 लोकन काज ॥ पिय मिलाप लहि आपयह
 सफल भयो सब काज ॥ २१५ ॥ दिवा भि सारि
 का ॥ सदैवा ॥ कातिक पुन्य महा नदी न्हान
 कटी तिय संग सखी मन भाई ॥ नहाइ कैनी
 के सिंगारि के अंगनि वाग विलोकन काज
 सिधार्थ ॥ कुंजद वंत में मित्र मिल्यो धनि मा
 नि उते दिन राति बढ़ाई ॥ लोग मिले मेरे नैह
 रके घर पातमें आर्द्र यों वात बढ़ाई ॥ २१६ ॥
 उत्तम मध्यम नीच म तीनि भांति करि जा
 नि ॥ इलके लक्ष्मण उदाहरण कहत लेहु मन
 अनि ॥ २१७ ॥ जोपे प्राणप्योरे कछु चाहिन ति

हारे कविज पीछे लिखे है ॥ पिय कृत हि
 त अरु अहित में कोरे हिसा हित नारि ॥ क
 वि चिंता मति कत है को मध्यमा विचारि
 ॥ २१८ ॥ सदैवा ॥ पाछे जो पीति पारी लुका
 री अथ आनि पारी लुके आरु की रुई ॥ हे
 नारीति नई सो लुके तुरंग रसी करि अधि
 काई कहौ काव ॥ कोविन पाय कोरे वन
 वाद हो जैसी हुली सुतों नली हुली लया ॥ अजुत
 राजु को वलि जाइ सो काज कत ॥ हासं लभसो
 भव ॥ २१९ ॥ दोहा ॥ हितो करत लोभ नाइ को अ
 हित कोरे जो नारि सो अधमा है नाइ को सज्ज
 न कहत विचारि ॥ २२० ॥ कविज ॥ चिंता न
 नि होइ कोऊ नीकी की अनेसी सोभा सोई
 पावे जामे पीति पति की उदोति है ॥ तूही यों
 विचारि दूर करि मोती हार कोरे पहिरे तो
 कहा छवि पावति योति है ॥ कहा की जे न
 कुत है पीके उर वसी नलो बोली है न जिने
 उर वसी कैसी जोति है ॥ कोनि है निवाइ है
 ठ वैठी मुख नाथ को री नाथ रिमाइ तें
 निवाइ नीकी होति है ॥ २२१ ॥ कविज ॥ रया
 म सर सिज अंग रणे सर सिज लोभ

रख्यो। सिरपर थनस्थाम रंग थनेरग॥ चिंताम
निकोहे मानो वदन कामल पर मधुकर पुंजम
नौ जगदत परभाग॥ पीठपर वैठी तन सहज
सुगंधलोभ मानो अलि अवलि विमारिके
चमेली वाग॥ वेनी चुरनेनी की यों मंडित सु
मनिरूपनिधि की रची है मनो दत्तामनिध
रनाग॥ २२२॥ स्यामाजूके सनेह की स्यामता
मेरी भो स्यामता मे सवरी भर दो जगु है॥ चिं
तामनि कोहे जू और वचन की दौर मेन रे सौ
कछू सुखभा को समूह अदगु है॥ पाटी द्वि
गार थन घटन के बीच मे मयूष सी सफूल
बाल रविलाल नगु है॥ सेंदुर सुभग तिय माग
राग भरे अति मानो पियमनु के रागागम को
मगु है॥ २२३॥ स्यामाजूके सुंदर सकल अंग
पीख स्यामनि पायो समि सैन मेन को अतंका
है॥ वृषभान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि म
हा दुख जन चुरंग यथो रंको है॥ चिंतामनि कोहे
लालमनि वैदी भाल लथोन अलंकृत की लो
पर जंको है॥ दीपति हितान महा संगल निधान म
नो मंग मिलत वगार अंठ को मयंको है॥ २२४॥
काकुकात १३५

सरवर अर विंद जो अनि दुहे॥ यों कछू है
वाते अलि मधुर अधिक अवि कावि चि
तामनि ज्यों नरन रिंदु है॥ सरद की पूनो
की निमाको महा नीको कहा पीको सौ
लगात याके आगे यह दुंदु है॥ सुंदरी जस
हरिके सुंदर वदन आगे सुंदर लगत हमे
दुंद नार विंदु है॥ २२५॥ याही की ली सुभदेस
करत है गंध वंध रे मे वा मे साह जि के हो
रुम चमेली को॥ अंग मनो नाना रंग फूल
नि की रासि उन अंगन मे विमल विला
स अलवेली को॥ चिंतामनि चंपका कु
सुम दोय अभि राम दिव्य रूप काम काल
आनंद के कली को॥ जाके अवलोके सब
हरि होत दुख वसो है नैननि को सुख सुख
कमल नवेली को॥ २२६॥ मोहन मोहन
भेन देवता विराजे राधा दासों देव वधु हंद
कैसे अक सतु है॥ सुख विशु विंव पर रच
ना रची विरंचि जाये बडो सुख भा समूह
सर सतु है॥ चिंतामनि सुललित अलक
काला कै लसे भाल पर मृग मद विंदु विलस
तु है॥ वृषभान नंदनी की भौहें अति मोह

ऐसी अरु गुविंद जाके वस मैं वसत है ॥
 २२७ ॥ जाकी नासिका में तिल फूल भाव
 प्रकासक तिलखो विधियों जोतिलो
 तमाभा सोभा धर ॥ तेरी छवि देखि बाकी
 ऐसी छवि छीन होति सुख दुति दीन जे
 सो प्रभात को सुधा कर ॥ चिंता मनि कहै
 कहा चंपक सुमन वन लं लाल कीन्हो सु-
 काती हल प्रभानि भर ॥ कहा अति रिजु
 नौल नायक रिभायो रीभी नाक नाय-
 की है तेरी नाक की निकार पर ॥ २२८ ॥ अम-
 ल कपोल प्रति विंदन सहित मनि जटित
 लाटंक चारि चार छवि धाम है ॥ चिंता म-
 नि वदन मयंकर य रचि रुचि मीन नहे-
 मंजुल है महा रथी काम है ॥ सारी जरत-
 गी हेम पंजर में खंजत मुख सुखमा सरो-
 र को सरसिज स्याम है ॥ चाहे नैन नैन जाने
 जैसा जैन होन जैन कहाँ लौं कहैगे जैसा
 जैन अभि रस है ॥ २२९ ॥ चिंता मनि का-
 है तारा इंद्र नील आसननि सदा विलस-
 ति पुनि विविध दिहारी हैं ॥ सो है नैन में न-
 वान खंजन सपट्ट जालो मंजुल अंजन गु-

नरुफित निहारी हैं ॥ मोद मंदिरन विर-
 नावली की छजन की छवि अवलो क
 नि रुचिर रुचि हारी है ॥ दुरान मैलागी म-
 न मृग की दावरि मनो धनी बाकी वरुनी रा-
 तरुनी तिहारी है ॥ २३० ॥ सो है अंग चिंता म-
 नि नगन जटित दिव्य वांचन की वेली के
 से सुंदर नवेली के ॥ सकल जगत पर एक
 सुकती है तुम नायकानवल ऐसी नाय-
 का नवेली के ॥ एक ठोर देखो छवि आप-
 नी नहू की प्रति विविध है आरु रूप आन-
 द के वेली के ॥ सुवरन आरसी से अमल
 अमोल कटि गोरे गोरे गोल है कपोल अ-
 ल वेली के ॥ २३१ ॥ अह निमि चरचा सखि
 न संग स्यामा जकी स्याम सुभिरन और
 काज सब नाखे है ॥ दृख भान नंदनी दोन
 ह नद नंदन पै चिंता मनि नेह कहा लोमों
 जान भारे हैं ॥ गोविंद के चरित अहार हो
 पुरा नन में सुनि हियो भरि पुनि अभिल-
 खें हैं ॥ सुवरन रेख नव अंक दुहु दानन से
 दुगु नित दुग्ध निधि मानो लिख खदे हैं
 २३२ ॥ केसरी सो अंग नाश दोसर की छवि

यह हरति छुवीली अप सरन को चेतु है ॥
 चिंता मनि कहै अल वेली अकलंक सु-
 खी सरद मयंक अरिख यन सुख देतु है ॥
 ललित कनक मय कालप लतामेल गयो
 सुधा मय विंव फल सुख मा निकेतु है ॥
 लाल यों कहत धन्य जीवन मुकतये ध-
 न्य जो मथुर ऐसे अधर को लेतु है ॥ २३३ ॥ द-
 ष भान नंदनी की दन्तनि की वांति कवि
 चिंता मनि कहै ऐसे कहां ते पवीनो है ॥
 सुंदर श्री जूको वासरचना रची विरंच या
 ते उन विरंच वधू संग लीनो है ॥ हरि गुन
 सुनिवाको आपने समीप जी भज पाकोरु
 मन सुललित थल दीन्हो है ॥ सुललित दू-
 दिग के मंदिर के द्वार कारतार कुविंद राज आ-
 वरन कीनो है ॥ २३४ ॥ सवैया ॥ ज्ञानु भयो ज-
 वते तवते तिय एक लखी मनि आजु अल-
 लमै ॥ दामिनि ज्यों जमुना प्रतिविंवित यों भ-
 लकै तनु नील दू कूलमै ॥ देवत ही सुख देखे
 विना दुख जाइ परी कितते उत भूलमै ॥ ठो-
 ढी मै स्यामल विंदु गुपाल मनो अलि वा-
 ल गुलाब के फूलमै ॥ २३५ ॥ सारी सुपेत प

वाह मनो सित फेल रह्यो तनु सोने के भूष-
 २ ॥ जोरी जुरे चकई चकवा मनो यों रुचिर
 जत है कुच ऊपर ॥ कांटे ऊपर आनन की
 छवि यों वरनै वारिोक कहं पर ॥ दिव्य धुनी
 मधुनी मीध कंव न कंव लसै जनु कंचु-
 के ऊपर ॥ २३६ ॥ * ॥ श्री नंद नंदन की जे-
 तिया गर लाज पहार हजारन पेलिकी ॥ का-
 न्ह कांसेटी के सोने की रेखसी मेचक अंग-
 न ऊपर मेलिकी ॥ मै न महा धन साधन सो-
 हाति स्याम तमाल अलिंगन केलिकी ॥ पी-
 न विलासिनि बाहु लसै मृदु सारवा मनो मु-
 ज कंचन बेलिकी ॥ २३७ ॥ दूरते दीपति देख-
 त ही प्रति पद्म वधून के होत रुजो हैं ॥ चारु प-
 थोद घटान के बीच मनो विजु रीकी जुरी अ-
 नु जा हैं ॥ यों छ विमों अधि काति मनो हरि
 राधिका की अग राति भुजा हैं ॥ काय के को-
 न अलंकृत अंकित मै न की मानो विजे की
 थुजा है ॥ मेरु के अंगतें गंग की धार धंसी उर
 है सुभ हार धसे हैं ॥ चंद की चंद्रिका मे सिव
 है जनु यो सित कंचु की बीच वसे हैं ॥ बीच न
 हीं विंव नारि के तार को यों मति पीन उतंग

लसेहैं ॥ तो उर सों उर नाह धसे वैधसे वाच
 आपु समाह धसेहैं ॥ २३९ ॥ बाल पन की
 निकासी भई बल वाके अयान है आदि
 भुटार ॥ जोवन को विधराजु दियो उन
 ज्ञान किये सब काज सुटार ॥ चंचकसे
 चक वै मनि छत्रन के कालसा करि कात
 नुटार ॥ देवता है रति मै न के द्वेष सोने
 के है मट मानो उटार ॥ २४० ॥ काविता ॥ वृ
 ष भान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि
 कहा सब सुनारि हृदजन के ॥ चिंता मनि लाल
 दरसन हेत लल कात सुवरन संभु जुग
 सोहत सुलज्ज के ॥ मै न रति मंगल के सुव
 रन कुंभ के थौं के थौं कुंभ कुच जगुल जोवन म
 द गज्ज के ॥ खग के थौं कुंभ के थौं श्रीपाल सु
 दार के थौं श्यामज के मोहन के सोभन गुच्छ कंज
 के चिंतामनि सौं हैं कुच वंचन कलस चारु
 नव गन पति कुंभ रोचन के रंग को ॥ विम
 ल वदन दुज राज रुचि गुर कीन्हो सेवत
 विमद जाहि जगन दुसंश को ॥ हरि ज्वकी
 प्रीति हेत जग उल हायो पायो जोवन नरे
 स राज राधाज्ज के अंग को ॥ २४२ ॥ संवैया

और तिलोक में कौन त्रिया अति रूपवती वृ
 षभान ललीते ॥ चोर भये को भयोन चल्यो
 उत जोवन राज प्रताप थलीते ॥ मै न महा
 बली सों पि दियो मनु छूटन पावतु कों नि
 वलीते ॥ श्री नंद नन्दन मोहन हेत विधाता
 की मनो वाज्ज कलीते ॥ २४३ ॥ को महा मूढ दृष्टीले
 के अंगन जाय पग्यो ज्यो ससागो बहीर में ॥ २४४ ॥
 ने अनहान अथीन जो आपते ताहि को आ
 नि सके पुनि तीर में ॥ जोवन पूर विलासत
 रंग उठे मन मोद उमंग समीर में ॥ सैल उरो
 ज ते कूदि पग्यो मनु जाडू प्रभानदी भौरंग
 भीरंगे ॥ २४४ ॥ जोवन को आगमन समुक्त
 के पद छोडि चंचलता चारु चारु पद चा
 हि थार्ड है ॥ जघन पुलिन लसि आई थिर
 ताई चरव छोडि पग चार्ड के उर जतट
 आर्ड है ॥ पानि पमै त्रिवली तरंग नामि भौरंग
 रूप नदी मध्या नगने प्रकासी यों निकाई
 है ॥ चंचलता थिरता उना रन वारन रोम
 सजी नील मनि सेत रेख उल हार्ड है ॥ २४५ ॥
 कोट कटाछ तुरंगम है पुतरी अमल वदन की
 छवि छजे ॥ मज गायंद के तुंग नरे न

कतमानस थीरज भांजे ॥ श्रीमनि चारु र-
थंग नितंब है पतिविलासन ते जनु सांजे ॥
सुंदरि के चतुरंग चमू नृप मंजुल मध्य अन-
ग विराजे ॥ २४६ ॥ कावित्त ॥ सोहत छवीले
अंग फीरति नंदनी को देखि मंद मुसवर्धानि ।
चारु चंद्रहु ललन है ॥ चिंता मनि इंद्रिग के मं-
दिर अनूप अर विंदतो प्रभात हूं मैं सकात ख-
लन है ॥ सेत सारी दारी सेनिहारी नेकु मन मु-
ख सुख निराधि मन सकात डुलन है ॥ सरद ।
मैं प्रगटत नीर निद्यत मेरु मही पर मानो
मंदाकिनी को पुलिन है ॥ २४७ ॥ अभिनव उ-
दित मदन रवि रथ चक्र पर पंथी वाल द-
शा निशामय वेली को याही को सुख दसन स-
मभात घन स्याम खंडन विरह वैर सेला घे-
रि मेली को ॥ चिंता मनि याते कहावै चक्र चि-
त चक्रित भयो है लखि चक्रपानि मेली को
* कुं कुम के मानो कुच कुंभ है भवाइ थरे
जोवन कुलाल चक्र नि तंबन वेली को ॥ २४८ ॥
सोभा के सदन अवतरे हौ मदन तुम देखिये
ललित रूप रीति रतिवेली की ॥ * ॥ चिंता
मनि कहत गुंजरत भौर आस पास अंगन-

मैं साह जिक वासुं है चमेली की ॥ दीपनि की-
दीपति सी दीप जव वसन बोट कादली के म-
ल सी रमंजुल नवेली की ॥ सुख पति सुख
हुंते सुख सरसै गौ उर परसै गौ लाल ऊरु
अल वेली की ॥ २४९ ॥ चिंता मनि सोहत
सुभग हेम खंभ चारु जोवन सदन मंद पुं-
डरी कुल लसी ॥ सोने की तरकसी है काम की
चरन गरव चंद फूली अंगुली बंधु का कली
वानसी ॥ जेही रतन जोति चित्र रंग अंग
खर सो वह सित गोपन निदान सी ॥ राधा
जकी जंघा मकर ध्वज प्रधान के यों सिरि
को निधान राजे गर्भति निधान सी ॥ २५० ॥
संवेया ॥ यों मनि मेन महीप पुताप तिया
तन वैर सुभाउ मिले हैं ॥ आनन पूर निशा
कर के दिग वार घने तम आदूहिले हैं ॥ वै
सुखमा के समूह कछू अंगुरी परवुरी न प्र-
कास विले हैं ॥ छोडि सदा को विरोध कहा
कर कंजन सों नख चंद मिले हैं ॥ २५१ ॥ का-
वित्त ॥ वरनत इनको सदाही मुक्ति चिंता म-
नि की न्हो जो मुदित मन महा मोद मदतें ॥
नाह मनु मज मोद उल हावै नीके अभिन-

व ललित कल पलता छदते ॥ स्यामको हें
 सं जीवनि बेलको पल्लव ए ज्यादु लिये जो
 वचादु विरहा गिनि हृदते ॥ महा उर रंग रं
 गे रंगत है लाल उर राधिका के चरन अधि
 क कौक नदते ॥ चिंता मनि तेदु कहो चंद
 मुखी याकी वडी वडी छवि छाती जिनि
 सौतन की दही हैं ॥ चंद मुखी ज्योरे को
 कहि सकत याके आगे अर्थ रान चंद
 हू पात रुचि चानी हैं ॥ विमल वदन देखि
 याको लुमहू तो चंद मुखी कहि कान्ह सोह
 नदी अवगाही हैं ॥ निरमल दसन न चारु
 सुंदरि के चरन अंगुरियन सेवत सदा ही
 हैं ॥ २५३ ॥ इति श्री चिंता मनि विरचिते का
 विकुल कल्पतरौ श्री राधा वर्णन पंचमं प्र
 कार राम

॥ अथ नायक वर्णन

दोहा ॥ सकल धरम जुत नियुत धन विक्रम
 पूरे होइ ॥ ताको नायक कहत हैं कवि पंडि
 त सब कोइ ॥ १ ॥ प्रथम थीर पद दै गनौ नाय
 क ए निरधारि ॥ बाहि उदोत उद्धत बहुरिल
 लित संत ए चारि ॥ २ ॥ महा संत गंभीर अ

रुनि सा सिद्ध जो होइ ॥ अवि कामन थीर दि
 मन चो उदात कहि सोइ ॥ ३ ॥ थीर उदात
 ललरा ॥ कावित ॥ पिता राम राज अति धे
 क को बुलाए पुनि वन को पदां नही वद
 ल्यो वदन रंग ॥ पवल बैरी को भैया हर न
 हि आये तासो करन निकेत आपु रहे मि
 नि एक संग ॥ हन्यो इंद्र जीत कुंभ वरन जो
 शवन रा रुक रुक तिहें सायन के जेना अ
 भंग ॥ इंद्रा दिका रेवता नि वरनी वडाई आ
 इ नेकु जव ताही कहु प्रगटो गारुड जंग
 ॥ दोहा ॥ पवल गर्व सुख सहित चंडाई
 काय न होइ ॥ मायावी जो जगत में धोरो
 छत है सोइ ॥ ५ ॥ सबै धन पाहि यो उमर
 भाउ पर्यो सब छत्रि ॥ बार दूके संचार ॥
 गर्भ लगे दून छत्रि के कुल रंजित को
 ने भयंकर भारे ॥ तैं जाके गुर संकार को
 धनु लोखो कहामन मोइ विचार ॥ राज दुसा
 र चो तीरवन धार पर्यो होन कान दुखति हो
 दि ॥ थीरल लित लहरा ॥ दोहा ॥ सुंदर अ
 ति मन हरन गन सुरवी कान्ह सो होइ ॥ क
 ला सक निहि चिंत मृदु थीर ललित है

सोइ ॥ ७ ॥ सवैया ॥ मोर किरिट लसे चप-
ला पट नील वला हक रंग हरेहैं ॥ गोप के
कांध धरे भुज दंड अनूप विलास प्रभा-
नि भरेहैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल
वंजुल कुंजन तें निकारेहैं ॥ सुंदर मारहुं
तें सुकुमार सों वै लखि नंद कुमार खरेहैं

॥ ८ ॥ धीर प्रसांत को लक्षणा

होहा ॥ विप्र सरवा गोविंद को धरम ज्ञान
निविष्ट ॥ इंद्रिय विषय न तें विरत सो प्रधा-
न अति शिष्ट ॥ ९ ॥ शृंगारी नायक बहु
रिचारि भांतिके जानि ॥ प्रथम कह्यो अग
कूल पुनि दक्षिणा नाम वखानि ॥ १० ॥ बहु
रिधृष्ट पुनि सठ कह्यो लक्षणा फिरि अ-
नुरूप ॥ वरनत ए शृंगार के अलंवन मृ-
दुरूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया मेरमे सो अनु-
कूल वखानि ॥ सवमै सम बहु नारि रत सो
दक्षिणा मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूल को उदा-
हरन ॥ सवैया ॥ पीतम और वधु सो मिल्यो
मनिजाने सवै गुन दोख विसेखै ॥ मै सब
के ते उपाय रचे पिय के सहं और तिया मु-
ख पेरेवै ॥ मेरो विचार अचा विचक्षण

मोपेजु ऊतरुं दे हसि देखै ॥ पावै कहौ कि-
त दूसरी बात चकोर जो चंद्रमा के समले-
खै ॥ १३ ॥ दक्षिणा को उदाहरन ॥ दोहा ॥ स-
व अपने सन मुख लखत होत सकल सा-
नंद ॥ कलनि कलित मनि अतिललित
प्यारो पूरन चंद ॥ १४ ॥ धृष्ट लक्षणा ॥ दोहा
पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गह
कहै धृष्टति य धन्यतें तासों कोरे सुने
ह ॥ १५ ॥ रिसनि निकारी गेहते निघटनि
दुर कारि जीउ ॥ कर बटलै देखै कहा सं-
ग सोवतु है पीउ ॥ १६ ॥ सठ लक्षणा ॥ दोहा
* ॥ छपि तिय को विषिय कोरे बाहिर प्री-
ति दिखवाइ येसों नायक होइ जो सठकारि
वरन्यो जोइ ॥ सठको उदाहरन ॥ सवैया ॥ *
प्यारी कहौ हमसों निमि वासर यों काइ
प्रीतिकी रीति निहारी ॥ केहं कपा करे
मोहि चहौ मनि हैंतौ उपाइ धने कारिहा-
री ॥ कैसे छपे हमसों जो छपाइ भयौ नि-
त और के संग विहारी ॥ और कहं हिय
अंतर की हमसों सुख की प्रिय प्रीति तिहा-
री ॥ १८ ॥ अथ शृंगार लंवन ॥ कस्तुर्यंग-

वर्गानं॥सवेया॥पैली उज्या रीनलेसु
 रह्यो तम माया निसाके सहायनके॥कु
 रंद सुधा भर दंद भरे अकलंका अर
 प सुभायनके॥अंगुरी मनि नीलके पा
 सिनके मनो अक परे मुम दायनके॥उ
 र अंतर सुंदर आनि उंय नख दंदु गुविंद
 के पायनके॥१४॥लेरे महोद संतो पल
 ऊ जो रहे तिहुं लोक की संपति को गिरि
 दी धिति वै मकरंद सुधा भर बेलि संतो
 ष की रासन में खिलि॥तोहि सुहादेह
 ग धनो मनि राग लसे जिनि ये तिनिमें
 हिलि॥चाहें जो सीतल ताहियरे हरिके
 पग मंजुल कांजन सों मिलि॥१५॥कान्ह
 की ऊरु लखे जग के कदलीन के मूल
 न की छवि लाजै॥यों बल खानि उदंड
 लसे लखि दिगाज सुंदन के मर भाजै
 जो हरिके हर रोमके कूप अखंड वनी व
 र भंड समाजै॥ता गुर भार के धारन को
 मनो नील महा मनि खंभ विराजै॥१६॥
 खेलमें सैल उठाइ लियो बल की अधि
 काई सुयों दरसै॥कार ऊपर मोहत भृंग

मनो महि पाइ दवाइ सुभाउ हंसै॥मानि मेचु
 क संजु महा गिरि की सुखमा हीर अंगुनि
 लोसै॥मनो नील पयोधर वीच मनोहर
 मिनि की प्रतिमा दरसै॥लोचन मीन होसै प
 य करम कोल थरा थर की छवि सुखै॥१७॥
 बल मोहन सावरे राम हैं दुर्जन रावत को
 नि काजै॥हैं बल में बल ध्यान में युग लखे
 काल की विपदा सब भाजै॥मध्य दरिद्र हैं
 कान्हू जैसे सिंगरे अवतारन के राज भाजै॥
 १८॥कान्हू की देह कलिंद सुता विदकी सोत
 हा की पति नचीहै॥नामि रांभीरु हारन
 जारिके रीति समान समान सचीहै॥लाल
 महा मानि माल के वीच रोमावलि रूप की
 गमि रचीहै॥दिव्य दिये दुख तीर नहीय
 सुमध्य मनो तम रासि वचीहै॥१९॥अनी
 रिके उर ऊपर चारु खले मुकता हल हाल
 खरेंहैं॥कै प्रतिविंबित ऊहां नग दुखुदे सुख
 के समूह थरेंहैं स्याम महा मनि प्रीति सिला
 नखता बलिके प्रति विंव परेंहैं॥आपने वंधु
 समाज को साज को वंधुन मानो निलाय को
 हैं॥२०॥एई उधारत हैं तिन्हें जे परे मोहम

हो दधिके जल फेरे ॥ जेइ नको पल ध्यान थ
 हैं मन तेन पैं कावहं जम घेरे ॥ राजै रमार
 मनी उप ध्यान अमे वर दानि रहै जन नेरे ॥
 हैं बल भार उदंड भरे हरिके भुज दंड महा
 क मेरे ॥ २६ ॥ कान्ह को कंवुज कुंकुम रं
 जित भागन तें मनहं मन आनौ ॥ श्री काम
 ला बल यावलि अंकित सुंदरता जग ऊपर
 जानौ ॥ हैं रम नीय त्रिरेख मनौ अव तामै ल
 सी मुकामलि बरवानौ ॥ एक निवास के नेह
 मिले सुभ संख सों सुतिन के सुत मानौ ॥
 २७ ॥ लखि लोचन नील सरोज मिलै हैं पका
 सत प्रेम प्रभोद धनौ ॥ मनि कानन मै मुकु
 ता भल कैं उठि हैं परिवार मनौ अपनौ ॥ मुस
 क्यात सदा नद नंदन को मुख यों सुख मा
 को समूह गनौ ॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत
 चांदनी सांवरी सुंदर चंद मनौ ॥ २८ ॥ कान्ह
 के अंगन की छवि देखत नीकीन अंग लगे
 आरसी को ॥ ऐसी मनो हर मूरति मै मन
 लागत है मनु धन्य जसी को ॥ सो है सुभाव
 कपोलनि मै नद नंदन को मृदु मंद हसी
 को ॥ नील महा मनि आरसी माहं मनौ भा

लंके प्रति विंव ससी को ॥ २९ ॥ लहि यावो तो
 स्वादु अचेतन हूं मुरली कियो नाद त्रिलोका
 वधौ ॥ पुनि याही के स्वाद मिरि भई पूजित
 जे वसकै काठि कानन वधौ ॥ इत वाके तो स्वा
 द लिये कवहं सब लोग सदा विन बुद्धि त
 वधौ ॥ मनि संजुलता हरिके अधरे वह वधौ
 वारि पावत विंव पवधौ ॥ ३० ॥ जाहि लखे द
 जकी वनिता नित जी कुल वानि लिये सदा
 लाजे ॥ भूलि गयो गुर लोगनि को डर छो
 डि दियो सिगरो गह काजै ॥ पूरन चंद ते
 जो अधिके मन आनन चंद वडी छवि
 छाजै ॥ ऐसी अनूपम ओथकी नाक मुन
 द कुमार की नाक विराजै ॥ ३१ ॥ कान्ह जका
 म स्वरूप थरौ पढये मनौ हैं सब अंगन हो
 ने ॥ मोही सदैव वृज की वनिता धरनी तरुनी
 नई आर्द जे गौने ॥ भौ हैं कामान सों अंकुज
 वान चलादु लगादु के कानन कोने ॥ कौ
 नि कोरे मन यों हिय रामै लगे नंद लाल को
 लोयन लोने ॥ ३२ ॥ आपने को सदा सील
 भरी कौऊ वृभौ तो तासों कोरे मन सौ हैं ॥
 सज्जन को सुख रास पका सही दुर्जन दा

नव दाहक जोहैं ॥ मानिनि के मन कौ थौं ज
री सर नैननि में न कमान मनोहैं ॥ वेदनि के
च विचार यहै सदा मेदये नंद कुमार की
मोहैं ॥ ३२ ॥ पैटे जवे सुख मा जल न्हान
कौ व्याकुल है विरहा नलडादे ॥ जोराव
री जिन रेंचलिर मनिहै वृज नारिन के
मन गादे ॥ श्रीनंद नंदनजू के मनोहर का
नन कुंडल यों छवि वादे ॥ वैध्वज वाह
नो मकर ध्वज राखि सुधारस कुंडल गा
३३ ॥ कान्ह की मूरति देखी सुती जिनते
सिगरे वृज ऊपर जानौ ॥ काहेन ध्यान
गो निसि वासर भागनतें मनहें मन आन
ऐसी लसी नंद लाल के भाल में कुंकुम
की अस नाद वखानौ ॥ दिव्य उदै के समे
लकौ विध भागमें राग विराजत मानौ ॥
३४ ॥ लाग निरंतर जाहि वरवानत हैं सिग
रे निगमो पचि हारे ॥ स्याम की सोभन
पकला कह पावत कोटि अनंग विचारे ॥
आनन ऊपर मोर विरीट सुवार विराजत
धुंधुर वारे ॥ इंदू के चाप समेत मनो विधु
मंडल ऊपर वादर वारे ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ जे

रस उहै पित कोरे तेउही पन जाति ॥ चंद्र धना
दिक लालित ॥ ३६ ॥ चित्त में आनि ॥ ३७ ॥ कवि
न ॥ प्रफुलित बाग कुंज नालि वन ॥ ३८ ॥
जु लयाई जे नह वोपसी चढ़ावे उज राहें
चिंता भनि कहैं रोसी सोध सध ॥ ३९ ॥
चल सारकी सधन अग नदिमें ॥ ४० ॥
कौती धारा धौरी धरामे पसारी चंदो जल द्यो
कंदरप कटिल कासा दे मे ॥ ४१ ॥
को वैधौ मेरे मंद भागिनि को कलह बिह
स था वसंत को सुहावे मे ॥ ४२ ॥
वा मान मंदिर की छवि हृद कथा कर की
छवि कुंज न पौछो ॥ ४३ ॥
चादनी चापुहे मेन महा बल सोल्यो सुद
रिके मुख चंद को छोडि चंदोरत चंद म
दूरवन चोखो ॥ ४४ ॥
चंद हिलानते नीर भरयो
सो संवे लिये विरहा निनि सोख्यो ॥ ४५ ॥
कवि ॥ लालन की मिलनि को ललित
पटाकु लाल जटित दिवा लन की चौकी
चंद दोर की ॥ लाल वद भूमि ॥ ४६ ॥
सुंद लाल सुंदर सुलान छवि ॥ ४७ ॥
रकी ॥ चिंता भनि माने सध ॥ ४८ ॥

वैठकनि गान मृदु यूथु मृदंग धन थोरकी
सुंदर रतन मय मंदिर मंदिरिनि संग खेल
नि ललित लाल ललित किमोरकी ॥४७॥ पा
तीप उद्दीपन की यो उद्दीपन विभावको वि
वेक कियोहै ॥४८॥ आलंवन गुन इति
अलंकार रतीन ॥ पुनि तदर्थ ज्योयो कहे
उद्दीपन रवीन ॥४९॥ आलंवन गुन रूप अ
रु जोनादिक चित अनि ॥ बहुरि हाव भाव
दिये चेष्टा ताकी जानि ॥५०॥ नूपुर अंगरत्ना
रदुन आदि अलंकार देखि ॥ मलया निज
चंद्रादि ए सब तटस्थ अव रेखि ॥५१॥ यापर
हम यों कहत हैं ॥ * ॥ देहा ॥ उद्दीपन जे भाव
ए सुने कहं हम नाहिं ॥ चंदो द्याना दिक्क
हे समुझे नीके जाहिं ॥५२॥ आलंवन के गु
न समे आलंवन के बीच ॥ ते उद्दीपन को कह
है कथन लगे यह नीच ॥५३॥ सोंदर्यो दिक्क
गुन रहित आलंवन न होइ ॥ आलंवन गुन र
हित जो वरनि सबो नहि कोइ ॥५४॥ चेष्टा ता
की आपुही वरनेगे अत भाव ॥ अब उद्दीपन
कहत हैं कोसो बुद्धि प्रभाय ॥५५॥ आलंवन
की अलं द्यार है आलंवन माइ ॥ सो उद्दीपन

होत है जो वरनत कथि नाह ॥५६॥ राम उद्दीप
न क्यो कहै रस प्रथाव वैजानि ॥ जो आलंवन
न मध्य है ते आलंवन मानि ॥५७॥ जे तट
स्थ उन कहें चंद्र वाग दुन आदि ॥ ते उद्दीप
न कहि सबो है यह काल आदि ॥५८॥ उ
द्दीपन उद्दीपन ॥ कथित ॥ मरु सह माते मंजु
मती रसाल ॥ देकर मधु मधुकर को नारन
चिंता मनि कहै फूल फाल निजाल तउत दे
खी महा राज आनि ललित लली बली ॥ कुं
जनि मै छाह थलि कहली बहवन की विम
ल सुगंध जल नालन ततो बली ॥ राख अ
भि वेक समे आयनी संपति सबलै रसा
ल कीन्हो रित राज हं महा बली ॥५९॥ आ
स पास मंदिर वनेहै दिव्य मध्य वेदी चदि
राम चंद्र देवो सुखमा सुखार्द है ॥ चिंता म
नि निरामंदिर पारि जातन को सकल दिस
नि मै सुगंध सर सार्द है ॥ महि पर सत मं
जु मोरन ए आमन मै गत काल को किल
न मधु कुर गाई है ॥ आगम जलु राज को
निरखि मानो वन्दी जन ललित सुरन सह
नाई वजाई है ॥६०॥ इति श्री चिंता मनि क

ते कवि कुल कला तरो पञ्चम प्रवारण ॥
 ॥ दोहा ॥
 इति कारन अन् भाव गनि एकटा छंदे अ
 दि ॥ मधुर संग देहा कोहे सहृदय सुखद
 अनादि ॥ १ ॥ जे पुनि थारु भावको प्रगटका
 रे अनयास ॥ ताहि कहत अन् भावहें स
 व कवि पुदि बिलास ॥ २ ॥ कविता ॥ जोवन
 सिंघासन में मुहरि को रूप भूप पीतम
 नैन जाके उप सर पनमें ॥ चिंता मनि का
 वि विलोकनि मुख कपाड पाद होतहें मु
 दित जैसे पित्त तरपनमें ॥ मोहत वदन का
 ल घृष्ट की ओर पिय कीन्हो तन मन
 धन जाके अस्ममें ॥ बिलसत मनो प्रति विवि
 ल सरद चंद विमल पदुम राग मनि दरप
 न में ॥ ३ ॥ लाल रंग कंचन किनारी दार सा
 री तैसी नाक के नखत मुकतान की उजरी
 है ॥ वीद्युत की छटासी छवीली की काद
 नितैसी चिंता मनि नील यन चटन को च
 रोहै ॥ मोह देखि मुरकि मधुर मुख कपाड
 चाड कीन्हो चित चपल कटा छन को च
 रोहै वांछे धर थुमर ललित पदुलहना

की मनोहर मन्त्रै भुमन मनमोहि ॥ ४ ॥ दोहा ॥
 विदतं मरो मां च कहि पुनि सर संता वनाड
 बहरि कप विवराणि आसु अदलीना
 ॥ ५ ॥ आद सावित्रा का कहत सज्जन वान
 नन आनि ॥ इनको देत उदा हरन एक वादि
 न में सानि ॥ ६ ॥ कविता ॥ लोचन निभाल
 को प्रमोद जान कप लेद सलिल अचल
 तन पुलक पल कोहि ॥ पील रंग मये सुख
 प्रिय निकरैन मेन दू बात हरन करि खेला
 में आहोहि ॥ देखत परस पर यहै गति म
 री अनदेखता स्वरूप धेन आपनो विचार कोहि
 तन अंगोचर जो परान आनंद मंद नंदन
 मा हृष भान ॥ देखनी निहा कोहि ॥ ७ ॥
 चारी भाव लक्षणा दोहा ॥ जे विशेषते का
 हको अभिसुख नहि वनाड ॥ ते संजानी च
 रोये कहत बड़े कवि राड ॥ ८ ॥ रहत सदा
 धिर साव में प्रगट होत दूहि आंति ॥ ज्यों
 फलाल समुद्र में यो संचारी जाति ॥ ९ ॥
 मोनि वेद विभ्रम जह जड़ ता थीरज दुर्ध
 र उगता चितन सावै रवी है अमर ॥ १० ॥
 मोरख सुमिरन मरत मद मुपनीह असुख

11/2/11

10

04/01

674

निर्बलता

११ अमृत

२।क।

ये कहानी कोइ हरे जो सखा जनता गाह
 जाति सकोचन वाल अघानी ॥ १६० ॥ ह्याम ति
 हारे सनेह रहे सखा संचती सान्य संकोच
 समाना ॥ १६१ ॥ अमर्ष उदाहरन ॥ संवेया
 रति अमर्ष रहू अने सादु उदा राका याने
 लिया बारि सको दिव ॥ सनिचिनी हे धाटि प
 री विपरी अयने करहरी वागलिये ॥ भाल के
 भ्रम विदु छुटी अलके विह सोहिं से गान
 कपोल किये ॥ अत वे उप जावत सोचत
 को सकोचोहिं सलोचन आनहिं ॥ १६२ ॥
 धैर्यको लहरा ॥ १६३ ॥ ज्ञान संका आ
 कनते जो संतोष धृत मानि ॥ निज अह
 परि पाक भो व्यन चित पहि चानि ॥ १६४ ॥
 धैर्यको उदाहरन ॥ कावित ॥ पूरव करम वर
 भुसत है भूलत मै पूरव जनम जो दियो
 है सोइ प्राय है ॥ तिलसों महीप कोरु काह
 को गुमान चारे चिता मनि जिनको सहज
 चित चारहे ॥ कोस दसवीस के नरेस नि
 साया कहा होत विरा राये परमावर मह
 बहे ॥ सयको सदाही साथ अनायन को ग
 थ हमें वाहा दीन बंधु विश्व नाथ विनय

येह ॥ १६५ ॥ दोहा ॥ सकल आचरन ज्ञान को
 अक्षमता जित होइ ॥ प्रिय अप्रिय देखे सु
 ने जडता कहिये सोइ ॥ १६६ ॥ जडता को उ
 दाहरन ॥ दोहा ॥ अन मिरव लोचन देखे सु
 चुप रहि दो इत्यादि ॥ होत वात वरन न
 रहत यों सब सुखद अनादि ॥ १६७ ॥ अन
 मिरव लोचन के रही हली चली नहि वा
 ल ॥ चित पुनरी करी है दूरी अप छुला
 ल ॥ १६८ ॥ इष्ट वस्तु पारु हरत मन प्रसा
 द जो होइ ॥ आसु खेद नाइ गद अचन वरन
 तोइ सब कोइ ॥ १६९ ॥ संवेया ॥ यों मन वैदी
 विर रति हो मधुमे अव होत वचोगी अन
 वसो ॥ पीठ अचानक आइ गयो सुपरीप
 गयो सिंगरो दुख गंगसों ॥ काहि र भीतर
 पूरन ऐसे भयो थट मेरो अनंद उमंग लों
 पूर उमंग भगी रथ के तप जैसे विरिचिदम
 डल गंगसों ॥ १७० ॥ दोहा ॥ जो दारिद विरहा
 दिते होइ मलिनता कोइ ॥ चित्त मनि स्वा
 सादि करि होत दीनता सोइ ॥ १७१ ॥ ताप तो
 नहीं तपत हो जग मै पाप प्रदीत ॥ अवदे
 द्या लुदीन पे की जातु द्या नदीन ॥ १७२ ॥

रागे उदाहरन ॥ सवेया ॥ मोहके दोसन नाह
विदेसन चाहि सदेसपाती पठाई ॥ सोचति रा
ति रांदे पलको पलको नभरे सुत हाई ॥
बैठनि नारि जहां मुकुमारि हे लोचन वारि
न आंखि लगाई ॥ सांई मिले मनो याथा
लको मनि बैठाहि आंसुन की जल साई ॥
३३॥ दोहा ॥ वायु अपराध लखे जहां रोम
चंद्र उत होइ ॥ तर्ज नाहि कारन जहां होइ
उमता सोइ ॥ ३४॥ राम सील जगता पद
र सीतल सुखर अपार ॥ एकमन के संहार
रको अनल भयो इक वार ॥ ३५॥ चिंताक
हि पत आनहै लख्य तादि जित होइ ॥ आ
खर स्वमिता पतित वरनत है लव कोइ ॥ ३६॥
विनाशो उदाहरन ॥ कविता ॥ गंधानि है माने
मुकता हलको हार वह चाखनीर नैर्नान २
को थार पों दुरति है ॥ अगन अधर कहिक
दे को दुखित को कोन देत आजु कुंभी सात
न अति है ॥ अचल के रही बालि मंदिरमें
चिंता मनि लखन वदन चंद्र चंद्रिका पर
निहे ॥ बंटी कत आजु कर कमल कपोल
धरि व्यानत कमल नैनी कौन को करति है

३७॥ दोहा ॥ कछु उपाइ वांछादि कर उपाहन
अपजो चिन्त ॥ ताही सों खंडित वाहन वा
न जगनि ये मित ॥ ३८॥ सवेया ॥ मानव को
को मनाइ रह्यो वह चंद्रमुखी लय के कन म
नी ॥ रने से पाइ गई पुरवाई लखी वर को
गन दोलनि बानी ॥ ये तेम आइ उमिदि २
अचानक कारी यदा धनकी यह सली ॥
थोकि परी चपला चमके चलि को प्रति
को छुतिया लपटानी ॥ ३९॥ दोहा ॥ जोस
सुद्धि पर गुनन की उत्तम सही न जाइ ॥
भंगा दिक् ईर पा वरनी बुद्धि वलाइ ॥ ४०॥
कान्ह कह्यो देखी न काहु राधा की चमक
रि ॥ कह्यो सत्यभासा सुती राधा गोरी क
रि ॥ ४१॥ अस रव अपमानादि ते चित्त
ज्वलित जानि ॥ नैन जग शिर कंध अल
ज नादि कर सानि ॥ ४२॥ कविता ॥ जोस
हन मान रावम सो सवाल मुर मुर सिद्ध
आगे ॥ जंगम अनय रक्षर हन सत कंचु
कहो कहां वापि कुलें साभागे ॥ भुज लख
न चदि सुंदपक फल तोरत पुरख सस
अति जागे ॥ प्याइ राधिर वल देउ भैरवनि

भर भाव भरसो अनुगणे ॥१३॥ गर्व लक्ष
रा ॥ दोहा ॥ विद्या दृष्ट प्रभाव कुल रूप
अहं कृत गर्व ॥ होत अन्य अप मान कर
तो मे चेषा सर्व ॥१४॥ कथा मेरी आरंभ देखे
मृग जागै बाना गर कहा को मृग लेनी क
हे ताको वाहा वाहनी ॥ फिर जलि कहौ वा
ह्यु पार चुप रहौ हमै चंद मुखी कहै दे
खै चंदना को लहनी ॥ जानु दुन जात का
हूँ और लोने गान पर मोहि पिय सोने को
गढ़ को जिन गहने ॥१५॥ दोहा ॥ सहस
रान चित्तादि भू विला सादि जित होत
लुटिरन पुरव अर्थ को स्मृत वाहियत हे
सोइ ॥१६॥ चिंता मनि चन स्याम मे यों
विद्यता उमंग ॥ सुमिरन वास वादं व को स
लका भुक्त सब अंग ॥१७॥ संवेद्या ॥ सोही
हे काल नाल लखे सजवाल कछु कान मे
दन पावे ॥ बोलै न बोल दगी सी लखै मनि
मैन के जानहि यों अकुल वि ॥ रोमन अंग
कंद्य कली ललै यन स्याम की यों छवि
छावे ॥ सारति मंद कापोल हंसी उमंगी अ
रुवा अविद्या भरि आवे ॥१८॥ सरल ल

दृगा ॥ दोहा ॥ पान त्याग वाहियत मज सु
तौ प्रगट जग साहि ॥ संगमा दिक् छोड
के और दान वैनाहि ॥१९॥ जो वह कान
ह वनि यों तो ताको उदेत ॥ अंगरादि पद
धमे सर नन वर नन जगा ॥२०॥ कविता ॥
दुर धर पुल विरम लल जप अति और
भास कर ले के अंग यों दल है ॥ एक सर
दुर धर भाग्यो कापे नर अंग मे जाइ सर
अवर चंचल है ॥ और दान लगान न पास ह
न मान तन फूल के प्रदल भर गिरि मे अ
चल है ॥ अमनि स यरे सुन म्यहन तुला
मेना साथ दुर धर च मिलास सही नन है
॥२१॥ मदल दृगा ॥ दोहा ॥ धन विद्या रूपो
व आसव जीवन जान ॥ ॥ ॥ उष गत है
मद भावित वाहति आरुत वान दान ॥
॥२२॥ मद को उदा हरन ॥ दोहा ॥ रूप छकी
जीवन छकी सहन छकी मृदु दानि ॥ प्रेम
छकी आसव दृष्टी भई छविनि की खा
नि ॥२३॥ आन नैन गति लटकि लखि हो
त लट वलि हार ॥ छकी छकी नारि ह
रि आसव छकी निहारि ॥२४॥ स्वप्रलक्ष

प्रसंग

तल

गा॥ देहा॥ स्वप्न नींद आन अर्थको अनुभ
व जो कह्यु होइ ॥ सुखदुख दिक्कहेतुय
ह स्वप्न कह्यु होइ ॥ १५॥ यो आयो परदे
सतेहानि सपने कीवान ॥ पति आनाम प्रति
विंद सखि साचु भयो बहू पान ॥ १६॥ स
पन संग जागि दुख उठि विन आनामन नि
हारि ॥ सखी कलप तह बाग हूँ सोच आ
व्य उजारि ॥ १७॥ मन में सीता का मर कहि
आभा दिक्कनि होइ ॥ लासा दिक्कनि होइ
रिंदये स्वप्न दिव्य स्वप्न होइ ॥ १८॥ संवेया
मांगते छूटी ललाट लटै लसे लज सोनिन
की लटकी चट कीली ॥ वेसारी की मुकता
हल डोलत यों मानि ॥ सन लोति रगी की
ढोली भुजा करि पीठि छुंये लपटाइ रकी
रनि अंतर् सीली ॥ सोइ अजो छतिवांहेल
गी सुइ ज्यो छतिया मन साह छवीली ॥
१९॥ देहा॥ निंद को अवसान जो सोचिवा
थ मन आनि ॥ दृग मरदन अग राइ अरु
जंभा दिक्क दूत जान ॥ २०॥ उधरत तियट
ग जगल छवि निरखत नंद कुमार ॥ खुल
त जलज जुग जागि जनु खुल बुलात अ

लिचार ॥ २१॥ लज्जा को लहरा ॥ देहा निदि
दार्द की जुहे सोलज्जा मनि अति ॥ मय
ना वलि आदिक वाछु होतिहोइ दे
नि ॥ २२॥ वेदी पिय पर मे लगीली होइ अ
नी उजारि ॥ दूडि गर्द आव लोकि त सब
च सिंधु सुकु भारि ॥ २३॥ जो कृादि आ
ये समव दुखा दिक्कत होन ॥ अप मय
भूपात तिल फेल सोन अधिकान ॥ २४॥
मोह लहरा ॥ देहा ॥ मोह वाक्य हो ताहि
को जहा जान मेदिजात ॥ विन दुख
चिंतानि ने जह अति विह वलमान ॥ २५॥
खान पान परधान सब जान लखो वा
ल ॥ वां लही तुम को निरारि कुम निरसेही
लाल ॥ २६॥ सति लहरा ॥ देहा ॥ नीद पं
थ अवन मारदे आदि अरथ सि धारि ॥
मतिन ने कछु हाख रस अहं सतो प
चार ॥ २७॥ विन प्रयो जन मित्र जो मोहो
न दावानि ॥ मित्र प्रयो जन तेहू सुतो मि
त्र जिय मानि ॥ २८॥ विन मलव को
यासो तासो कीज्यो प्यार ॥ मत ललैया रीक
रै कहा मतल की प्यार ॥ २९॥ निदा दिक्क

मवलोल
उत

विहल
अ

विहल

अहं
सतो

मतेन

ते होतहैं उत आलस संग राहु ॥ नैन अध
 खुले भांति यह आलस सब कवि राहु ॥ ७० ॥
 आलस को उदाहरत ॥ कवि त ॥ दूरे हारमि
 दूरे सिंगार सब संगति ये कोटिज सिंगार
 रत्न की संगत ॥ कल कान की ॥ चिंता मनि
 कोहे अहो काये कोह आलस मोरे वंदु सोव
 दन पर आभा ॥ कल कान की ॥ गुरजनि
 लखि हैं अगो छले सलोनी यह लागी पी
 की ललित कपोल ॥ कल कान की ॥ रतिर
 ति रंग पनि रंग ललत ॥ मुली दोरी मुली
 छवि आनत ॥ अथ मुली ॥ कल कान की ॥ ७१ ॥
 दोहा ॥ काज साह उद्योग जो मंदिर आल
 स जानि ॥ यह आलस लहान गय विद्या
 नाथ बखानि ॥ ७२ ॥ और कोर को कामत
 नु कामहु सिधिल जवाम ॥ जो कारि दे पि
 य संग सो प्रबल कागवत काम ॥ ७३ ॥ दृष्ट
 निष्टा दिक्कन ते संभ्रम अस्मिक होव ॥ ता
 ही सो आवे सकवि वरनत मथन लौव ॥
 ७४ ॥ असे उदाहरन ॥ सवेया ॥ श्री दस भा
 न कुमरि के संगमें कोलि रखी हरिज जमु
 ना तट ॥ दंपति कुंज के मंदिर में बहलीव

नमाल बनी मुकता छुट ॥ भूखनस नि
 र रति रंगमें पायो न्यों काहु के के को
 आहत ॥ आकुल है हरि मंच कप्रवर
 राधिका बोदि लियो पियरो पत्र ॥ ७५ ॥
 चिंता को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मिक राहु
 कुल कान वन मिले मुई यह वन ॥ लि
 खि तुम्हें नंदलाल जो सोचिती कहवा
 न ॥ ७६ ॥ चित्त के लहरा ॥ दोहा ॥ नो
 विचार संदेहते सोचितर्क यह चनि ॥ मि
 अंगुन तेन है जही चिंता मनिन अपा
 नि ॥ ७७ ॥ संगी पन आकार कोर अद
 हित्य वधानि ॥ प्रकृति तजि वह और
 को कवि को कथन सवानि ॥ ७८ ॥ जान
 लो का अलि न लागि कोन लहर को
 न ॥ दोहा ॥ रवै है गय कहा मोदी मोन
 ७९ ॥ व्याधि विदोरा ॥ दिक्कन देह सता
 दिक्क निरधारि ॥ कंप ताप भूषा दूत २
 आदिक यों जनिहारि ॥ ८० ॥ सैया ॥
 काहु की बात सुनै न काहु न कहै कहा
 चित्त के बीच विचार ॥ नैन निरीर भा
 रासे भिरे कछु अंगन हं को नानि सं-

मिशन

माल

माल

माल

माल

माल

मारे ॥ गान लगे विरहा नल भूवन भोज
 न भूवन भोज विमारे ॥ संहर रोसे भजन
 नंदन वाक्वाता मुख चंद निहारि ॥ ८१ ॥
 दोहा ॥ भनके भम उनमाद काहि कोमल
 या दिव जात ॥ विन कारन रोदन हल
 कार्य अनर्थक बात ॥ ८२ ॥ उच्छ्रानति रो
 वनि लखि रहति दमान कहति कोपान
 या ऊपर अद और काछ लोन दोऊ जे
 लाल ॥ ८३ ॥ जहां उपाय अभाव ते दान
 चित्त को भंग ॥ सो विधाद लखना मुख
 बहत तापके संग ॥ ८४ ॥ संवया ॥ सोहि
 काछु नहि मूमि परे दग देखत ह दिन
 होति अंगारी ॥ केसे बचौ इहि आगि
 नौ चहु और लगे निमि चंद उज्यारी ॥
 सीरे उपाद चलेन काछु विरहा गिनि
 व्याधि बदे अति न्यारी ॥ होइ हों कौन
 उपादु रचौ यह जानै को प्रेम की पीर
 पियारी ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ तरुनि वदन विधु
 सांचु निमि आगम राचि अधिकात ॥
 पात होत पति संगते छूत छवि छुटि
 जात ॥ ८६ ॥ उत्कंठा लखना ॥ दोहा ॥ अ

भिलखिता रथ लामें नहि बलव सहि
 जाइ ॥ उत्कंठा जामें काछु अकलता अ
 धिकाइ ॥ ८७ ॥ दुल दिनके किछु या वज
 न थरमें इत उन जान ॥ जेयां बं होइ वि
 लव अति त्यो लो अति अवनत ॥ ८८ ॥
 रोना दिवले होत हें विरता ॥ जहान ॥
 स्वच्छंद रचनादि को हें चापन निदान ॥
 आनि दिग छूति ससन हसत रान निहारि
 खका पल अति मर दूकी छुं छुं वीली नारि
 इति श्री चिंतामनि विरचिते कविवर्य तरेषु प्रकर
 दोहा ॥ भाव हाव साधु ये कुहेला धर्म
 वखानि ॥ नीला और विलस काहि पुनि
 विच्छित्त सोमानि ॥ ८९ ॥ विभ्रम किल किंचि
 त काह्यो मुहा यत पुनि आनि बहुरि कु
 टुं वित बरिगये पुनि विंवोद वखानि ॥ ९० ॥
 ललित कुत हल चकित कन समुभि
 विहृत अरु हास ॥ चेष्टा अरु दस मानी
 या शृंगार प्रकास ॥ ९१ ॥ जो इतीप केन्द्री
 यके साहित्य दर्पन माह ॥ दूर रूपक मह
 काम कहे विश्व नाथ कवि बह ॥ ९२ ॥ जो
 वनमें सन्यस कहत अलं कर र वीस ॥

विमल

अनुमति

विमल

अनुमति

अनुमति

दस रूपक में तिन काँह सुनहु सुकवि स्या
 दस ॥ ५ ॥ साहित्य दर्पण में कोहे आठ और
 र अधिक काहु। विश्व नाथ सत कवि कह
 त ते अब सुनहु बनाहु ॥ ६ ॥ भाव हाव
 हेला प्रथम तीनों सूके जानि ॥ सोभा कां
 ति कही वहुनि हीपति और वखानि ॥ ७ ॥
 पुनि साधुर्य प्रगल्भता ओहा रजगानि
 और ॥ धीरे सात अक्ष नाम यह कहत
 सुकवि सिर भौर ॥ ८ ॥ लीला और वि
 लास कहि पुनि विदिति बयानि ॥ वि
 भ्रम किल किंचित वहुनि सुझायत पुनि
 जानि ॥ ९ ॥ वहुनि कुट्ट मिते वरनिये पु
 नि विवोक्त विचारि ॥ चिता मनि कविक
 हत यो सज्जन लेहु विचारि ॥ १० ॥ ललि
 त विहृत दस स कोहे स दस रूपक माहु ॥
 आठ और वरने उतै विश्व नाथ कविना
 हु ॥ ११ ॥ तपन मुग्ध विक्षेप पुनि वहुनि कु
 त हल मान ॥ हसित चकित अरु काल
 पुनि अष्टा दस स जानि ॥ १२ ॥ दूत प्रता
 प सटीपके कोहे अठा रह भेद ॥ तिनको
 लखन उदाहरन वरनत सवै अखेद ॥ १३ ॥

है सब जोवन मंथिसे मेनके दोषिका
 र ॥ भाव वरन यों कहत हैं विद्यानाथ प
 कार ॥ १४ ॥ कोकिल कूक सुने ओम
 न स पीछे लिप्योहे ॥ दोहा ॥ भूवेनादि
 विचार जो कछु उपजै मन माहि काछु
 सलस्य विचार वह भाव हाव है नाहि ॥
 १५ ॥ हों निकारो दिग है सुयो अंगन पु
 लक जनाहु ॥ * ॥ हेरि विहारे दान सों
 चली बाल सुन क्याहु ॥ १६ ॥ जहं देह
 दृग भौंह मुख दुगित अति अश्रुकात ॥
 अधिक प्रगट मन भावते हेला सो क
 हि जात ॥ १७ ॥ शब्देया ॥ करसों कर जोरि के
 आनन बंदु को वहु लता पर वख कर ॥
 अगिराइके अंग दिखाइ दूर मम मोहन
 को सुसक्याइ हरे ॥ मृग लोचनी नैन वि
 लासनि सों पियके हिय भीतर मोद भरे
 मन मोहन मोहन भाव नही सी कुलावे वि
 ला सिनि कुंज चरे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ विना वि
 भ्र खन मधुरता सो साधुर्य वखानि ॥ स
 कल अवस्था में सदा लोसे छविन की खा
 नि ॥ १९ ॥ कवित ॥ ओठ मनो रधि विंय प

सांघि

श्रु

तिहार

क्यों मनो शर्मिनि दीपति अंग निहोरे ॥ *
 वार वडे वडे नैन लसें मनो अंगुलि पातनि
 भोर सुधारै ॥ पून्यो निमाके काहानखता वलि
 में मन में यों विचार विचारै ॥ स अकलंक
 मयंक मुखी तैरे अंग दिना ही निगार सिं
 गोरै ॥ २० ॥ धर्म लहरा ॥ दोहा ॥ काला मिला
 दिक भाववन सोधीरज मन आनि ॥ पिय
 को जो अनु कारन हो लीला नाम वावनि
 २१ ॥ कविता ॥ पीरी पीरी होति लागे मरु
 मित्र थारि सीरी पीरी चंदाकाहुं पै अन्तर
 चिन राखे ज ॥ चिंता मति कहै मोहि तन
 मात व्याहि देदु देवतानि सेदु एहो वात अ
 भिलारै ज ॥ खान पान छोड़े निज देह नम
 स्हारै वह काहं सो वात निज मन की न
 भारै ज ॥ २२ ॥ सेसो हाल करि वह विरह वि
 हाल लाल केह काल वाल काल कान पै
 न नाखे ज ॥ २३ ॥ लीला को उदा हरन ॥ *
 कविता ॥ सांवरै स्वरूप में मरान मन सुगने
 नी मरा मद अंग राग अंग में धरति है ॥ २
 वरह मुकुट धरि तन पीत पतकरि ललि
 त लकट हाथ दिग दगति है ॥ चलि च

मगन

द मुखी मंद समद गयंद गति मोहि वें काहे
 मन मोदनि भरति है ॥ छविनि वीरानि पे
 म छवि यों छवीली दान्ह राधिक तिहा
 रें गनु वारन करति है ॥ २४ ॥ दोहा ॥ योरे
 ही अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 विनि तन वानि यें काहन सुखावि स्व कोद
 २५ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 २६ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 २७ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 २८ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 २९ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३० ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३१ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३२ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३३ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३४ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३५ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३६ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३७ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३८ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ३९ ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग
 ४० ॥ काहे को अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग

सी चारु चंद्रिका बाहिर निकलति है ॥ सुरा
लोचनी की वह कछू आचानक दंसि है
कै सरनि मेरे मनमें बसति है ॥ १७६ ॥ विभ
म अक्षरा ॥ दोहा ॥ आनद अंग आभार को
अंग अंग आवेस ॥ त्वरित समै विभक्त
है वरनत सुकावि सुरस ॥ १७७ ॥ संवेया ॥ देख
त कौन हमे अवलोचि थो आली कहाय
ह वेख किये है ॥ को करि दे कित जाये च
है मन मोहि गये चहि भाति लिये है ॥
नूपुर हाथन पावन में पहंची पाद कर
लपेट लिये है ॥ तेरे कहा उर नैन मह उ
र अंजन ओठन बीच दियो है ॥ १७८ ॥ दोहा
कोथ आसु अरु हास भय आदिवा नह
इक वार ॥ कालि किंचित तामें काहत
व कावि बुद्धि विचार ॥ १७९ ॥ कावित ॥ दंपति
अनूप वैस सुरति अरंभ समै ते दोऊ रस
रति मेन सर सति है ॥ तरुन चढ़ा दू त्योंरी
भूटे भाभि कोर कंप मनि मन छुति या
की छुनि सुख निहै ॥ वहिया गहत पिय मा
न तिन प्यारी भारी कोपते निहारि देदे
नैनन करति है ॥ १८० ॥ नहि यां करति नीदी

खोलाति नवेली बाल रोवति रिमाति अर
साति मुसक्याति है ॥ १८१ ॥ दोहा ॥ जहं पि
यकी बातें सुनात भाव प्रका सित होइ ॥
ताहि कुद मित कहत हैं यों वरनत सब
कोइ ॥ १८२ ॥ संवेया ॥ कान्हके रूप को पावे
नवे विधि कोटि अन गन कोप विचारो
मेरे कदो सुनि कै उत जैसी भई वह वं
सीज आपु निहारे ॥ रोम उठे दृग मूढे से
नीर सों कीन्हो बधू मन मोह विहारे ॥ सो
हि गढ़ मन मोहन ज मन मोहन मोहन
मंत्र लिहारे ॥ १८३ ॥ दोहा ॥ पिय कर तन म
रदनहु मन सुख पावे वर नारि ॥ फिरि दृ
ग मिर कंपन कोरे सो कुद मित विचारि
॥ १८४ ॥ कुद मित को उदा हरन ॥ संवेया ॥ क
छु देखति चिबहु त्यों जित में तित अन
अकेलि ये ठाढ़ी भई ॥ विहसो हैं से नैनान
से ननिमों सनकी सनि पीति भई जु नई
कुच गाढ़े गह्वी वार ओचक में भाभा
कारत हाथ अनूप भई ॥ हिय पीरी वहेति
य पीर जनाइ कछू सिसकी मुसक्याइ ल
ई ॥ १८५ ॥ दोहा ॥ ईदहु को अप मान जो क

रे गरवगहि नरि ताही को विवेक तहं वर
नत सुकायि विचारि ॥ ३८ ॥ सवेया ॥ वर
उठौ नमो हीट भये लगे जोरन जो अखि
या न हठाई ॥ यो सो सुनो दुहु वंसकी पी
ति सुलासि वंसकी रीति लिहाई ॥ सा
खनकी न निहाई अथो मुख लागे जूमो
गन ओठ मिठाई ॥ रे सुनु दोरा जसो म
तिके अव होइते आजते दीठ दिठाई
॥ ३९ ॥ दोहा ॥ ललित अंग विन्यास जो
ललित कह्यो सोइ ॥ चिंता मनि वायि
कहत यो सुनो सुकायि सब कोइ ॥ ४० ॥
कावित ॥ रासको बिलास देखि चिंता म
नि धुनि सुनि मेखला की भानक नूपुर
विछियानकी ॥ चंद्रमुखी चंद्रिका पला
री आनि आवानि में देखत जो धन्य दसा
ताही के लियनकी ॥ तुम्हें देखि प्यारी ऐ
सी मगन भई है जाते दरि गढ़ है त
नी आशिया लियनकी ॥ देखो लाल ल
लित छवीली ऐसी नीवो चली आव
ति जु फीकी कोरे दीपाति दियनकी ॥ ४१ ॥
कुत हल लजन ॥ दोहा ॥ रास वल्लो

खन की जो चंचलता होइ ॥ तारा सुवह
ल वरिणये यो वरनत सब कोइ ॥ ४२ ॥
कावित ॥ वाजे जव वाजे महा मधु नगर
कीच धुनि सुनि नगारे की भलल ल अकु
लाइ है ॥ पौली मह लानि मनि मेखला भ
नक संग महा मनि नूपुर निनहन की
भाइ है ॥ मरि मरि नरान जो बोलि मरि नी
त हो सुखत निकसि गंध दूत न छाई
है ॥ ४३ ॥ पदिवे उजासन जो भूखम पखन
को पाइते मयका मुखी देखनको आई
है ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ पीतम की आवे काइ भ
य संभु मज्जा होइ ॥ चिंता मनि तमो चिक
त वरनत है सब कोइ ॥ ४५ ॥ नि संग सो
भ अचानका गरुड दाह का गहि ॥ स
खी चवित अतिही भई अंकलोचन
न चाहि ॥ ४६ ॥ बोलन हके समय में लाज
न बोलन देइ ॥ विहृत कहत हैं गहि सों
चिंता मनि गुर सेइ ॥ ४७ ॥ सवेया ॥ पग
भूमि लखे वह दाठी ही द्वार किलोवात मो
ह हिये उलही ॥ विह सों हैं सेगल कापो
ल किये सो सुकोचन लोचन नाइ रही

मेखला

उधर्यो अथर लगी बोल कहू पर आयो नवी
ल यों लाज गही ॥ सुधि आवत ही कसकै छ
तिया जो कहू वतिया वी तिया न कहि ॥ ४७ ॥
दोहा ॥ जोवन के आगम समै विन का जहि
जो हाम ॥ हंसति नाम सो तियन को लसत अ
नूप विलास ॥ ४८ ॥ उवन चहत जोवन समी
प्रगट्यो हाम प्रकास ॥ लो नीके आयो माल
कि नैननि ललित विलास ॥ ४९ ॥ रूप भो
गता पुण्यते सोभा अंग सिंगारि ॥ मनमथ
उत्थापित सुतौ कंति कहति निरधारि ॥ ५० ॥
कंतिहु को विस्तार वो सो दीपति पहि चा
नि ॥ चिंता मनि कवि कहत है रस रंजन को
जानि ॥ ५१ ॥ सोभा कांति दीप प्रमाथुर्य को
उदाहरन ॥ कवि ॥ वैसकी उठोन ठोन रूप
की अनूप कान्ह अंग अंग औरे कछू वो
प उल हति है ॥ चिंता मनि चंचला विलास
वो रसाल नैन भदन के मद और आभा उ
म हति है ॥ कुंदन की वेली सी नवेली अ
लवेली वाल केतिक गरव की सो गौरता
गहति है ॥ उमकि भरोषे तुम्है चाहि वे कौंच
द मुखी द्योसहू मै चंद्रिका पसारति रहति है

५२ ॥ संभ्रम ॥ संभ्रम को साहिजो सापा
गलभवरवानि ॥ चिंता मनि कवि कहत है
सुकविलेहु पहि चानि ॥ ५३ ॥ अलि गित
अरु नाह कौ आलि गन कौ ॥ चुवन
चुवत जो तिया पियहि दास करि लेत ॥ ५४ ॥
सदा विनै जो नारि मै ओदार कहि सोद ॥
ताको देत उदा हरन सुकावि सो सब को
द ॥ ५५ ॥ वह मैरी मृग लोचनी अत उठि दे
खात दोष ॥ परम सरल मति सुंदरी का वह
करतिन रोष ॥ ५६ ॥ उवरे जो रहित्य दर्पन
के भेद तिन को उदा हरन ॥ ५७ ॥ पारोश्व
र को विरह ते तन संताप जू है ॥ तपनिका
हत है ताहि सो विश्व नाथ का कोड ॥ ५८ ॥
सवैया ॥ वामनि मंदिर को छंद छपा
कारकी छवि पुंजन पोख्यो ॥ मादू के स्व
त मनो हर चांदनी चापुलै मै महा बल रो
ख्यो ॥ सुंदरि के मुख चंद को छंद चकोर
न चंद मयूरवन चोख्यो ॥ चंद्रसिलानि ते
नीर भाख्यो ॥ सवै तिय के विरह गिनि सो
ख्यो ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ पीतम को ख लोकि को
रहै जहां नहि जान ॥ उपज छिप तहां व

र नत सुकावि सुजान ॥ ५४ ॥ सवेया ॥ लो
ग लखै नंद लाल विलोकत बाल कहा
यह हाल भई है ॥ तोहि विलो कत मोहि
महा दुख मोहि कहा इहि भांति गई है ॥
आनि थरी दिग में गगरी अपनी कत
र यह छोड़ि गई है ॥ ताहि कहा मयो मे
रो अरी गगरी सिर छूछी उठाव लई है
॥ ५५ ॥ मद को उदा हरन दे आये है संचारी
वन में सोई जानने ॥ दोहा ॥ तामो कहियत
मुग्धता कवि जन मन में आनि ॥ जहां पी
व सों जानि तिय कहै आपनी बानि ॥ ५६ ॥
सवेया ॥ हूं इनको विवहार लख्यो महि
मंडल और पवीन कहाती ॥ हूं उतै उतर
दे को सके कहै बात सखी इन्हें कौन स-
काती ॥ कौन फलै विटपी मुकता फल
बोलो हहा कहि यों मुसकाती ॥ जावै जेवै
पियके निकटै तवहीं एषट्जो अज्ञान
है जाती ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ नायक के संग रे
लिवो कोलि कहावै सोइ ॥ विश्व नाथ को
मत कहत समझ लेहु सब कोइ ॥ ५८ ॥
भूलति नभ दामिनि वधू जलद भय वृज

राज ॥ कान्ह कुवर की वीकी कहा बनी
छवि आज ॥ ५९ ॥ इति श्री चिंता मनि
विर चिते कवि कुल कल्प तरो सप्तमं ॥

प्रकार राम

दोहा ॥ जामे थारु रति सुतों मनकी लगन
अनूप ॥ चिंता मनि कवि कहत हैं सो भुं
गार सहस्र ॥ १ ॥ सुतों एक संजोग है विपु
लंभ कहि और ॥ दिविधि होत भुंगार यों
हरनत कवि सिर मोर ॥ २ ॥ जहां दंपती
पीति सों विलसत रचत विहार ॥ चिंता
मनि कवि कहत हैं यों संजोग सिंगार ॥ ३ ॥
संगाले उदा हरन ॥ कविज ॥ कंचन की सा
कारन संजुत ललित मंच नग जडित जा
मे उलहै मरीचवर ॥ वैठी पारा प्यारी सं
ग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अं
गन विलास है अनंग सर ॥ कोरु मृगनै
नी लिये हाथ में चमर चारु काहू के ज
रु रजै पानन कोडवा कर ॥ निरमल
मनि मय महल में खेलै चंद्र ददनी सु
लावै लाल भूलत हिडोले पर ॥ ५ ॥
तीसरो उदा हरन ॥ सवेया ॥ चंदिका सो

थकियो सिंगरो जगसोथके ऊपर दंपति
 सोहैं ॥ दूथके पोनसी सेजके ऊपर रूप अ
 नूप प्रभा मन मोहैं ॥ हूं पिय प्यारीके चा
 रुजुरे दृग दूर दुरेही सखी जन जोहैं ॥ स्याम
 भयो रसि देखि मनो हिय द्वैप्रति पंद जुर
 दूत कोहैं ॥ ६ ॥ कविन ॥ चैतकी चाँदनी के
 थो चंद अव लोकानिते छीरनिधिछिरकं
 पूरन पूर उमगे चिंता मनि कोहै मन आन
 द मगन ह्वैको विहरत दंपती परम प्रेम सो
 पगे ॥ अथ खुली अखियां सुरति सुरवरस
 वस मानौ भोर अथ खुले कमल समै खरो
 प्यारीके सकलतन प्रमजल विंदु सोहैं क
 नक लता मै मुकता पाल मानौ लगे ॥ ७ ॥
 चुवन आ लिंगन हिंदै अदि विविधि विधि
 भोग ॥ चिंता मनि अंगार मै सो रक्के संजो
 ग ॥ ८ ॥ जहां मिले नहि नारि अरु पुरुषस
 वरन वियोग ॥ विप्रलंभ यह नाम कहि
 वर नत सब कवि लोग ॥ ९ ॥ विप्रलंभको
 साधारन उदाहरन ॥ ज्यों ज्यों जलु डगरत
 जलद त्यों त्यों जारात जागि ॥ सम उपाय
 विरहित विरह यह पानीकी आगि ॥ १० ॥

दोहा ॥ सो पूर्व अनुराग अरु मान प्रवास
 वरवानि ॥ पुनिकहिये कहनामक सुजनले
 हु मन आनि ॥ ११ ॥ होइ मिलनते प्रथमही
 सो पूर्व अनुराग ॥ यामे वरनन कारत सब
 सत कवि दसा विभवा ॥ १२ ॥ पूर्व अनुरा
 ग को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत रुधा सी
 तव लगी सब जारात ज्यों आनि ॥ विसेदि
 खा सिनि की भई वह मुरखे सुसक्यानि ॥
 १३ ॥ प्रेम प्रीति अखियान की पुनि मन सं
 गम जानि ॥ पुनि संकल्प वरवानिये पुनि
 प्रवास उर आनि ॥ १४ ॥ वहुरि जारात वर
 निये क्रमता और विचारि ॥ अर्थात् लाज
 को छोडि दो पुनि सज्जन निरधारि ॥ १५ ॥
 पुनि उन माद वरवानिये सूझी और वरवा
 नि मरन अंतकी दशा एकारह संगति सुज
 नि ॥ १६ ॥ प्रथम वरन अभिलाष पुनि चिं
 ता चितमे आनि ॥ वहुरि वरानो गुन काथ
 न वहुरे सुमति वरवानि ॥ १७ ॥ पुनि उदे
 ग प्रलाप गनि पुनि उन्मादे मानि ॥ व्या
 धि और जडता कही मरन अंतमें जानि
 १८ ॥ काहं गंथ करता कहे समंथन दश

भेद॥ दुनके लगवन उदाहरन वरनत सुनो
अरेखद॥१८॥ आनंद सोहरसन जुहे चह
प्रीति सों जानि॥ मन लगान मन संगरा
नि चिंता मनि मन आनि॥२०॥ जुहे म
नोरथ दूष्टमें सो संकल्प वरवानि॥ वातें
प्रिय संमध्य को सो पलाप मन आनि॥
२१॥ संवर तनको ताप गन मूर्ती ज्ञान
अभाव॥ मरन वरन बेनाहिना सोतौ प्रा
न अभाव॥२२॥ नैन गन को उदाहरन॥
दोहा॥ रूप परस पर अटन चिदि निरख
त स्यामा स्याम॥ हिम गिरि कंदर जेठको
भरि दुपहर को घाम॥२३॥ मन लगान
को उदाहरन॥ सवेया॥ उलहे नर नंदन
के तनमें छवि नील घटा घनकी निहरे
विलमें मनि कुंडल कानन में मुख चंद
मथुरा पिपूष भरे॥ अब लोकन कोत
रानी ललकें पहिरे मुकता हल मालगो
॥२४॥ पियरो पट मोर किरीट लमें नटनाग
र मो मन ते नटै॥२५॥ दूसरो उदाहरन॥
सवेया॥ संग सरवीन के आदु गली हंसि
वाल अचा नक को किल वैनी॥ आदु

नैन लगान

गर उत लाल सखी छवि ज्येष्ठ चंद
की दीपति रैनी॥ ज्योंही परे खवार भई
कै करेजे कटाछ की कोरे जु पौ॥ प्रेम सु
था मति याकि गर्द मनि लागई मनमें
सुग नैनी॥२५॥ साफल्य कोहर हरन॥
सवेया॥ जो कवह दृष भान बली काहं
न्योति जसो मति माई वृजो आचि चनि
चित्रित गेह विलो कनि सोनि भोक्के
भीतर आवे॥ मोहि विलो काही हंसि के
भुज चंपक माल गेह यहि खे॥ लाली
रही हिंदरा में यही अव जोहियरा हि
यरा में लगावे॥२६॥ आनि के कवह
यो गली कटि वैया निरखे सुलोना स
को चन॥ ज्यों धरके खरके हयरे ह म
जा नतिहैं मर जादगी सोचन॥ कुंडल
लोलह सोहैं कपो लन नंद लाल लख
ते दुख मोचन॥ पाऊं काहं सख ठौर दु
कांत हों देखी जहां हरिको लोचन॥
२७॥ पलाप को उदाहरन॥ दोहा॥ काहा
कहत कैसे लखे वैयां वोलत नंद लाल॥
पुनि पुनि वातें रावरी यों वृभक्त दृज वा

वैनी

बुलबुल

कंदर

गुल

मथुरा

लाल

कंद

वृभक्त

ल॥३॥ दूसरी उदा हरन॥ संवेया॥ रूप
 नृप वादवके कानन कुंजनि केलि बालो
 ल कलाको॥ काम कारो की सरति स्या
 म की धीरज कोन कहा अवला को॥
 मोर विरीट गारे वन माल विसारि सके
 सरिवर कपलाको॥ मंद हसी मुख चंद
 मनो हर नंदके नंद गुविंद ललाको॥ ३४
 दोहा॥ चंद मंद अनृत सरनि भारत
 मदन अराति॥ मोहन मो अरिबाल लगी
 अरिबाल लगी नराति॥ ३५॥ कृमता को
 उदा हरन॥ दोहा॥ जे कर मूलन मैगडे
 मनि कंकन हैं पात॥ तुझे देखि जानेन
 उन घरहि जात गिरि जात॥ ३६॥ अर
 ति को उदा हरन॥ संवेया॥ तीनों तिलो
 क संधारन अत्र धरे हर आपने अंगस
 हार्द॥ जामे वडी विष मारु हती त्योंही
 ताको दर्द थल माह उच्चाई॥ कंद लिला
 रमै सीस मैई सभ ली यह दाहक पां
 ति वसाई॥ तीरे हला हल आगि कला
 नि में जारे सुक्यों कला निधि मारु॥ *
 ३७॥ वीडा त्याग को उदा हरन॥ कविता॥

चिंता मनि स्याम जके सुंदर वदन परह
 महें विकानी कौन यामै छल छंदुहे॥ क
 हो कुल कानि जाति कौन पै निवाही
 जादू देखतुहे याही ताहि लाग्यो प्रेम
 फंदुहे॥ मधुर कपोलनि मधुर मुख क्य
 नि मारु मधुर विलोकनि मधुर मुख चं
 दुहे॥ जैसे सब कालनि अमृत मय चंद
 ऐसे निभर अनंद मय नंद ज्यों मंदुहे
 ३८॥ मंदर को उदा हरन॥ कविता॥ मंद
 मंदर जल जातन के पातल को है
 जल में बिछे जल जातन के पातलें॥ क
 है कवि चिंता मनि विकल विरहिनी को
 सीतल अपार उपचार अधिकार हैं॥
 चंदन अगर ताके जल की बहार्द नदी
 सिकता बापूर चूर अति अत्र हातें हैं॥ ३
 ते पर प्रति पाल विरह वियो गिनि को
 र पीरे होत येन सीरे होत गातें हैं॥ ३५॥
 दोहा॥ *॥ विमल वदन की अकस ते वि
 रह सहा दूक पादू॥ हनी चंद तीर वनि वि
 रानि परी वाल मुरमादू॥ ३५॥ प्रथम दर
 न अभिलाष पुनि चिंता मन में अति॥

वहुरि वरनि ये गुन कथन पुनि उद्देग व
रवानि ॥ ३६ ॥ पुनि पलाप उन माद मि
लि व्याधि सुजड ता होइ ॥ दसौ दसा स
गनत हैं सुकावि संथ वार कोइ ॥ ३७ ॥ र
म्यो वस्तु अरम्य सम दुःखद यह है जाइ
चिंता मनि कवि कहत है सो उद्देग ग
नाइ ॥ ३८ ॥ वचन अनर्थ पलाप कहि
उन्माद वृथा व्यापार ॥ व्याधि कृश त्या
दिका वरन कवि जन बुद्धि विचार ॥ ३९ ॥
जडता चेष्टा रहित तनु मरन न वरनो
जोग ॥ चिंता मनि कवि कहत यों कह
त संथ वार लोग ॥ ४० ॥ अभिलारव को
उदाहरन ॥ वाकि ॥ नैननि की सुसक
नि अनूप सुनैननि बीच सुधारस नाकुं
या जग ऊपर मैं अपनो यह तो धन
जीवनि भाग गनाकुं ॥ श्री गण नाथ
अभीष्ट के दातहि वार अनेक मैं शम्भु भ
नाकुं ॥ ४१ ॥ वार कहौ जु विलासिन को मु
ख चंद विलास विलो वान पाकुं ॥ ४२ ॥
ज्यों निसि वामर चाहतु वाहि सुतौ काव
हं वह चाह धरे गी ॥ हेरि हसौ हें काटाह

न सो मृग लोचनी सो दिग आनि हरेगी ॥
या निरहे निसा नाथ कीं स धनी रातन के
धन ताप हरेगी ॥ आनन रूप कला कवि
ता निशा नाथ सो मोहि सनाथ करेगी ॥
४३ ॥ संवेया ॥ मोहि कछू नहि देखि परे
दृग देखत हूं दिन होत अंधारी ॥ कैसे व
चों इहि आगि मनो चहुं ओर जंगे नि
मि चंद उज्यारी ॥ सीरे उपाइ चलैं न कछू
विरहा नल व्याधि चंदे अति न्यारी ॥ हा
इ मैं कौन उपाइ कौं वह पावे क्यों प्रेम
की पीर को प्यारी ॥ ४४ ॥ स्मृत का उदाह
रन ॥ संवेया ॥ मो हियते निसरे न सुखों वि
सरे छवि अंता अमोलनि की ॥ मुति में विल
से वर कुराडुल लोल जु मोहत सुन्दर दोलन की
लगी यों नल है लगी संजुत पंकज कांति
कटाछ कालो लनकी ॥ मुस वयानि मैं दामि
नि सो दमकै चमकै मुख ओप कपोलन
की ॥ ४५ ॥ पानीन पीवति पानन खात स
वै तन के व्यवहार निवैरे ॥ सुंदरि तेरे स्वरू
प को सोरत वोलैं वार पचासक टैरे ॥ चं
दिका सी मुख चंद हसी कछू सीरे भये पु

लके तनु हैरे ॥ नैननि नीर भिरानि सरे वि
सरेन विलास विला सिनि तरे ॥ ४६ ॥ ना
थक की रसुत ॥ संवेया ॥ मोही है रवालि गु
पाल लखे दृजकी वनिता कछु भेदन पावे
वोलैत वोल दगी ॥ सी लखे मन मैन के वा
न हियो अकुलावै ॥ रोमनि अंग कंदववा
ली मन में धन रथाम की यों छवि छवै
सोरति मंदकियो हसिके उमरें असुख अ
गियां भरि आवैं ॥ ४७ ॥ गुन कायन ॥ पेरवत
ही प्रगटी मनको मनिवैनी मझ लिखमा
गिनि गार्ड ॥ ताप चढाई गयो निरखे सुर
ची तरुनी मुख चंद ठगार्ड ॥ नील सरोवर
मैनके वानन नैन निहारिके पीर जगार्ड ॥
अगि अंगारके रंगन अंगनि केसी अनंग
की अगि लगार्ड ॥ ४८ ॥ उद्देग ॥ संवेया ॥
मैनके वान गनै विष संजुत वागके फूल
नि भोर विहारे ॥ चंद उतै निसि में लखि
कै कहै जोर जगी जग अगिलि हारे ॥ होत
नहीं कल व्याकुल होत हित उपचारनि
कै पचिहारे ॥ ऐसे भये मन मोहन लाल
विला सिनी बाल वियोग तिहारे ॥ ४९ ॥

ताछिन तोहि विलोकि विलासिनि ताछि
नते कछु ओरन भावे ॥ तेरिये वात सुहा
ति सदा पुलकै कोउ तेरो जनाम सुनावैने
क नहीं कल मोहन लालहि यो सब लंक
मयंक सतावे ॥ तौ बनि आवै जो अनन
तेरो अरी अकलंक मयंक जिअवे ॥ ५० ॥
नाथका को उदा हसन ॥ वीछी को डंक म
यंक किधों आगे लिखेवोहे पलाप ॥ संवे
या ॥ मूरति तेरी मनोहर में रचि बोलत
यों कछु मोहन प्यारे ॥ आवै जरवै ठोकि तै
ही किनै चली भात खले कछु आचु
हमारे ॥ बोलत वरी यह संकगई जोक
है बृदु संजुल नाम तिहारे ॥ बोलत वरी
हो जू वूमै जवै सबवैत कछु के कछु कहि
डारे ॥ ५१ ॥ उन माद ॥ संवेया ॥ माया म
नोज की मोहन के बहुचार रचे बहु रू
पतिहारे ॥ सामुंहे आवति मूरति पैपरि
भनको भुज दंड पसारै ॥ हाहा करै मुख चुं
वन मागे हसोहे कपोल लसे छवि वारे
ऐसे विला सिनी राखे प्रेम पै वावरी सी
है कछु चार हारे ॥ व्याधि ॥ संवेया ॥ जे

मनि कंकन गाढ़े गड़े कार मूलन है छल
काढ़ु निकाढ़ ॥ तेरी भूमि परे नहि जा
नत ऐसी भई तनमें दुवराड़े ॥ नीरीन नै
ननि नीद काढ़ु निमि पीरी कपोलनि में
परि आढ़े ॥ तेरी बिलो कानि पाढ़ु बिला
सिनि ऐसी दसा भन मोहन पाढ़े ॥ ५३ ॥
छूटि गये हसिबो सब खेलि बोलिब को
भयो आचु निवेरो ॥ जान कटून रह्यो
उनको अव ऐसी वियोग की आपदा
हो ॥ अंग अली सहले नचले अनम
खे खट्यो यह साहस मेरो ॥ ऐसी दसा
हुनि मोहन लाल की वैश मन होत द
या लन तेरो ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ कबहु मरनवर
निये जीवन कबहु होइ ॥ तो पुनि वाकी
ज्याइये यों कवि मित्रा कोइ ॥ ५५ ॥ दं
पति की रिस परस पर मानवरवान्यो
जाइ ॥ प्रनय दुर्घा भेद सो है विधि ता
हि रानाइ ॥ ५६ ॥ प्रनय मानलः ॥ दोहा
होत प्रनय की कटिल गति विन कीन्ह
जो रोस ॥ दंपति कोइ क सेज मे प्रनय
मान विन दास ॥ ५७ ॥ संदेश ॥ न मन

दयान
मरन न

दयान अह विचित्र भली है जो मेरी कही
सिख माने ॥ जाहि चहे सो सदा प्रति विं
वित तो मे कहात रहे अकुलाने ॥ बाहिर
कीन सरवाइ कहू जपे अंतरवाहि भ
ले पहि चाने ॥ जो मुस क्यानि में लीन
रहे तो तू आप को ताप काइ नहि आने
॥ ५८ ॥ वात कही अर्थ मन में मुख वाहि
र को हमह को अनाइ ॥ त कोन उत्तर दी
जिये आपु तो होति अनाहि की अधि
काइ ॥ जानि को कोन सो बोलत को जुहे
काह के अंतर की गति पाइ ॥ जाकी चु
भी मुस क्यानि है चाहिय ता सो सुकैसे
कोरेगी सरवाइ ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ प्रनय मान
गत दुहुन को ई था मानतु होइ ॥ सुतो
वरनिये तियन में यों वरनत सब कोइ ॥
६० ॥ और तिया के दोखते कोरे रोख जेना
रि ॥ लघु मध्यम गुरु भेद य मानस त्रिवि
धि विचारि ॥ ६१ ॥ कोतुक छूटत मान ल
घु मध्यम कीन्ह सोह ॥ गुरु छूटत पावून
पर फेर चढ़ति नहि भोह ॥ ६२ ॥ लघु माः
सवेया ॥ मन मान कियो ह थ मान लली

अनते अव लोकात लाल लहे ॥ उत आ
 दू जुरी सरिवयां सिसरी पिय आयां स
 रवी दूक वीज काहे ॥ दूग मूदिर रहे चित
 रजु पै मान लला हसिते दूग मूदिर रहे
 मुस वयादू के राधिका ॥ आनंदसो भुजमा
 लसों लाल लछेद गाहे ॥ ६३ ॥ मध्यममा
 ना दोहा ॥ प्यारीकी पदवी हमे हीन्ही आ
 जु गुपाल ॥ तेरीसों लाईन उर समुभि
 और तू वाला ॥ ६४ ॥ गुस मान ॥ दोहा ॥ हं
 सति कहा सोपे निरखि लखि लखि दु
 नके अंग ॥ नेहे और तिय नेह सों नेह
 हमारे संग ॥ ६५ ॥ सवेया चेतको चंद ओ
 मंद वयारि वहै अति सीत मुगंध भई
 इन ॥ जाको घनो लल चाति होवाल सो
 लाल सलीनो पसो मान पाइन ॥ जोवन
 के दिन पाहुन हैं पछ लाउगी पीछे के
 मेरी गुसाइन ॥ केलि करौ मिलि मोहन
 सों कहा ठीक जु ठानती हो टकु राइन ॥
 ६६ ॥ दोहा ॥ मान हरन के करन को दर
 ने छयो उपाइ ॥ छोड़त इन तेरो सति
 य रोमे सदा सुभाइ ॥ ६७ ॥ माना पुमानो

भेद ॥ दोहा ॥ साम भेद अरु दीन कहि
 चौही पुनितवरवाहि ॥ वहुरि उपेक्षा कह
 तहें फिरि रस अंतर मानि ॥ ६८ ॥ १०
 मधुर वचन सो साम कहि भेद सरवी
 को बात ॥ दान व्याज भूवादि को पुनि
 न करन को पात ॥ ६९ ॥ साभा दिवा वी
 दीनता होत उपेक्षा चित ॥ नारा हरद
 इन अरिह दे कहि रस अंतर मित ॥ ७०
 मम्य पाइ ॥ कावित ॥ वेन सुधा तुही सी
 च विलासिनि मे मन मोद ललानि की
 वारी ॥ मोहि कहा काल हेन कहं मानि
 को पल सक रहे जव न्यारी ॥ मेरिये नैन
 चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद
 उज्यारी ॥ जो कछु जानौ सु जाइ कहोत
 म मेरेहो पाननते अति प्यारी ॥ ७१ ॥ क-
 वित ॥ चिंता मनि जोपे तुम्हें उनसो है रु
 सवेतो काहेको उनको मनु वांछ्यो प्रेम
 फंद सो ॥ वेतो हैं विलखें मुख तुम विनत
 महं तो दुरित हो विरहित आनंद को
 कुंद सो ॥ हमतो जानति सही तुम्हें हैं स
 यान देखो पूरन अयान मान ठान्यो नद

प्रजति

ताम
३५११

नंदसों॥वैतुमसों मिली तुम इनसों मि
लहीरबुल्यो चंदजेसेचादनीसोचादनीज्यों चंद
सों॥चिंतामनि होइ कोऊ नीकी अने
सी कवित आगे लिख्योहै॥दोहा॥सो
तनके कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यो
निदान॥अव मनि एका पर चढ़ी वार
री भोंह कमान॥७३॥दानो पाइ॥कवित
मानसों निहारि छरव भानकी कुमारि
का हिल्याए नंदलाल गंदि कर माल
लीकी माल॥आनि अनवोली केगरे में
पहि राई कह्यो कौ सी नीकी लागी प्यारी
हुति उलही विसाल॥नेक मुस क्वाइ उं
चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग
चिंता मनि यों लखे गुपाल॥चिबुकाक
पोल चूमि चूमि गहि कंठ भूम भूमि हं
सि लाल भुज माल भरि भेटी बाल॥७४॥
प्रनति को उदा हरन॥दोहा॥छोडि मान
पाइन पर्यो जो पिय कह्यो अधीन॥नी
ल कमल से दृगनि में तियके भाल क्यो
नीर॥७५॥उत्प्रेक्षा उदा हरन॥दोहा॥पीव
गयो उठि इकि यो सैंसकाछु बहु मान॥

बह नहि देखति चलो सरिव यह क्यो सहे
गुमान॥७६॥गसांतन॥सदेया॥मान किये
दृष भान कुमारिन सान्यो गुवा रिना भो
र मनार्द॥और उपाइ थके सिंगेर मन मोह
नयों तब बांते चलाइ॥पीछे तिहोरे कहा
ति या कहि जोवतियां मनमें भर माई॥
यां भि भाकी उनको लपकी हंमिके नद
नदन कंठ लगाई॥७७॥कामना तमः॥*
दोहा॥जहां पुरुष तिय जगल में मृत्युए
क की होइ॥पुनि जीवनि की आसमें क
मना तमगन सोइ॥७८॥जोवरनोका दं
वरी पुंडरीक वृत्तंत॥मो कफना तम गनत
हैं सब पंडित बल वंत॥७९॥प्रवास लक्ष
ण॥दोहा॥तन मन होत तियान को ताम
नि पास प्रकास॥पीतमको परदेसको वास
सुवरन प्रवास॥८०॥होनहार अरु भयो
जो द्वे विधि वरन प्रवास॥ताको देत उदा
हरन सज्जन सुनौ प्रकास॥८१॥भविष्य
त प्रवास॥८२॥कौसी करी मनपाए श्री सुर
तोन थरी द्विय हेरि हरेवन॥सोर कियो
न कहा सज्जनी उत हादुर सोर पपी हन

के गन ॥ पावस में परदेस गरु पिय सेतेन
 है कबहु निरंदे मन ॥ आरु नहीं धन स्याम
 थरे कहा देखे नहीं उनर उनर धन ॥ ८३ ॥
 दोहा ॥ प्रथम हेतु अभिलाख पुनि विरह
 रूखा मानि ॥ पुनि प्रवास अस साप पुनि वि
 पलंभ के जानि ॥ ८४ ॥ अभिलाष हेतु ॥
 सवेया ॥ नैननि की मूस वयानि अनूपम
 नैननि बीच सुधा रस नाकुं ॥ ओदन की
 धन राग लखे मन में अनुराग प्रमोद वद
 कुं ॥ यो जग ऊपर में अपना यह लो धन
 जीवन भाग गनाकुं ॥ बार कहों नु विला
 सिनिको मुख चंद विलास विलोलन पा
 कुं ॥ ८५ ॥ विरह लक्षणा ॥ दोहा ॥ गुर जना
 दि पर तंत्र जह निकटहु मिलनम होइ ॥
 दंपति को बुध जन कहत विरह कहा वत
 सोइ ॥ ८६ ॥ ललित कथा निसि केलि की वि
 रह जलधिको सेतु ॥ होत दुहुन को द्यो
 समें नख पद पदको हेतु ॥ ८७ ॥ सुंदरि
 निरमल सौध गढ़ सरद चांदनी राति ॥ २
 कौं रूरी पिय सों अरी मिहरी मूरख जाति
 ८८ ॥ प्रवास हेतु ॥ दोहा ॥ मोहि तोहि चानि

क कहा जल थर जीवन देते ॥ पीउ पीउ रटि
 रटि मौर निरु कहा सुधि लेत ॥ ८९ ॥ सेपहे
 तु का मेघ दूत मै ॥ दोहा ॥ विनिात औदित
 वचन जो औग वे च कछु होइ ॥ ताते उप
 जत हाम्य जो वरनत हैं सब कोइ ॥ ९० ॥
 वचना दिवो वंदन निरखि वीत ज चित्त
 विकास ॥ विरह वहे देखि कै वाइत सु का वि
 जन हाम ॥ ९१ ॥ हारि यतु आइ भाव जित
 नतौ हाम रस जान ॥ चाते उप जत है नैन
 आखन पहि चान ॥ ९२ ॥ नैन नतौ
 कहत बुध दीपन दूत को होइ ॥ अनुराग
 सम आदि पुनि मंचारी सो होइ ॥ ९३ ॥
 सौमि त आन हसित पुनि काहे ये अंश विच
 रि ॥ ओर अंगन में उद्व दित न आरु अथ हसि
 त निहारि ॥ ९४ ॥ पुनि अति हासित कछु विदु
 सुख दे है भिन्न गनाइ ॥ उत्तम मध्यम अ
 थम जन गतर सम भा वनाइ ॥ ९५ ॥ विमत
 वाहि विव सित दृगन कछु लख पंर ज
 हंत ॥ कहत सित उत नैन के धे वदन त व
 ध वंत ॥ मधुर सुखर विह सित सरः अंश
 उद्व सित जानि ॥ मध्यम नर नर दान के

सुधि ले
 विप्रा

पु नौ

ये हे भेद वखानि ॥ आसुन जुत कहि अपहसि
त बहुरि अपति हसित जान ॥ तन परसे पुह
मीत ले एअधमन के मानि ॥ ६७ ॥ सेतव
न यह प्रथम पति देव नहां सब खानि
याको देत उदाहरन सुकावि लेहु मन
आनि ॥ ६८ ॥ सदैया ॥ आरसी देखि जमो
मति जमो कहै सुत रात यों बात कहे
या ॥ वैठे ते वैठे उठे ते उठे अस कूदे ते कूदे
चले ते चलेया ॥ बोलें ते बोलें हम ते हमें मार
जेमो करौ त्योही आपु करेया ॥ दूसरी
कोत दुलारे कियो यह कोहे जू मोहि
खिभावत भेया ॥ ६९ ॥ दृष्ट ना सकि अप
निष्ट की आगम ते जो होइ ॥ दुःख सोका
याई जहां भाव करन कहि सोइ ॥ ७० ॥
आलंबनिग सोक इत ताकी दाह क्रियादि
उही पन अनु भाव गति रोदन भूपातादि
॥ ७१ ॥ निर्वेदा दिव होत हैं जामे बहु विधि
चारि ॥ ते सब अपनी बुद्धि बल लीजे विव
ध विचारि ॥ ७२ ॥ यह कवार खारस कहो
जमै देवत जहं जानि ॥ याको देत उदाहरन
सुनो सजन मन आनि ॥ ७३ ॥ कविज ॥ २

सीसी भांति राम सब नीतको प्रकर प्रद्यो
भरत सुनायो रोइ पिताको मरनै ॥ विह
ल अंगन ते अचेत ह्वे गिरें भूमिमाइ दु
नको गन देख भयो अस रन द्यते रही
वियोग ते तिहारे पिता पान तजेतुमको
धराको अव धीरज धरन है ॥ ७४ ॥ सुनते
ही राम सुनो सब जग लख्यो की समे
ह्वे गयो वदन विवरन है ॥ ७५ ॥ देही रो
वै तीनों भाई लगे रोवन त्यो जमी रघुना
थ एवचन मुख वादे हैं ॥ रोवो जिन को
ऊ कहा तुम्हें कौन दोसु राज से काज प्रा
न तजे मेर पान गादे हैं ॥ तमह कूते दिग
जीवें वाहो कौन भांति मैतो सुनन जिन
आगह नठा दे हैं ॥ ऐसी बातें कहै कहि भ
रत सो रोइ राम नैन जल जनते विपुल ज
ल वादे हैं ॥ ७६ ॥ भरत वचन बेलो एअ
वह तू कहा उठो तीनों जने चलि उदका कि
या करौ ॥ लखि मन सीताको क्लोकि की
ह्यो ऐसी भांति अव उठो चले धीरको
रो ॥ साथमे सुमंत आए भाइ सब मंदा कि
नी जल क्रिया करे भरे असुख सो गरो

प्रकार ?

यह

५५

पुनि गिरि चदि आए उट जके द्वारमे पुका
रसल रोसा संसार की दसा जौ ॥ १०६ ॥ *
होहा ॥ अरि विरचित अप राधेते चित्त
प्रजलन जोष ॥ सोपादे जित रौद्र सों व
रनत निर्मल जोष ॥ १०७ ॥ आलंवन अ
व वरनि ये उदीपन मन आनि ॥ ताके जे
आचार सब बुध जान लाखत वरानि ॥ १०८ ॥
भृकादि भंग दृग अरान अर अथर देव
इत्यादि ॥ अर वरनत अनु भाव एवमि
चारी बुल्यादि ॥ १०९ ॥ अर वरनत अनु
भाव ॥ होहा ॥ रक्त रंग रुदाधि पति सों
दू वरानो जाइ ॥ ताको देत उदा हरन सु
कवि सुनौ मन लाइ ॥ ११० ॥ यनादारी ॥
काह्यो अर अरु गाननको गनत छिन स
कमे त्वत्त तप सीन मां ॥ अरानि पारे
सगल छेदिन भक्तारिकों समार मे सची प
तिकों संधारौ ॥ मीचुको गीतु सनिहत
कार सकात हो भुज नयन पुलक पट्टे ज
खारौ ॥ भक्त वैमान कुरार ह मार हें उत्तम
निमित्त तिनको विचारौ ॥ १११ ॥ अत
अपाव अकास थूरि पूरन सत गा करि ।

अह निशि वामर हंड चलिथ उदाहर प
थरि ॥ दिक्किम पूरन विपति तेकिम न
के देसहि ॥ चलो रजारी रंकादोरि रौलके
राहि ॥ वित्त मनि वल गन करन स्ववल उ
ह अह समार ॥ अरि प्रवल हिन का
धिसन जलनीय पदु न्यो दक्षिण वनधि
तर ॥ ११२ ॥ जो भो को नरन जौ थि
पुनत उदाहर ॥ सोपादे पादे हारकी
र कल कवि नाह ॥ ११३ ॥ जेन वनान
पुन ॥ को दैत कोहु ॥ उही फल
दि पुनि संधारि दूत सोइ ॥ ११४ ॥ अर वर
आचरन जो सो गानिये अनु भक्त ॥ दान
धर्म के रुद्र के दयासु आनि ॥ ११५ ॥
उंद देवता कलक सम वरन सुको जानि
उजम नावक वि अम जइ भाइ सुको व
न आनि ॥ ११६ ॥ अयावदि नन के कछु
बुध जल बुध वल जानि ॥ नन के त उदा
हरन सुको दैत नो मन आनि ॥ ११७ ॥ जइ
दीर को रुद्र हरन ॥ यनादारी ॥ अर गिरि
हरी वन लखन ले जानि किहि सम जू क
वचनित अंग कीन्हो ॥ दिव्य नीर से

हैं सुभग अंग मौरुचिर रघुवीर कर चाप
लीन्हो ॥ कियो धन गरज धन थनुष र्त
कोर असु ललित मुख हरष भलवयो न
वीनो ॥ आहु भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व
जैबोलि रघुनाथ को विजै दीनो ॥ ११८ ॥
तवै धरको पकारि आप आयो उतै जितै
सर चाप धरि राम राजें ॥ संघाले सधन ध
न संघ समरहगन तिष्य तम शास्त्र वरखा
नि साजें ॥ परस तिसूल आस पास मुद्गर
रविपुल असनि सम राम पर डारि गाजें
समुद्र ज्यों आप गावेग सहि आपु धनवे
ग सहि छविन रघुवीर राजें ॥ ११९ ॥ *
राम भुज हंड पाछे लिरव्यो है ॥ दानवीर ॥
कविन ॥ करिये लखन अभिषेक विभीष
न जूको लखन विभीषन को कीन्हो ॥ अ
भिषेक है ॥ वडो सुख पायो वानरन रीछ
राकसन भयो मनौ सवनि सुर ससेकु है ॥
ल्याए राम जूको साध मोदक अछत राज
मंडलकी साज भयो उदव अनेकु है ॥ रा
वन संघारौ राजु दियो विभीषन को ज
गत सरा ह्यो रघुनाथ को विवेकु है ॥ १२० ॥

परम अपार भवसागर उतारि वेको ॥ पीछे
लिरव्यो है ॥ कविन ॥ अवधानि थट नंद गा
उकोस स्वक पर निरख्यो कारवाए पटधा
रीसोग साथको ॥ चिंता मनि कौहे मृग चर
म जटानि धरे मुनि वेध जगत अभय क
र हाथको ॥ वंस अलं हत करि आपने
चरित्र सत्यकारी भागी रथ आहरन गाथ
को ॥ जाइ हनुमान देख्यो धरम वृत्तन धरे
पेख्यो है भरत उत भैया रघुनाथको ॥ १२१ ॥
दयावीरको उदाहरन ॥ दोहा ॥ इंदु कह्यो म
न मोद धरियो सुनिये श्रीराम ॥ कौमि-
ल्यास प्रजा भई पाइ पूत गुन धाम ॥ १२२ ॥
इंदु कह्यो अव माग वर यों बोले दूत राम
वै जीवें कपि रीछजे मरे महा संगनाम ॥
१२३ ॥ जे फल मूल अकाम हं पावें वानर
वीर ॥ होइ विमल वैसवसदी विलसैं जिनके
तीर ॥ १२४ ॥ इंदु कह्यो है है इहै राम तिहा
रेहेत ॥ सने कहू संसार मे जीवत काह परे
त ॥ १२५ ॥ है है सब जो चाहियत यों कहि
गयो अकाम ॥ सबके देखत रामरभै वरस्यो
अमृत प्रकास ॥ १२६ ॥ पसो न राकस लोथ

पर कछुं अमृत को विंदु ॥ मोह गयो मृत क
 फिन को उयो ज्ञान को विंदु ॥ १२७ ॥ उठे न
 जिन विन कापि सैं जग दूरवर भगवान
 दस रथ नंदन रामजी कारे अलौ किको
 न ॥ १२८ ॥ रौद्र वित्त भव चित्त की विक
 लता भय जानि ॥ सो यामे आई सुरस भ
 यान कहि पहि चानि ॥ १२९ ॥ जाके उप
 जत हैं सुरे से आलंवन जानि ॥ ताके द
 शित जे कहू उही पन जानि ॥ १३० ॥ वै
 र्णा दिक्क वने स जाके वृत्त अनुभाव ॥
 शंका भांता दिक्क कहै संचारी गनाव
 ॥ १३१ ॥ काल वरन याको वरन काल देवता
 मानि ॥ याको देत उदाहरन सुकाविलेहु
 मन जानि ॥ १३२ ॥ भया नक को उदाह
 रन ॥ अति अनीत राकसी मर्यो राम विम
 रो गात ॥ भजे कलिंगाधिपति के दोर उ
 तारे दंड ॥ १३३ ॥ दी भस्मिल लहरा ॥ दोहा ॥
 हेरवे कुस्मित बाल को विनिजुग सा जा
 ने ॥ सोहै आई भाव जित सो वी भस्म
 खानि ॥ १३४ ॥ रुधिर मास दुरगंध अरु अ
 लंवन मज्जादि ॥ महा बाल पति नील

ग उही पनक्रम आदि ॥ १३५ ॥ अपस मा
 र आवेग अरु मोहा दिक्क जामि चारि ॥
 वरनत रस वी भस्म मै सज्जन लेहु वि
 चारि ॥ * ॥ १३६ ॥ कवित्त ॥ * ॥ विपु विपु
 ल निश्चर वानर वपु विवात ध्यान रन म
 डल खंडिय ॥ सज्जन गज उल लतन
 कजनु निरखि रिक्त पति माहस छे
 डिय ॥ सगर भीम परतुरत वेगि उठि
 भिरत रुधिर जल सरित उमंडिय ॥ *
 दाल कल भुज खंड मल रस सिक्ता
 अस्थि मुसल शिल कंडिय ॥ * ॥ १३७ ॥ *
 दोहा ॥ निरखि अलौ किक वस्तु जो
 होत चित्त विस्तार ॥ सो विस्मै आई जि
 तै सो अद भुत रस सार ॥ १३८ ॥ वात अ
 लौ किक जो कहू सो उही पन जानि
 महिमा जाके गुनन की सो उही पन मा
 नि ॥ १३९ ॥ आलं वनगनि वस्तु जो वरन
 अलौ किक सोइ ॥ उही पन ता गुनन
 की महिमा जो कहू होइ ॥ १४० ॥ नेत्र
 विकासा दिक्क जहां वर नत हैं अनु भा
 व ॥ हर्ष वितर्का दिक्क इतै संचारी स

मुभाव ॥१४१॥ पीत वरन सो वरनिये म
न मय देवत मानि ॥ याके देत उदा हरन
मुकाविलेहु मन आनि ॥१४२॥ कवित्त ॥
वाल पन कोसिक के मखके विधनक
र निसा चर सोरे सिलाप गरज तारी
है ॥ गरु हर चाप तोरौ वाप सत वैन
कीन्हो कानन सिधारे राज सिरो नानि
हारी है ॥ वाली मारौ महा वली राक-
स संधारे पाति रावन के भुज दंडुन
की मही पर पारी है ॥ दीन्हो निजु था
मल अवधि दया निधि को अवधन
रेस राम अवधि उधारी है ॥१४३॥ कवित्त
कोमल करकमल कर काम गिरि ते
उतारि धरि लाल भेरी मनु अकुलातु
है ॥ जीवैगो सो जीवै जो मरेगो वहु मरे
सोमों कैसे निजु बालक कलेस देख्यो
जातु है ॥ मेरो कह्यो करन तो निवारिम
रोगी कहि चली जहां कर का सिलानि
को निपातु है ॥ जहां कंदे गोपी गोपग
न संग नंद रानी तहां
चल अधि कातु है ॥१४४॥

॥ दोहा ॥॥ सम कहियत वैराग्यते नि
र्विकार मन होइ ॥ सो थार्द जित सां ल
स वर नत हैं सब कोइ ॥१४५॥ कुंद बुंद
सम धवल यह श्री नारायण आप ॥ या
रसके अधि देवना जे भेदत सब ताप ॥
१४६॥ आलंवन संसार के निश्चित सत्
वरवानि ॥ के पर मारथ अरथ जो सो
लंवन जानि ॥१४७॥ पुन्या प्रम हरि से-
न अरु तीरथ रम्य बनादि ॥ ताके उद्दीप
न गनत महा पुरुष संगदि ॥१४८॥
पुलका दिव अनुभाव गानि संचारी ह
र यादि ॥ सकल साधु सेवत लसत यह
अति विमल अनादि ॥१४९॥ कवित्त ॥

पुन विमल बर कृपा के प्रभा
व सब विगरे प्रपंच भय व्याप
क गंगन है ॥ प्राचीन कर्म मोक्ष
करति जो देह ताकी सुधिनका
छू है से से मान्यो जगन है ॥ का
म क्रोध लोभ मद मत्सर आदि
महा मोहके विलास ठग सत
ठगन है ॥ धन्य जन कोऊ राम

अभिराम लुम्ह ज्ञान आनंद

आपार धारा वार में मगन हैं ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

यह रस पुनि सु अलक्ष्य काम व्यंग आपु
धनि हारि ॥ परमा रादि विशेष पद वाच
क कहत विचारि ॥१५१॥ वाचक पद रसुय
हो जो रस साधारण नाम ॥ चिंता मनि
कवि कहत है समझौ बुध अभिराम ॥
॥१५२॥ दूज प्रबुध न तें कहत हू वंधन रस
को होइ ॥ याते रस सब होइ मैं व्यंग्य क
हत हव कोइ ॥१५३॥ कछु विभाव अनु
भाव कछु अधिक बहुत संचारि ॥ व्य
क्ति जू शब्द भावों रस काम यह निर
धारि ॥१५४॥ व्यक्ति सुरस को कामजुय
ह समझौ रस धनि नाम ॥ जो रस या स
होतु है सज्जन मन अभिराम ॥१५५॥
त्यों ही भाव विचार रस भावन के अभि
राम ॥ भाव शांत्या दिवौ पुनि अक्रम व
रन प्रकाश ॥१५६॥ देव पुत्र दुर आदि
जे तिन में जो रति भाव ॥ कै संचारी व्य
क्तिसो शब्द भाव समु भाव ॥१५७॥ देव

विषय करति भाव को उदा हरन ॥ संवेया ॥
अरे वेयो अजह नहि होतु स्वरो जो प
हो ॥ तिहु ताप के तापन में ॥ कछु पंच
न दोसु कहा पर पंच जुर्ये नही के सुभा
यन में ॥ मानि होतु सदा शिव रूप तुही
जो प्रकास बड़ो यो सुठायन में ॥ यहु व
धन जो मन ही को कियो मने बांध भवा
नी के पायन में ॥१५८॥ दूसरो उदा हरन ॥
कविता ॥ चारु मुख चंद मद हसनि मनो
हर है चिंता मनि मोतिन की माल हरि
के गोर ॥ लाल पीत पट नट कटिल पटा
ये नट नागर निपट रम जीय रूप को कोरे ॥
का नन के मोतिन की चंद्रिका कपोल
चम कात जरी चीरा पर मोर चंद्रिका
थरे ॥ कोटि काम सुंदर विरा जत कुंवर
कान्ह कालिंदी के कूल में कदंब तरु के
तरे ॥१६०॥ पुत्र विषय करति भाव को उ
दा हरन ॥ कविता ॥ कुल ही ललित जरका
सी जग सगै अरु भालर में भाल कात र
मुक्ता हसौ सुटार ॥ कोसर के रंग रंगी र
भीनी सी भागुलि या में भाल कात अंगकु

वलय हल सुकुमार ॥ हसत वदन दतिया
दैं देखि चिंता मनि जनम सुपाल करि
मानें दसरथदार ॥ गोदलैंकें राम जूको
आनंद मगन मैया ललकि कैं बलैया
लेत वार वार ॥ १६१ ॥ रसा भास ॥ दोहा ॥

अनुचित विषय करति जुहै
सोई तरस अभास ॥ अनुचित
विषयके भावजो सो पुनि भा
वाभास ॥ १६२ ॥

वैठि भरोखे मारि दृग वानन करति कु
काज ॥ मृग नैनी मृगया रची तरुन दृग
न पर आज ॥ १६३ ॥ भावा भास ॥ दोहा ॥
पाइ न परि ईश्वर कहै जाको सुर नर ना
ग ॥ पशु मिथि बध रावन कियो रघु पति
जरन जाग ॥ १६४ ॥ उपसमयावैं भाव
जो भाव संत सो जानि ॥ भाव उदै आदि
का सुतौ उदया दिवा पहि चानि ॥ १६५ ॥
मानवती पीतम लख्यो खरो दीन मुख
दूरि ॥ ओचक ही लोचन जलज आसज
ल सो पूरि ॥ १६६ ॥ भावो दयको लहरा
* ॥ दोहा ॥ *

वेंदी पिय पट सों लगी लीनी अली उता
रि ॥ वृडि गर्दु अव लोकि उत सकुच सि
धु सुकुमारि ॥ १६७ ॥ भाव संधि को उदा
हरन ॥ कविज ॥ चारु मुख चंद राम चं
द अर विंद नैन दूदी वर देहु इति लस
नि सुहाई हैं ॥ कानन के मुकता पाल
न की भालकि मंद हसनि कपोलनि
अमोल छवि छाई हैं ॥ रीभी सुकुसा
रि दसरथ के कुमार लखि भीषम धनु
ष दीन सुख मुर भाव हैं ॥ ह्वै कैं विह व
लतन जानुकी विकल मनहि मनमेल
सुता कुल देवता मनाई हैं ॥ १६८ ॥ *

भाव सबलता

कविज ॥ दूरहीतें सोही चारु अवल हसो
ही ऊंची भौहन के संग सोहै सुभग नंद
लीकी ॥ आयो जव दिग तव सुवरन वे
ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन जुग
केलीकी ॥ पुनि अथ खुली दूदी वर
की वालीसी आइ परी है तिरी छीड़ी
वचा कैं सहेलीकी ॥ विविधि कटाक्ष भां
ति मैन सर पांति खरी खुलीं आफु अ-

THE BRITISH LIBRARY
ORIENTAL AND INDIA OFFICE COLLECTIONS

Reference

Copyright photograph - not to be reproduced
photographically without permission of the
India Office Library and Records.

ER:

1917

क.कु.क.त.२१ई

रिवयां अनूप अल वेलीकी ॥ १६८ ॥

इति श्री चिंता मनि वि
रचिते काविकुल कल्प
तरे अष्टमं प्रकरणम्
समाप्तम् शुभं भवतु ॥

हस्ताक्षर च्चराडी दत्त वाम्हरा कायकुल